2 इतिहास

सुलैमान बुद्धि की याचना करता है

1 सुलैमान एक बहुत शक्तिशाली राजा बन गया क्योंकि यहोवा
उसका परमेश्वर, उसके साथ था। यहोवा ने सुलैमान को अत्यधिक
महान बनाया।
2 सुलैमान ने इस्राएल के सभी लोगों से बातें की। उसने सेना के
शतपतियों, सहस्त्रपतियों, न्यायाधीशों, सारे इस्राएल के सभी प्रमुखों
तथा परिवारों के प्रमुखों से बातें की। 3 तब सुलैमान और सभी लोग
उसके साथ इकट्ठे हुए और उस उच्चस्थान को गये जो गिबोन नगर
में था। परमेश्वर का मिलाप का तम्बू वहाँ था। यहोवा के सेवक
मूसा ने उसे तब बनाया था जब वह और इस्राएल के लोग मरुभूमि
में थे। 4 दाऊद परमेश्वर के साक्षीपत्र के सन्दूक को किर्यत्यारीम से
यरूशलेम तक लाया था। दाऊद ने यरूशलेम में इसको रखने के
लिये एक स्थान बनाया था। दाऊद ने यरूशलेम में साक्षीपत्र सन्दूक
के लिए एक तम्बू लगा दिया था। 5 बसलेल ने एक काँसे की वेदी
बनाई थी। बसलेल ऊरी का पुत्र था। वह काँसे की वेदी गिबोन में
पवित्र तम्बू के सामने थी। इसलिये सुलैमान और वे लोग यहोवा से
राय लेने गिबोन गए। 6 मिलाप के तम्बू में यहोवा के सामने काँसे
की वेदी तक सुलैमान गया। सुलैमान ने एक हज़ार होमबलि वेदी
पर चढ़ाई।
7 उस रात परमेश्वर सुलैमान के पास आया। परमेश्वर ने कहा,
"सुलैमान, मुझसे तुम वह माँगों जो कुछ तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें
दूँ।"
8 सुलैमान ने परमेश्वर से कहा, "तू मेरे पिता दाऊद के प्रति बहुत
कृपालु रहा है। तूने मुझे, मेरे पिता के स्थान पर नया राजा होने के

लिये चुना है। 9 यहोवा परमेश्वर, अब, तूने जो वचन मेरे पिता को
दिया है उसे बने रहने दे। तूने मुझे ऐसी प्रजा का शासक बनाया, जो
पृथ्वी के रेतकणों की तरह असंख्य है! 10 अब तू मुझे बुद्धि और
ज्ञान दे। तब मैं इन लोगों को सही राह पर ले चल सकूँगा। कोई भी
तेरी सहायता के बिना इन पर शासन नहीं कर सकता!"

11 परमेश्वर ने सुलैमान से कहा, "तुम्हारी भावनायें बिल्कुल ठीक
हैं। तुमने धन या सम्पत्ति या सम्मान नहीं माँगा है। तुमने यह भी नहीं
माँगा है कि तुम्हारे शत्रु मर जायें। तुमने लम्बी उम्र भी नहीं माँगी है।
किन्तु तुमने अपने लिये बुद्धि और ज्ञान माँगा है। जिससे तुम मेरी
प्रजा के सम्बन्ध में बुद्धिमता से निर्णय ले सको, जिसका मैंने तुमको
राजा बनाया है। 12 इसलिये मैं तुम्हें बुद्धि और ज्ञान दूँगा। मैं तुम्हें
धन, वैभव और सम्मान भी दूँगा। तुम्हारे पहले होने वाले राजाओं
के पास इतना धन और इतना सम्मान कभी नहीं था और तुम्हारे
बाद होने वाले राजाओं के पास भी इतना धन और सम्मान नहीं
होगा।"

13 इस प्रकार, सुलैमान आराधना के स्थान गिबोन को गया। तब
सुलैमान ने उस मिलापवाले तम्बू को छोड़ा और यरूशलेम लौट
गया और इस्राएल पर राज्य करने लगा।

सुलैमान धन—संग्रह और अपनी सेना खड़ी करता है

14 सुलैमान ने घोड़े और रथ अपनी सेना के लिये एकत्रित करना
आरम्भ किया। सुलैमान के पास एक हज़ार चार सौ रथ और बारह
हज़ार घुड़सवार थे। सुलैमान ने उनको रथ नगरों में रखा। सुलैमान ने
यरूशलेम में भी उनमें से कुछ को रखा, अर्थात वहाँ जहाँ राजा का
निवास था। 15 सुलैमान ने यरूशलेम में बहुत सा चाँदी और सोना
इकट्ठा किया। उसने इतना अधिक चाँदी और सोना इकट्ठा किया
कि वह चट्टानों सा सामान्य हो गया। सुलैमान ने देवदार की बहुत
सी लकड़ी इकट्ठी की। उसने देवदार की इतनी अधिक लकड़ी

इकट्ठी की, कि वह पश्चिमी पहाड़ी प्रदेश के गूलर के वृक्ष समान
सामान्य हो गयी। 16 सुलैमान ने मिस्र और कुए (या कोये देश से) से
घोड़े मँगाए। राजा के व्यापारियों ने घोड़े कोये में खरीदे। 17 सुलैमान
के व्यापारियों ने मिस्र से एक रथ चाँदी के छः सौ शेकेल में और
घोड़ा चाँदी के एक सौ पचास शेकेल में खरीदा। तब व्यापारियों ने
घोड़ों और रथों को हित्ती लोगों के राजाओं तथा अराम के राजाओं
के हाथ बेच दिया।

2

सुलैमान मन्दिर बनाने की योजना बनाता है

1 सुलैमान ने यहोवा के नाम की प्रतिष्ठा के लिये एक मन्दिर
और अपने लिये एक राजमहल बनाने का निश्चय किया। 2 सुलैमान
ने चीज़े लाने के लिये सत्तर हज़ार व्यक्तियों को चुना और पहाड़ी
प्रदेश में पत्थर खोदने के लिये अस्सी हज़ार व्यक्तियों को चुना और
उसने तीन हज़ार छः सौ व्यक्ति मज़दूरों की निगरानी के लिये चुने।
3 तब सुलैमान ने हूराम को संदेश भेजा। हूराम सोर नगर का राजा
था। सुलैमान ने संदेश दिया था,

"मुझे वैसे ही सहायता दो जैसे तुमने मेरो पिता दाऊद को
सहायता दी थी। तुमने देवदार के पेड़ों से उनको लकड़ी भेजी
थी जिससे वे अपने रहने के लिये महल बना सके थे। 4 मैं
अपने यहोवा परमेश्वर के नाम का सम्मान करने के लिये एक
मन्दिर बनाऊँगा। मैं यह मन्दिर यहोवा को अर्पित करूँगा जिसमे
हमारे लोग उसकी उपासना कर सकेंगे। मैं उसको इस कार्य
के लिये अर्पित करूँगा कि उसमे इस्राएली जाति के स्थायी
धर्मप्रथा के अनुसार हमारे यहोवा परमेश्वर के पवित्र विश्राम
दिवसों और नवचन्द्र तथा निर्धारित पर्वों पर सवेरे और शाम
सुगन्धित धूप द्रव्य जलाये जायें, भेंट की रोटियाँ अर्पित की जायें
और अग्निबलि चढ़ायी जाये।

5 “जो मन्दिर मैं बनाऊँगा वह महान होगा, क्योंकि हमारा
परमेश्वर सभी देवताओं से बड़ा है। 6 किन्तु कोई भी व्यक्ति सही
अर्थ में हमारे परमेश्वर के लिये भवन नहीं बना सकता। स्वर्ग हाँ,
उच्चतम स्वर्ग भी परमेश्वर को अपने भीतर नहीं रख सकता! मैं
परमेश्वर के लिये मन्दिर नहीं बना सकता। मैं केवल एक स्थान
परमेश्वर के सामने सुगन्धि जलाने के लिये बना सकता हूँ।

7 “अब, मेरे पास सोना, चाँदी, काँसा और लोहे के काम करने
में एक कुशल व्यक्ति को भेजो। उस व्यक्ति को इसका ज्ञान होना
चाहिए कि बैंगनी, लाल, और नीले कपड़ों का उपयोग कैसे किया
जाता है। उस व्यक्ति को यहाँ यहूदा और यरूशलेम में मेरे कुशल
कारीगरों के साथ नक्काशी करनी होगी। मेरे पिता दाऊद ने इन
कुशल कारीगरों को चुना था। 8 मेरे पास लबानोन देश से देवदार,
चीड़ और चन्दन और सनोवर की लकड़ियाँ भी भेजो। मैं जानता
हूँ कि तुम्हारे सेवक लबानोन से पेड़ों को काटने में अनुभवी हैं।
मेरे सेवक तुम्हारे सेवकों की सहायता करेंगे। 9 क्योंकि मुझे प्रचुर
मात्रा में इमारती लकड़ी चाहिये। जो मन्दिर मैं बनवाने जा रहा हूँ
वह विशाल और अद्‌भुत होगा। 10 मैंने एक लाख पच्चीस हज़ार
बुशल गेहूँ भोजन के लिये, एक लाख पच्चीस हजार बुशल जौ,
एक लाख पन्द्रह हजार गैलन दाखमधु और एक लाख पन्द्रह
हज़ार गैलन तेल तुम्हारे उन सेवकों के लिये दिया है जो इमारती
लकड़ी के लिये पेड़ों को काटते हैं।”

11 तब सोर के राजा हूराम ने सुलैमान को उत्तर दिया। उसने
सुलैमान को एक पत्र भेजा। पत्र में यह कहा गया था:

“सुलैमान, यहोवा अपने लोगों से प्रेम करता है। यही कारण
है कि उसने तुमको उनका राजा चुना।” 12 हूराम ने यह भी कहा,
“इस्राएल के यहोवा, परमेश्वर की प्रशंसा करो! उसने धरती और

आकाश बनाया। उसने राजा दाऊद को बुद्धिमान पुत्र दिया।
सुलैमान, तुम्हें बुद्धि और समझ है। तुम एक मन्दिर यहोवा के
लिये बना रहे हो। तुम अपने लिये भी एक राजमहल बना रहे हो।
13 मैं तुम्हारे पास एक कुशल कारीगर भेंजूँगा। उसे विभिन्न प्रकार
की बहुत सी कलाओं की जानकारी है। उसका नाम हूराम— अबी
है। 14 उसकी माँ दान के परिवार समूह की थी और उसका पिता
सोर नगर का था। हूराम—अबी सोना, चाँदी, काँसा, लोहा, पत्थर
और लकड़ी के काम में कुशल है। हूराम—अबी बैंगनी, नीले,
तथा लाल कपड़ों और बहुमूल्य मलमल को काम में लाने में भी
कुशल है और हूराम—अबी नक्काशी के काम में भी कुशल है। हर
किसी योजना को, जिसे तुम दिखाओगे, समझने में वह कुशल है।
वह तुम्हारे कुशल कारीगरों की सहायता करेगा और वह तुम्हारे
पिता राजा दाऊद के कुशल कारीगरों की सहायता करेगा।

15 "तुमने गेहूँ, जौ, तेल और दाखमधु भेजने का जो वचन दिया
था, कृपया उसे मेरे सेवकों के पास भेज दो 16 और हम लोग
लबानोन देश में लकड़ी काटेंगे। हम लोग उतनी लकड़ी काटेंगे
जितनी तुम्हें आवश्यकता है। हम लोग समुद्र में लकड़ी के लट्ठों
के बेड़े का उपयोग जापा नगर तक लकड़ी पहुँचाने के लिये
करेंगे। तब तुम लकड़ी को यरूशलेम ले जा सकते हो।"

17 तब सुलैमान ने इस्राएल में रहने वाले सभी बाहरी लोगों को
गिनवाया। (यह उस समय के बाद हुआ जब दाऊद ने लोगों को
गिना था।) दाऊद, सुलैमान का पिता था। उन्हें एक लाख तिरपन
हजार बाहरी लोग देश में मिले। 18 सुलैमामन ने सत्तर हज़ार बाहरी
लोगों को चीज़ें ढोने के लिये चुना। सुलैमान ने अस्सी हजार बाहरी
लोगों को पर्वतों में पत्थर काटने के लिए चुना और सुलैमान ने
तीन हज़ार छः सौ बाहरी लोगों को काम पर लगाये रखने के लिए

निरीक्षक रखा।

3

सुलैमान मन्दिर बनाता है

1 सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर मोरिय्याह पर्वत पर यरूशलेम में
बनाना आरम्भ किया। पर्वत मोरिय्याह वह स्थान है जहाँ यहोवा ने
सुलैमान के पिता दाऊद को दर्शन दिया था। सुलैमान ने उसी स्थान
पर मन्दिर बनाया जिसे दाऊद तैयार कर चुका था। यह स्थान उस
खलिहान में था जो ओर्नान का था। ओर्नान यबूसी लोगों में से एक
था। 2 सुलैमान ने इस्राएल में अपने शासन के चौथे वर्ष के दूसरे
महीने में मन्दिर बनाना आरम्भ किया।

3 सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर की नींव के निर्माण के लिये जिस
माप का उपयोग किया, वह यह है: नींव साठ हाथ लम्बी और बीस
हाथ चौड़ी थी। सुलैमान ने प्राचीन हाथ की माप का ही उपयोग तब
किया जब उसने मन्दिर को नापा। 4 मन्दिर के सामने का द्वार मण्डप
बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ ऊँचा था। सुलैमान ने द्वार मण्डप के
भीतरी भाग को शुद्ध सोने से मढ़वाया 5 सुलैमान ने बड़े कमरों की
दीवार पर सनोवर लकड़ी की बनी चौकोर सिल्लियाँ रखीं। तब उसने
सनोवर की सिल्लियों को शुद्ध सोने से मढ़ा और उसने शुद्ध सोने पर
खजूर के चित्र और जंजीरें बनाई। 6 सुलैमान ने मन्दिर की सुन्दरता
के लिये उसमें बहुमूल्य रत्न लगाए। जिस सोने का उपयोग सुलैमान
ने किया वह पर्वैम से आया था। 7 सुलैमान ने मन्दिर के भीतरी भवन
को सोने से मढ़ दिया। सुलैमान ने छत की कड़ियाँ, चौखटों, दीवारों
और दरवाजों पर सोना मढ़वाया। सुलैमान ने दीवारों पर करूब
(स्वर्गदूतों) को खुदवाया।

8 तब सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र स्थान बनाया। सर्वाधिक
पवित्र स्थान बीस हाथ लम्बा और बीस हाथ चौड़ा था। यह उतना
ही चौड़ा था जितना पूरा मन्दिर था। सुलैमान ने सर्वाधिक पवित्र

स्थान की दीवारों पर सोना मढ़वाया। सोने का वजन लगभग बीस
हज़ार चार सौ किलोग्राम था। 9 सोने की कीलों का वजन पाँच सौ
पच्हत्तर ग्राम था सुलैमान ने ऊपरी कमरों को सोने से मढ़ दिया।
10 सुलैमान ने दो करूब(स्वर्गदूतों) सर्वाधिक पवित्र स्थान पर रखने
के लिये बनाये। कारीगरों ने करूब स्वर्गदूतों को सोने से मढ़ दिया।
11 करूब(स्वर्गदूतों) का हर एक पँख पाँच हाथ लम्बा था। पंखों
की पूरी लम्बाई बीस हाथ थी। पहले करूब (स्वर्गदूत) का एक
पंख कमरे की एक ओर की दीवार को छूता था। दूसरा पंख दूसरे
करूब (स्वर्गदूत) के पंख को छूता था। 12 दूसरे करूब (स्वर्गदूत)
का दूसरा पंख कमरे की दूसरी ओर की दूसरी दीवार को छूता
था। 13 करूब (स्वर्गदूत) के पंख सब मिलाकर बीस हाथ फैले थे।
करूब (स्वर्गदूत) भीतर पवित्र स्थान की ओर देखते हुए खड़े थे।

14 उसने नीले, बैंगनी, लाल और कीमती कपड़ों तथा बहुमूल्य
सूती वस्त्रों से मध्यवर्ती पर्दे को बनवाया। परदे पर करूबों के चित्र
काढ़ दिए।

15 सुलैमान ने मन्दिर के सामने दो स्तम्भ खड़े किये। स्तम्भ पैंतिस
हाथ ऊँचे थे। दोनों स्तम्भों का शीर्ष भाग दो पाँच हाथ लम्बा था।
16 सुलैमान ने जंजीरें के हार बनाए। उसने जंजीरों को स्तम्भों के शीर्ष
पर रखा। सुलैमान ने सौ अनार बनाए और उन्हें जंजीरों से लटकाया।
17 तब सुलैमान ने मन्दिर के सामने स्तम्भ खड़े किये। एक स्तम्भ
दायीं ओर था। दूसरा स्तम्भ बाँयी ओर खड़ा था। सुलैमान ने दायीं
ओर के स्तम्भ का नाम "याकीन" और सुलैमान ने बाँयी ओर के
स्तम्भ का नाम "बोअज़" रखा।

4

मन्दिर की सज्जा

1 सुलैमान ने वेदी बनाने के लिये काँसे का उपयोग किया। वह
काँसे की वेदी बीस हाथ लम्बी, बीस हाथ चौड़ी और दस हाथ

ऊँची थी। 2 तब सुलैमान ने पिघले काँसे का उपयोग एक विशाल
हौज बनाने के लिये किया। विशाल हौज गोल था और एक सिरे से
दूसरे सिरे तक इसकी नाप दस हाथ थी और यह पाँच हाथ ऊँचा
और दस हाथ घेरे वाला था। 3 विशाल काँसे के तालाब के सिरे
के नीचे और चारों ओर तीस हाथ की बैलों की आकृतियाँ ढाली
गई थी। जब तालाब बनाया गया तब उस पर दो पंक्तियों में बैल
बनाए गए। 4 वह विशाल काँसे का तालाब बारह बैलों की विशाल
प्रतिमा पर स्थित था। तीन बैल उत्तर की ओर देखते थे। तीन बैल
पश्चिम की ओर देखते थे।तीन बैल दक्षिण की ओर देखते थे। तीन
बैल पूर्व की ओर देखते थे। विशाल काँसे का तालाब इन बैलों के
ऊपर था। सभी बैल अपने पिछले भागों को एक दूसरे के साथ तथा
केन्द्र के साथ मिलाए हुए खड़े थे। 5 विशाल काँसे का तालाब आठ
सेंटीमीटर मोटा था। विशाल तालाब का सिरा एक प्याले के सिरे
की तरह था। सिरा खिली हुई लिली की तरह था। इसमें छियासठ
हज़ार लीटर आ सकता था।

6 सुलैमान ने दस चिलमचियाँ बनाई। उसने विशास काँसे के
तालाब की दायीं ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं और सुलैमान ने काँसे
के विशाल तालाब की बाँयी ओर पाँच चिलमचियाँ रखीं। इन दस
चिलमचियों का उपयोग होमबलि के लिए चढ़ाई जाने वाली चीज़ों
को धोने के लिये होना था। किन्तु विशाल तालाब का उपयोग बलि
चढ़ाने के पहले याजकों के नहाने के लिये होना था।

7 सुलैमान ने निर्देश के अनुसार सोने के दस दीपाधार बनाए और
उनको मन्दिर में रख दियाः पाँच दाहिनी ओर और पाँच बाँयी ओर।
8 सुलैमान ने दस मेज़े बनाई और उन्हें मन्दिर में रखा। मन्दिर में
पाँच मेज़े दायीं थीं और पाँच मेज़ें बाँयी। सुलैमान ने सौ चिलमचियाँ
बनाने के लिये सोने का उपयोग किया। 9 सुलैमान ने एक याजकों
का आँगन, महाप्रांगन, और उसके लिये द्वार बनाए। उसने आँगन में
खुलने वाले दरवाज़ों को मढ़ने के लिये काँसे का उपयोग किया।
10 तब उसने विशाल काँसे के तालाब को मन्दिर के दक्षिण पूर्व की

ओर दायीं ओर रखा।

11 हूराम ने बर्तन, बेल्चे और कटोरों को बनाया। तब हूराम ने
परमेश्वर के मन्दिर में सुलैमान के लिये अपने काम खतम किये।
12 हूराम ने दोनों स्तम्भों और दोनों स्तम्भों के शीर्षभाग के विशाल
दोनों कटोरों को बनाया था। हूराम ने दोनों स्तम्भों के शीर्ष भाग
के विशाल दोनों कटोरों को ढ़कने के लिये सज्जाओं के जाल भी
बनाए थे। 13 हूराम चार सौ अनार दोनों सज्जा जालों के लिये बनाए।
हर एक जाल के लिये अनारों की दो पक्तियाँ थीं। दोनों स्तम्भों के
शीर्षभाग पर के विशाल कटोरे जाल से ढके थे। 14 हूराम ने आधार
दण्ड और उनके ऊपर के प्यालों को भी बनाया। 15 हूराम ने एक
विशाल काँसे का तालाब और तालाब के नीचे बारह बैल बनाए।
16 हूराम ने बर्तन, बेल्चे, काँटे और सभी चीज़ें राजा सुलैमान के
यहोवा के मन्दिर के लिये बनाई। ये चीज़े कलई चढ़े काँसे की बनी
थीं। 17 राजा सुलैमान ने पहले इन चीज़ों को मिट्टी के साँचे में ढाला।
ये साँचे सुक्कोत और सरेदा नगरों के बीच यरदन घाटी में बने थे।
18 सुलैमान ने ये इतनी अधिक मात्रा में बनाई कि किसी व्यक्ति ने
उपयोग में लाए गए काँसे को तोलने का प्रयत्न नहीं किया।

19 सुलैमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये भी चीज़ें बनाई। सुलैमान
ने सुनहली वेदी बनाई। उसने वे मेज़ें बनाई जिन पर उपस्थिति की
रोटियाँ रखी जाती थीं। 20 सुलैमान ने दीपाधार और उनके दीपक
शुद्ध सोने के बनाए। बनी हुई योजना के अनुसार दीपकों को पवित्र
स्थान के सामने भीतर जलना था। 21 सुलैमान ने फूलों, दीपकों और
चिमटे को बनाने के लिये शुद्ध सोने का उपयोग किया। 22 सुलैमान
ने सलाईयाँ, प्याले, कढ़ाईयाँ और धूपदान बनाने के लिये शुद्ध सोने
का उपयोग किया। सुलैमाने ने मन्दिर के दरवाजों, सर्वाधिक पवित्र
स्थान और मुख्य विशाल कक्ष के भीतरी दरवाजों को बनाने के लिये
शुद्ध सोने का उपयोग किया।

5

1 तब सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के लिये किये गए सभी काम
पूरे कर लिए। सुलैमान उन सभी चीज़ों को लाया जो उसके पिता
दाऊद ने मन्दिर के लिये दी थी। सुलैमान सोने चाँदी की बनी हुई
वस्तुएँ तथा और सभी सामान लाया। सुलैमान ने उन सभी चीज़ों
को परमेश्वर के मन्दिर के कोषागार में रखा।

पवित्र सन्दूक मन्दिर में पहुँचाया गया

2 सुलैमान ने इस्राएल के सभी अग्रजों, परिवार समूहों के प्रमुखों
और इस्राएल में परिवार प्रमुखों को इकट्ठा किया। उसने सभी को
यरूशलेम में इकट्ठा किया। सुलैमान ने यह इसलिये किया कि
लेवीवंशी साक्षीपत्र के सन्दूक को दाऊद के नगर से ला सकें।
दाऊद का नगर सिय्योन है। 3 राजा सुलैमान से इस्राएल के सभी
लोग सातवें महीने के पर्व के अवसर पर एक साथ मिले।

4 जब इस्राएल के सभी अग्रज आ गए तब लेवीवंशियों ने
साक्षीपत्र के सन्दूक को उठाया। 5 तब याजक और लेवीवंशी
साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में ले गए। याजक और लेवीवंशी
मिलापवाले तम्बू तथा इसमें जो पवित्र चीज़ें थीं उन्हें भी यरूशलेम
ले आए। 6 राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोग साक्षीपत्र के
सन्दूक के सामने मिले। राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों
ने भेड़ों और बैलों की बलि चढ़ाई। वहाँ इतने अधिक मेढ़े व बैल थे
कि कोई व्यक्ति उन्हें गिन नहीं सकता था। 7 तब याजकों ने यहोवा
के साक्षीपत्र के सन्दूक को उस स्थान पर रखा, जो इसके लिये
तैयार किया गया था। वह सर्वाधिक पवित्र स्थान मन्दिर के भीतर
था। साक्षीपत्र के सन्दूक को करूब (स्वर्गदूत) के पंखों के नीचे
रखा गया। 8 साक्षीपत्र के सन्दूक के स्थान के ऊपर करूबों के पंख
फैले हुये थे, करूब (स्वर्गदूत) साक्षीपत्र के सन्दूक के ऊपर खड़े
थे। बल्लियाँ सन्दूक को लेजा ने में प्रयोग होती थी। 9 बल्लियाँ इतनी

लम्बी थीं कि सर्वाधिक पवित्र स्थान के सामने से उनके सिरे देखे
जा सकें। किन्तु कोई व्यक्ति मन्दिर के बाहर से बल्लियों को नहीं
देख सकता था। बल्लियाँ, अब तक आज भी वहाँ हैं। 10 साक्षीपत्र
के सन्दूक में दो शिलाओं के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं था। मूसा
ने दोनों शिलाओं को होरेब पर्वत पर साक्षीपत्र के सन्दूक में रखा
था। होरेब वह स्थान था जहाँ यहोवा ने इस्राएल के लोगों के साथ
वाचा की थी। यह उसके बाद हुआ जब इस्राएल के लोग मिस्र से
चले आए।

11 तब वे सभी याजक पवित्र स्थान से बाहर आए। सभी वर्ग के
याजकों ने अपने को पवित्र कर लिया था

12 और सभी लेविवंशी गायक वेदी के पूर्वी ओर खड़े थे। सभी
आसाप, हेमान और यदूतून के गायक समूह वहाँ थे और उनके
पुत्र तथा उनके सम्बन्धी भी वहाँ थे। वे लेवीवंशी गायक सफेद
बहुमूल्य मलमल के वस्त्र पहने हुए थे। वे झाँझ, वीणा और सांरगी
लिये थे। उन लेवीवंशी गायकों के साथ वहाँ एक सौ बीस याजक
थे। वे एक सौ बीस याजक तुरही बजा रहे थे। 13 जो तुरही बजा
रहे थे और गा रहे थे, वे एक व्यक्ति की तरह थे। जब वे यहोवा
की स्तुति करते थे और उसे धन्यवाद देते थे तब वे एक ही ध्वनि
करते थे। तुरही, झाँझ तथा अन्य वाद्य यन्त्रों पर वे तीव्र घोष करते
थे, उन्होंने यहोवा की स्तुति में यह गीत गया

"यहोवा की स्तुति करो क्योंकि वह भला है।
उसका प्रेम शाश्वत है।"

तब यहोवा का मन्दिर मेघ से भर उठा। 14 मेघ के कारण याजक
सेवा कर न सके, इसका कारण था यहोवा की महिमा मन्दिर में भर
गई थी।

6

1 तब सुलैमान ने कहा,

“यहोवा ने कहा कि वह काले घने
बादल में रहेगा।
2 हे यहोवा, मैंने एक भवन तेरे रहने के लिये बनाया है। यह एक
भव्य भवन है।
यह तेरे सर्वदा रहने का स्थान है!”

सुलैमान का भाषण

3 राजा सुलैमान मुड़ा और उसने अपने सामने खड़े सभी इस्राएल
के लोगों को आशीर्वाद दिया। 4 सुलैमान ने कहा,

“इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा की प्रशंसा करो! यहोवा ने वह
कर दिया है जो करने का वचन उसने तब दिया था जब उसने मेरे
पिता दाऊद से बातें की थी। परमेश्वर यहोवा ने यह कहा, 5 ‘जब
से मैं अपने लोगों को मिस्र से बाहर लाया तब से अब तक मैंने
इस्राएल के किसी परिवार समूह से कोई नगर नहीं चुना है, जहाँ
मेरे नाम का एक भवन बने। मैंने अपने निज लोगों इस्राएलियों
पर शासन करने के लिये भी किसी व्यक्ति को नहीं चुना है।
6 किन्तु अब मैंने यरूशलेम को अपने नाम के लिये चुना है और
मैंने दाऊद को अपने इस्राएली लोगों का नेतृत्व करने के लिये
चुना है।’
7 “मेरे पिता दाऊद की यह इच्छा थी कि वह इस्राएली राष्ट्र के
यहोवा परमेश्वर के नाम की महिमा के लिये एक मन्दिर बनवाये।
8 किन्तु यहोवा ने मेरे पिता से कहा, ‘दाऊद, जब तुमने मेरे नाम पर
मन्दिर बनाने की इच्छा की तब तुमने ठीक ही किया। 9 किन्तु
तुम मन्दिर बना नहीं सकते। किन्तु तम्हारा अपना पुत्र मेरे नाम
पर मन्दिर बनाएगा।’ 10 अब, यहोवा ने वह कर दिया है जो उसने
करने को कहा था। मैं अपने पिता के स्थान पर नया राजा हूँ।
दाऊद मेरे पिता थे। अब मैं इस्राएल का राजा हूँ। यहोवा ने यही
करने का वचन दिया था। मैंने इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के नाम
पर मन्दिर बनवाया है। 11 मैंने साक्षीपत्र के सन्दूक को मन्दिर में

रखा है। साक्षीपत्र का सन्दूक वहाँ है जहाँ यहोवा के साथ की
गई वाचा रखी जाती है। यहोवा ने यह वाचा इस्राएल के लोगों
के साथ की।”

सुलैमान की प्रार्थना

12 सुलैमान यहोवा की वेदी के सामने खड़ा हुआ। वह उन
इस्राएल के लोगों के सामने खड़ा हुआ जो वहाँ इकट्ठे हुए थे। तब
सुलैमान ने अपने हाथों और अपनी भुजाओं को फैलाया। 13 सुलैमान
ने एक काँसे का मंच पाँच हाथ लम्बा, पाँच हाथ चौड़ा और तीन
हाथ ऊँचा बनाया था और इसे बाहरी आँगन के बीच में रखा था।
तब वह मंच पर खड़ा हुआ और इस्राएल के जो लोग वहाँ इकट्ठे
हुए थे उनकी उपस्थिति में घुटने टेके। सुलैमान ने आकाश की ओर
हाथ फैलाया। 14 सुलैमान ने कहा:

“हे इस्राएल के परमेश्वर, यहोवा, तेरे समान कोई भी परमेश्वर
न तो स्वर्ग में है, न ही धरती पर है। तू प्रेम करने और दयालु बने
रहने की वाचा का पालन करता है। तू अपने उन सेवकों के साथ
वाचा का पालन करता है जो पूरे हृदय की सच्चाई से रहते हैं और
तेरी आज्ञा का पालन करते हैं। 15 तूने अपने सेवक दाऊद को
दिये गए वचन को पूरा किया। दाऊद मेरा पिता था। तूने अपने
मुख से वचन दिया था, और आज तूने अपने हाथों से इस वचन
को पूरा किया है। 16 अब, हे यहोवा, इस्राएल का परमेश्वर! तू
अपने सेवक दाऊद को दिये गये वचन को बनाये रख। तूने यह
वचन दिया थाः तूने कहा था, ‘दाऊद, तुम अपने परिवार से, मेरे
सामने इस्राएल के सिंहासन पर बैठने के लिए, एक व्यक्ति को
पाने में कभी असफल नहीं होगे। यही होगा यदि तुम्हारे पुत्र उन
सभी बातों में सावधान रहेंगे जिन्हें वे करेंगे। उन्हें मेरे नियमों का
पालन वैसे ही करना चाहिए जैसा तुमने मेरे नियमों का पालन

किया है।’ 17 अब, हे यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर अपने वचन को
पूरा होने दे। तूने यह वचन अपने सेवक दाऊद को दिया था।

18 “हे परमेश्वर, हम जानते हैं कि तू यथार्थ में, लोगों के साथ
धरती पर नहीं रहेगा। स्वर्ग, सर्वोच्च स्वर्ग भी तुझको अपने भीतर
रखने की क्षमता नहीं रखता और हम जानते हैं कि यह मन्दिर
जिसे मैंने बनाया है तुझको अपने भीतर नहीं रख सकता। 19 किन्तु
हे यहोवा, परमेश्वर तू हमारी प्रार्थना और कृपा याचना पर ध्यान
दे। हे यहोवा, मेरे परमेश्वर! तेरे लिये की गई मेरी पुकार तू सुन। मैं
तुझसे जो प्रार्थना कर रहा हूँ, सुन। मैं तेरा सेवक हूँ। 20 मैं प्रार्थना
करता हूँ कि तेरी आँखें मन्दिर को देखने के लिये दिन रात खुली
रहें। तूने कहा था कि तू इस स्थान पर अपना नाम अंकित करेगा।
मन्दिर को देखता हुआ जब मैं तुझसे प्रार्थना कर रहा हूँ तो तू
मेरी प्रार्थना सुन। 21 मेरी प्रार्थनाएँ सुन और तेरे इस्राएल के लोग
जो प्रार्थना कर रहे हैं, उन्हें भी सुन। जब हम तेरे मन्दिर को देखते
हुए प्रार्थना कर रहे हैं तो तू हमारी प्रार्थनाएँ सुन। तू स्वर्ग में जहाँ
रहता है वहीं से सुन और जब तू हमारी प्रार्थनाएँ सुने तो तू हमें
क्षमा कर।

22 “कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के साथ कुछ बुरा करने
का दोषी हो सकता है। जब ऐसा होगा तो दोषी व्यक्ति को, यह
सिद्ध करने के लिए कि वह निरपराध है, तेरा नाम लेना पड़ेगा।
जब वह तेरी वेदी के सामने शपथ लेने मन्दिर में आए तो 23 स्वर्ग
से सुन। तू अपने सेवकों का फैसला कर और उसे कार्यान्वित
कर। दोषी को दण्ड दे और उसे उतना कष्ट होने दे जितना कष्ट
उसने दूसरे को दिया हो। यह प्रमाणित कर कि जिस व्यक्ति ने
ठीक कार्य किया है, वह निरपराध है।

24 “तेरे इस्राएलियों को किसी भी शत्रुओं से पराजित होना पड़
सकता है, क्योंकि तेरे लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किया है तब यदि
इस्राएल के लोग तेरे पास लौटें और तेरे नाम पर पाप स्वीकारें

और इस मन्दिर में तुझसे प्रार्थना और याचना करें 25 तो स्वर्ग
से सुनन और अपने लोगों, इस्राएल के पापों को क्षमा कर। उन्हें
उस देश में लौटा जिसे तूने उन्हें और उनके पूर्वजों को दिया था।

26 "आसमान कभी ऐसे बन्द हो सकता है कि वर्षा न हो।
वह तब होगा जब इस्राएल के लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे और
यदि इस्राएल के लोगों को इसका पश्चाताप होगा और मन्दिर को
देखते हुए प्रार्थना करेंगे, तेरे नाम पर पाप स्वीकार करेंगे और वे
पाप करना छोड़ देंगे क्योंकि तू उन्हें दण्ड देता है। 27 तो स्वर्ग
से तू उनकी सुन। तू उनकी सुन और उनके पापों को क्षमा कर।
इस्राएल के लोग तेरे सेवक हैं। तब उन्हें सही मार्ग का उपदेश
दे जिस पर वे चलें। तू अपनी भूमि पर वर्षा भेज। वही देश तूने
अपने लोगों को दिया था।

28 "देश में कोई अकाल या महामारी, या फसलों को बीमारी,
या फफूँदी, या टिड्डी, या टिड्डे हो जाये या यदि इस्राएल के लोगों के
नगरों में उनके शत्रु घेरा डाल दें, या यदि इस्राएल में किसी प्रकार
की बीमारी हो 29 और तब तेरे लोग अर्थात इस्राएल का कोई
व्यक्ति प्रार्थना या याचना करे तथा हर एक व्यक्ति अपनी आपत्ति
और पीड़ा को जानता रहे एवं यदि वह व्यक्ति इस मन्दिर को
देखते हुए अपने हाथ और अपनी भुजायें उठाए 30 तो तू उनकी
स्वर्ग से सुन। स्वर्ग वही है जहाँ तू है। सुन और क्षमा कर। हर
एक व्यक्ति को वह दे जो उसे मिलना चाहिये क्योंकि तू जानता
है कि हर एक व्यक्ति के हृदय में क्या है। केवल तू ही जानता है
कि व्यक्ति के हृदय में क्या है। 31 तब लोग तुझसे डरेंगे और तेरी
आज्ञा मानेंगे जब तक वे उस देश में रहेंगे जिसे तूने हमारे पूर्वजों
को दिया था।

32 "कोई ऐसा अजनबी हो सकता है जो इस्राएल के लोगों में
से न हो, किन्तु वह उस देश से आया हो जो बहुत दूर हो और
वह अजनबी तेरी प्रतिष्ठा, तेरी असीम शक्ति और तेरी दण्ड देने

की क्षमता के कारण आया हो। जब वह व्यक्ति आए और इस
मन्दिर को देखता हुआ प्रार्थना करे 33 तब स्वर्ग से जहाँ तू रहता
है, सुन और तू उसकी प्रार्थना का उत्तर दे। तब सारे संसार के
राष्ट्र तेरा नाम जानेंगे और तेरा आदर वैसे करेंगे जैसे तेरे लोग
अर्थात इस्राएली करते हैं और संसार के सभी लोग जानेंगे कि
जिस मन्दिर को मैंने बनवाया है वह तेरे नाम से जाना जाता है।

34 "जब तू अपने लोगों को किसी स्थान पर उनके शत्रुओं
के साथ लड़ने के लिये भेजे और वे इस नगर की ओर देखकर
प्रार्थना करें, जिसे तूने चुना है तथा इस मन्दिर की ओर देखें जिसे
मैंने तेरे नाम पर बनाया है। 35 तो उनकी प्रार्थना स्वर्ग से सुन।
उनकी सहायता कर।

36 "लोग तेरे विरुद्ध पाप करेंगे—कोई ऐसा व्यक्ति नहीं जो
पाप न करता हो और तू उन पर क्रोधित होगा। तू किसी शत्रु को
उन्हें हराने देगा और उनसे पकड़े जाने देगा तथा बहुत दूर या
निकट के देश में जाने पर मजबूर किये जाने देगा। 37 किन्तु जब
वे अपना विचार बदलेंगे और वे याचना करेंगे जबकि वे बन्दी
बनाये जाने वाले देश में ही हैं। वे कहेंगे, 'हम लोगों ने पाप किया
है, हम लोगों ने बुरा किया है तथा हम लोगों ने दुष्टता की है।'
38 तब वे देश में जहाँ वे बन्दी हैं, अपने पूरे हृदय व आत्मा से
तेरे पास लौटेंगे और इस देश की ओर जो तूने उनके पूर्वजों को
दिया है, इस नगर की ओर जिसको तूने चुना है, और इस मन्दिर
की ओर जो मैंने तेरे नाम की महिमा के लिये निर्मित किया है,
उसकी ओर मुख करके प्रार्थना करेंगे। 39 जब ऐसा हो तो तू स्वर्ग
से उनकी सुन। स्वर्ग तेरा आवास है। उनकी प्रार्थना और याचना
को स्वीकार कर और उनकी सहायता कर और अपने उन लोगों
को क्षमा कर दे जिन्होंने तेरे विरुद्ध पाप किया है। 40 अब, मेरे
परमेश्वर मैं तुझसे माँगता हूँ, तू अपने आँख और कान खोल ले।
तू हम लोगों की, जो प्रार्थना इस स्थान पर कर रहे हैं उसे सुन

और उस पर ध्यान दे।

41 "अब, हे यहोवा परमेश्वर उठ और अपने विशेष स्थान पर आ,
जहाँ साक्षीपत्र का सन्दूक, तेरी शक्ति प्रदर्शित करता है।
अपने याचकों को मुक्ति धारण करने दे।
हे यहोवा, परमेश्वर! अपने पवित्र लोगों को अपनी अच्छाई में प्रसन्न होने दे।
42 हे यहोवा, परमेश्वर अपने अभिषिक्त राजा को स्वीकार कर।
अपने सेवक दाऊद की स्वामी भक्ति को याद रख।"

7

मन्दिर यहोवा को अर्पित

1 जब सुलैमान ने प्रार्थना पूरी की तो आकाश से आग उतरी
और उसने होमबलि और बलियों को जलाया। यहोवा के तेज ने
मन्दिर को भर दिया। 2 याचक यहोवा के मन्दिर में नहीं जा सकते
थे क्योंकि यहोवा के तेज ने उसे भर दिया था। 3 इस्राएल के सभी
लोगों ने आकाश से आग को उतरते देखा। इस्राएल के लोगों ने
मन्दिर पर भी यहोवा के तेज को देखा। उन्होंने अपने चेहरे को
चबूतरे की फर्श तक झुकाया। उन्होंने यहोवा की उपासना की तथा
उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने गाया,

"यहोवा भला है,
और उसकी दया सदा रहती है।"*

4 तब राजा सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने बलि यहोवा
के सामने चढ़ाई। 5 राजा सुलैमान ने बाईस हज़ार बैल और एक
लाख बीस हज़ार भेड़े भेंट कीं। राजा और सभी लोगों ने परमेश्वर
के मन्दिर को पवित्र बनाया। इसका उपयोग केवल परमेश्वर की
उपासना के लिये होता था। 6 याचक अपना कार्य करने के लिये

---

* **7:3:** यहोवा … रहती है देखें भजन. 136

तैयार खड़े थे। लेवीवंशी भी यहोवा के संगीत के उपकरणों के साथ खड़े थे। ये उपकरण राजा दाऊद द्वारा यहोवा को धन्यवाद देने के लिये बनाए गए थे। याचक और लेवीवंशी कह रहे थे, “यहोवा का प्रेम सदैव रहता है!” जब लेवीवंशियों के दूसरी ओर याजक खड़े हुए तो याचकों ने अपनी तुरहियाँ बजाई और इस्राएल के सभी लोग खड़े थे।

7 सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर के सामने वाले आँगन के मध्य भाग को भी पवित्र किया। यह वही स्थान है जहाँ सुलैमान ने होमबलि और मेलबलि की चर्बी चढ़ाई। सुलैमान ने आँगन का मध्य भाग काम में लिया क्योंकि काँसे की वेदी पर जिसे सुलैमान ने बनाई थी, सारी होमबलि, अन्नबलि और चर्बी नहीं आ सकती थी वैसी भेंटें बहुत अधिक थीं।

8 सुलैमान और इस्राएल के सभी लोगों ने सात दिनों तक दावतों का उत्सव मनाया। सुलैमान के साथ लोगों का एक बहुत बड़ा समूह था। वे लोग उत्तर दिशा के हमथ नगर के प्रवेश द्वार तथा दक्षिण के
मिस्र के झरने जैसे सुदूर क्षेत्रों से आये थे। 9 आठवें दिन उन्होंने एक
धर्मसभा की क्योंकि वे सात दिन उत्सव मना चुके थे। उन्होंने वेदी को पवित्र किया और इसका उपयोग केवल यहोवा की उपासना के लिये होना था और उन्होंने सात दिन दावत का उत्सव मनाया।
10 सातवें महीने के तेईसवें दिन सुलैमान ने लोगों को वापस उनके घर भेज दिया। लोग बड़े प्रसन्न थे और उनका हृदय आनन्द से भरा था क्योंकि यहोवा दाऊद, सुलैमान और अपने इस्राएल के लोगों के प्रति बहुत भला था।

यहोवा सुलैमान के पास आता है

11 सुलैमान ने यहोवा का मन्दिर और राजमहल को पूरा कर लिया। सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर और अपने आवास में जो कुछ
करने की योजना बनाई थी उसमें उसे सफलता मिली। 12 तब यहोवा
सुलैमान के पास रात को आया। यहोवा ने उससे कहा,

"सुलैमान, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी है और मैंने इस स्थान को
अपने लिये बलि के गृह के रूप में चुना है। 13 जब मैं आकाश को
बन्द करता हूँ तो वर्षा नहीं होती या मैं टिड्डियों को आदेश देता
हूँ कि वे देश को नष्ट करें या अपने लोगों में बीमारी भेजता हूँ,
14 और मेरे नाम से पुकारे जाने वाले लोग यदि विनम्र होते तथा
प्रार्थना करते हैं, और मुझे ढूढ़तें हैं और अपने बुरे रास्तों से दूर
हट जाते हैं तो मैं स्वर्ग से उनकी सुनूँगा और मैं उनके पाप को
क्षमा करूँगा और उनके देश को अच्छा कर दूँगा। 15 अब, मेरी
आखें खुली हैं और मेरे कान इस स्थान पर की गई प्रार्थनाओं
पर ध्यान देंगे। 16 मैंने इस मन्दिर को चुना है और मैंने इसे पवित्र
किया है जिससे मेरा नाम यहाँ सदैव रहे। हाँ, मेरी आँखें और मेरा
हृदय इस मन्दिर में सदा रहेगा। 17 अब सुलैमान, यदि तुम मेरे
सामने वैसे ही रहोगे जैसे तुम्हारा पिता दाऊद रहा, यदि तुम उन
सभी का पालन करोगे जिनके लिये मैंने आदेश दिया है और यदि
तुम मेरे विधियों और नियमों का पालन करोगे। 18 तब मैं तुम्हें
शक्तिशाली राजा बनाऊँगा और तुम्हारा राज्य विस्तृत होगा। यही
वाचा है जो मैंने तुम्हारे पिता दाऊद से की है। मैंने उससे कहा
था, 'दाऊद, तुम अपने परिवार में एक ऐसा व्यक्ति सदा पाओगे
जो इस्राएल में राजा होगा।'

19 "किन्तु यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को नहीं मानोगे
जिन्हें मैंने दिया है और तुम अन्य देवताओं की पूजा और सेवा
करोगे, 20 तब मैं इस्राएल के लोगों को अपने उस देश से बाहर
करूँगा जिसे मैंने उन्हें दिया है। मैं इस मन्दिर को अपनी आँखों
से दूर कर दूँगा। जिसे मैंने अपने नाम के लिये पवित्र बनाया
है। मैं इस मन्दिर को ऐसा कुछ बनाऊँगा कि सभी राष्ट्र इसकी
बुराई करेंगे। 21 हर एक व्यक्ति जो इस प्रतिष्ठित मन्दिर के पास
से गुजरेगा, आश्चर्य करेगा। वे कहेंगे, 'यहोवा ने ऐसा भयंकर

काम इस देश और इस मन्दिर के साथ क्यों किया' 22 तब लोग
उत्तर देंगे, 'क्योंकि इस्राएल के लोगों ने यहोवा' परमेश्वर जिसकी
आज्ञा का पालन उनके पूर्वज करते थे, उसकी आज्ञा पालन करने
से इन्कार कर दिया। वह ही परमेश्वर है जो उन्हें मिस्र देश के
बाहर ले आया। किन्तु इस्राएल के लोगों ने अन्य देवताओं को
अपनाया। उन्होंने मूर्ति रूप में देवताओं की पूजा और सेवा की।
यही कारण है कि यहोवा ने इस्राएल के लोगों पर इतना सब
भयंकर घटित कराया है।"

8

सुलैमान के बसाए नगर

1 यहोवा के मन्दिर को बनाने और अपना महल बनाने में सुलैमान
को बीस वर्ष लगे। 2 तब सुलैमान ने पुनः उन नगरों को बनाया जो
हूराम ने उसको दिये और सुलैमान ने इस्राएल के कुछ लोगों को उन
नगरों में रहने की आज्ञा दे दी। 3 इसके बाद सुलैमान सोबा के हमात
को गया और उस पर अधिकार कर लिया। 4 सुलैमान ने मरूभूमि
में तदमोर नगर बनाया। उसने चीज़ों के संग्रह के लिये हमात में
सभी नगर बनाए। 5 सुलैमान ने उच्च बेथोरोन और निम्न बेथोरोन के
नगरों को पुनः बनाया। उसने उन नगरों को शक्तिशाली गढ़ बनाया।
वे नगर मजबूत दीवारों, फाटकों और फाटकों में छड़ों वाले थे।
6 सुलैमान ने बालात नगर को फिर बनाया और अन्य नगरों को भी
जहाँ उसने चीजों का संग्रह किया। उसने सभी नगरों को बनाया जहाँ
रथ रखे गए थे तथा जहाँ सभी नगरों में घुड़सवार रहते थे। सुलैमान
ने यरूशलेम, लेबानोन और उन सभी देशों में जहाँ वह राजा था, जो
चाहा बनाया।

7-8 जहाँ इस्राएल के लोग रह रहे थे वहाँ बहुत से अजनबी बचे
रह गए थे। वे हित्ती, एमोरी, परिज्जी, हिव्वी और यबूसी लोग थे।
सुलैमान ने उन अजनबियों को दास—मजदूर होने के लिये विवश
किया। वे लोग इस्राएल के लोगों में से नहीं थे। वे लोग उनके वंशज

थे जो देश में बचे रह गये थे और तब तक इस्राएल के लोगों द्वारा नष्ट
नहीं किये गए थे। यह अब तक चल रहा है। 9 सुलैमान ने इस्राएल
के किसी भी व्यक्ति को दास मजदूर बनने को विवश नहीं किया।
इस्राएल के लोग सुलैमान के योद्धा थे। वे सुलैमान की सेना के
सेनापति और अधिकारी थे। वे सुलैमान के रथों के सेनापति और
सारथियों के सेनापति थे 10 और इस्राएल के कुछ लोग सुलैमान के
महत्वपूर्ण अधिकारियों के प्रमुख थे। ऐसे लोगों का निरीक्षण करने
वाले ढाई सौ प्रमुख थे।

11 सुलैमान दाऊद के नगर से फिरौन की पुत्री को उस महल में
लाया जिसे उसने उसके लिये बनाया था। सुलैमान ने कहा, “मेरी
पत्नी राजा दाऊद के महल में नहीं रह सकती क्योंकि जिन स्थानों
पर साक्षीपत्र का सन्दूक रहा हो, वे स्थान पवित्र हैं।”

12 तब सुलैमान ने यहोवा को होमबलि यहोवा की वेदी पर
चढ़ायी। सुलैमान ने उस वेदी को मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने
बनाया। 13 सुलैमान ने हर एक दिन मूसा के आदेश के अनुसार बलि
चढ़ाई। यह बलि सब्त के दिन नवचन्द्र उत्सव को और तीन वार्षिक
पर्वों को दी जानी थीं। ये तीन वार्षिक पर्व अख़मीरी रोटी का पर्व
सप्ताहों का पर्व और आश्रय का पर्व थे। 14 सुलैमान ने अपने पिता
दाऊद के निर्देशों का पालन किया। सुलैमान ने याचकों के वर्ग
उनकी सेवा के लिये चुने। सुलैमान ने लेवीवंशियों को भी उनके
कार्य के लिये चुना। लेवीवंशियों को स्तुति में पहल करनी होती थी
और उन्हें मन्दिर की सेवाओं में जो कुछ नित्य किया जाना होता था
उनमें याचकों की सहायता करनी थी और सुलैमान ने द्वारपालों को
चुना जिनके समूहों को हर द्वार पर सेवा करनी थी। इस पद्धति का
निर्देश परमेश्वर के व्यक्ति दाऊद ने दिया था। 15 इस्राएल के लोगों ने
सुलैमान द्वारा याचकों और लेवीवंशियों को दिये गए निर्देशों को न
बदला, न ही उनका उल्लघंन किया। उन्होंने किसी भी निर्दश में वैसे
भी परिवर्तन नहीं किये जैसे वे बहुमूल्य चीज़ों को रखने में करते

थे।
16 सुलैमान के सभी कार्य पूरे हो गए। यहोवा के मन्दिर के आरम्भ
होने से उसके पूरे होने के दिन तक योजना ठीक बनी थी। इस प्रकार
यहोवा का मन्दिर पूरा हुआ।
17 तब सुलैमान एस्योनगेबेर और एलोत नगरों को गया। वे नगर
एदोम प्रदेश में लाल सागर के निकट थे। 18 हूराम ने सुलैमान को
जहाज भेजे। हूराम के अपने आदमी जहाजों को चला रहे थे। हूराम
के व्यक्ति समुद्र में जहाज चलाने में कुशल थे। हूराम के व्यक्ति
सुलैमान के सेवकों के साथ ओपीर गए और सत्रह टन सोना लेकर
राजा सुलैमान के पास लौटे।

9

शीबा की रानी सुलैमान के यहाँ आती है

1 शीबा की रानी ने सुलैमान का यश सुना। वह यरूशलेम में
कठिन प्रश्नों से सुलैमान की परीक्षा लेने आई। शीबा की रानी
अपने साथ एक बड़ा समूह लेकर आई थी। उसके पास ऊँट थे
जिन पर मसाले, बहुत अधिक सोना और बहुमूल्य रत्न लदे थे। वह
सुलैमान के पास आई और उसने सुलैमान से बातें कीं। उसे सुलैमान
से अनेक प्रश्न पूछने थे। 2 सुलैमान ने उसके सभी प्रश्नों के उत्तर
दिये। सुलैमन के लिए व्याख्या करने या उत्तर देने के लिये कुछ भी
अति कठिन नहीं था। 3 शीबा की रानी ने सुलैमान की बुद्धि और
उसके बनाए घर को देखा। 4 उसने सुलैमान के मेज के भोजन को
देखा और उसके बहुत से महत्वपूर्ण अधिकारियों को देखा। उसने
देखा कि उसके सेवक कैसे कार्य कर रहे हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र
पहन रखे हैं उसने देखा कि उसके दाखमधु पिलाने वाले सेवक कैसे
कार्य कर रहें हैं और उन्होंने कैसे वस्त्र पहने हैं उसने होमबलियों
को देखा जिन्हें सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर में चढ़ाया था। जब
शीबा की रानी ने इन सभी चीज़ों देखा तो वह चकित रह गई!

5 तब उसने राजा सुलैमान से कहा, “मैंने अपने देश में तुम्हारे महान
कार्यों और तुम्हारी बुद्धिमत्ता के बारे में जो कहानी सुनी है, वह सच
है। 6 मुझे इन कहानियों पर तब तक विश्वास नहीं था जब तक मैं
आई नहीं और अपनी आँखों से देखा नहीं। ओह! तुम्हारी बुद्धिमत्ता
का आधा भी मुझसे नहीं कहा गया है। तुम उन सुनी कहानियों में
कहे गए रूप से बड़े हो! 7 तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारे अधिकारी
बहुत भाग्यशाली हैं! वे तुम्हारे ज्ञान की बातें तुम्हारी सेवा करते
हुए सुन सकते हैं। 8 तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की प्रशंसा हो! वह तुम
पर प्रसन्न है और उसने तुम्हें अपने सिंहासन पर, परमेश्वर यहोवा के
लिये, राजा बनने के लिये बैठाया है। तुम्हारा परमेश्वर इस्राएल से
प्रेम करता है और इस्राएल की सहायता सदैव करता रहेगा। यही
कारण है कि यहोवा ने उचित और ठीक—ठीक सब करने के लिये
तुम्हें इस्राएल का राजा बनाया है।”

9 तब शीबा की रानी ने राजा सुलैमान को साढ़े चार टन सोना,
बहुत से मसाले और बहुमूल्य रत्न दिये। किसी ने इतने अच्छे मसाले
राजा सुलैमान को नहीं दिये जितने अच्छे रानी शीबा ने दिये।

10 हूराम के नौकर और सुलैमान के नौकर ओपीर से सोना ले
आए। वे चन्दन की लकड़ी और बहुमूल्य रत्न भी लाए। 11 राजा
सुलैमान ने यहोवा के मन्दिर एवं महल की सीढ़ियों के लिये चन्दन
की लकड़ी का उपयोग किया। सुलैमान ने चन्दन की लकड़ी का
उपयोग गायकों के लिये वीणा और तम्बूरा बनाने के लिये भी किया।
यहूदा देश में चन्दन की लकड़ी से बनी उन जैसी सुन्दर चीज़ें किसी
ने कभी देखी नहीं थीं।

12 जो कुछ भी शीबा देश की रानी ने राजा सुलैमान से माँगा, वह
उसने दिया। जो उसने दिया, वह उससे अधिक था जो वह राजा
सुलैमान के लिये लाई थी। तत्तपश्चात् वह अपने सेवक, सेविकाओं
के साथ विदा हुई। वह अपने देश लौट गई।

सुलैमान की प्रचूर सम्पत्ति

13 एक वर्ष में सुलैमान ने जितना सोना पाया, उसका वजन पच्चीस
टन था। 14 व्यापारी और सौदागर सुलैमान के पास और अधिक
सोना लाए। अरब के सभी राजा और प्रदेशों के शासक भी सुलैमान
के लिये सोना चाँदी लाए।
15 राजा सुलैमान ने सोने के पत्तर की दो सौ ढालें बनाई। लगभग
3.3 किलोग्राम पिटा सोना हर एक ढाल के बनाने में उपयोग में
आया था। 16 सुलैमान ने तीन सौ छोटी ढालें भी सोने के पत्तर की
बनाई। लगभग 1.65 किलोग्राम सोना हर एक ढाल के बनाने में
उपयोग में आया था। राजा सुलैमान ने सोने की ढालों को लेबानोन
के वन—महल में रखा।
17 राजा सुलैमान ने एक विशाल सिंहासन बनाने के लिये हाथी
—दाँत का उपयोग किया। उसने सिंहासन को शुद्ध सोने से मढ़ा।
18 सिंहासन पर चढ़ने की छः सीढ़ियाँ थीं और इसका एक पद—
पीठ था। वह सोने का बना था। सिंहासन में दोनों ओर भुजाओं को
आराम देने के लिए बाज़ू लगे थे। हर एक बाज़ू से लगी एक—एक
सिंह की मूर्ति खड़ी थी। 19 वहाँ छः सीढ़ियों से लगे बगल में बारह
सिंहों की मूर्तियाँ खड़ी थीं। हर सीढ़ी की हर ओर एक सिंह था।
इस प्रकार का सिंहासन किसी दूसरे राज्य में नहीं बना था।
20 राजा सुलैमान के सभी पीने के प्याले सोने के बने थे। लेबानोन
वन—महल की सभी प्रतिदिन की चीज़ें शुद्ध सोने की बनी थीं।
सुलैमान के समय में चाँदी मूल्यवान नहीं समझी जाती थी।
21 राजा सुलैमान के पास जहाज थे जो तर्शीश को जाते थे। हूराम
के आदमी सुलैमान के जहाजों को चलाते थे। हर तीसरे वर्ष जहाज
तर्शीश से सोना, चाँदी हाथी—दाँत, बन्दर और मोर लेकर सुलैमान
के पास लौटते थे।
22 राजा सुलैमान धन और बुद्धि दोनों में संसार के किसी भी राजा
से बड़ा हो गया। 23 संसार के सारे राजा उसको देखने और उसके

बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णयों को सुनने के लिये आए। परमेश्वर ने सुलैमान
को वह बुद्धि दी। 24 हर वर्ष वे राजा सुलैमान को भेंट लाते थे। वे
चाँदी सोने की चीज़ें, वस्त्र, कवच, मसाले, घोड़े और खच्चर लाते थे।
25 सुलैमान के पास चार हज़ार घोड़ों और रथों को रखने के लिये
अस्तबल थे। उसके पास बारह हज़ार सारथी थे। सुलैमान उन्हें
रथों के लिये विशेष नगरों में रखता था और यरूशलेम में अपने
पास रखता था। 26 सुलैमान फरात नदी से लगातार पलिश्ती लोगों
के देश तक और मिस्र की सीमा तक के राजाओं का सम्राट था।
27 राजा सुलैमान ने चाँदी को पत्थर जैसा सस्ता बना दिया और
देवदार लकड़ी को पहाड़ी प्रदेश में गूलर के पेड़ों जैसा सामान्य।
28 लोग सुलैमान के लिये मिस्र और अन्य सभी देशों से घोड़े लाते
थे।

सुलैमान की मृत्यु

29 आरम्भ से लेकर अन्त तक सुलैमान ने और जो कुछ किया वह
नातान नबी के लेखों, शीलो के अहिय्याह की भविष्यवाणियों और
इद्दो के दर्शनों में है। इद्दो ने यारोबाम के बारे में लिखा। यारोबाम
नबात का पुत्र था। 30 सुलैमान यरूशलेम में पूरे इस्राएल का राजा
चालीस वर्ष तक रहा। 31 तब सुलैमान अपने पूर्वजों के साथ विश्राम
करने गया। लोगों ने उसे उसके पिता दाऊद के नगर में दफनाया।
सुलैमान का पुत्र रहूबियाम सुलैमान की जगह नया राजा हुआ।

10

रहूबियाम मूर्खतापूर्ण काम करता है

1 रहूबियाम शकेम नगर को गया क्योंकि इस्राएल के सभी लोग
उसे राजा बनाने के लिये वहीं गए। 2 यारोबाम मिस्र में था क्योंकि
वह राजा सुलैमान के यहाँ से भाग गया था। यारोबाम नबात का
पुत्र था। यारोबाम ने सुना कि रहूबियाम नया राजा होने जा रहा

है। इसलिये यारोबाम मिस्र से लौट आया। 3 इस्राएल के लोगों ने
यारोबाम को अपने साथ रहने के लिये बुलाया।

तब यारोबाम तथा इस्राएल के सभी लोग रहूबियाम के यहाँ गए।
उन्होंने उससे कहा, “रहूबियाम, 4 तुम्हारे पिता ने हम लोगों के जीवन
को कष्टकर बनाया। यह भारी वजन ले चलने के समान था। उस
वजन को हल्का करो तो हम तुम्हारी सेवा करेंगे।”

5 रहूबियाम ने उनसे कहा, “तीन दिन बाद लौटकर मेरे पास
आओ।” इसलिए लोग चले गए।

6 तब राजा रहूबियाम ने उन बुजुर्ग लोगों से बातें कीं जिन्होंने
पहले उसके पिता की सेवा की थी। रहूबियाम ने उनसे कहा, “आप
इन लोगों से क्या कहने के लिये सलाह देते हैं”

7 बुजुर्गों ने रहूबियाम से कहा, “यदि तुम उन लोगों के प्रति दयालु
हो और उन्हें प्रसन्न करते हो तथा उनसे अच्छी बातें कहते हो तो
वे तुम्हारी सेवा सदैव करेंगे।”

8 किन्तु रहूबियाम ने बुजुर्गों की दी सलाह को स्वीकार नहीं
किया। रहूबियाम ने उन युवकों से बात की जो उसके साथ युवा
हुए थे और उसकी सेवा कर रहे थे। 9 रहूबियाम ने उनसे कहा, “तुम
लोग क्या सलाह देते हो जिसे मैं उन लोगों से कहूँ उन्होंने मुझसे
अपने काम को हल्का करने को कहा है और वे चाहते हैं कि मैं
अपने पिता द्वारा उन पर डाले गए वजन को कुछ कम करूँ।”

10 तब उन युवकों ने जो रहूबियाम के साथ युवा हुए थे, उससे
कहा, “जिन लोगों ने तुमसे बातें की उनसे तुम यह कहो। लोगों ने
तुमसे कहा, ‘तुम्हारे पिता ने हमारे जीवन को कष्टकर बनाया था।
यह भारी वजन ले चलने के समान था। किन्तु हम चाहते हैं कि तुम
हम लोगों के वजन को कुछ हल्का करो।’ किन्तु रहूबियाम, तुम्हें
यही उन लोगों से कहना चाहिये। उनसे कहो, ‘मेरी छोटी उँगली
भी मरे पिता की कमर से मोटी होगी। 11 मेरे पिता ने तुम पर भारी
बोझ लादा। किन्तु मैं उस बोझ को बढ़ाऊँगा। मेरे पिता ने तुमको

कोड़े लगाने का दण्ड दिया था। मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा
जिसकी छोर पर तेज धातु के टुकड़े हैं।' "

12 राजा रहूबियाम ने कहा थाः "तीसरे दिन लौटकर आना।" अतः
तीसरे दिन यारोबाम और सब इस्राएली जनता राजा रहूबियाम के
पास आए। 13 तब राजा रहूबियाम ने उनसे नीचता से बात की। राजा
रहूबियाम ने बुजुर्ग लोगों की सलाह न मानी। 14 राजा यहूबियाम ने
लोगों से वैसे ही बात की जैसे युवकों ने सलाह दी थी। उसने कहा,
"मेरे पिता ने तुम्हारे बोझ को भारी किया था, किन्तु मैं उसे और
अधिक भारी करूँगा। मेरे पिता ने तुम पर कोड़े लगाने का दण्ड
किया था, किन्तु मैं ऐसे कोड़े लगाने का दण्ड दूँगा जिनकी छोर
में तेज धातु के टुकड़े होंगे।" 15 इस प्रकार राजा रहूबियाम ने लोगों
की एक न सुनी। उसने लोगों की एक न सुनी क्योंकि यह परिवर्तन
परमेश्वर के यहाँ से आया। परमेश्वर ने ऐसा होने दिया। यह इसलिए
हुआ कि यहोवा अपने उस वचन को सत्य प्रमाणित कर सके जो
उन्होंने अहिय्याह के द्वारा यारोबाम को कहा था। अहिय्याह शीलो
लोगों में से था और यारोबाम नबात का पुत्र था।

16 इस्राएल के लोगों ने देखा कि राजा रहूबियाम उनकी एक नहीं
सुनता। उन्होंने राजा से कहा, "क्या हम दाऊद के परिवार के अंग
हैं नहीं! क्या हमें यिशै की कोई भूमि मिलनी है नहीं! इसलिये ऐ
इस्राएलियों, हम लोग अपने शिविर में चलें। दाऊद की सन्तान को
उसके अपने लोगों पर शासन करने दें!" तब इस्राएल के सभी लोग
अपने शिविरों में लौट गए। 17 किन्तु इस्राएल के कुछ ऐसे लोग थे
जो यहूदा नगर में रहते थे और रहूबियाम उनका राजा था।

18 हदोराम काम करने के लिये विवश किये जाने वाले लोगों का
अधीक्षक था। रहूबियाम ने उसे इस्राएल के लोगों के पास भेजा।
किन्तु इस्राएल के लोगों ने हदोराम पर पत्थर फेंके और उसे मार
डाला। तब रहूबियाम भागा और अपने रथ में कूद पड़ा तथा बच

निकला। वह भागकर यरूशलेम गया। 19 उस समय से लेकर अब
तक इस्राएली दाऊद के परिवार के विरुद्ध हो गए हैं।

11

1 जब रहूबियाम यरूशलेम आया, उसने एक लाख अस्सी हज़ार
सर्वोत्तम योद्धाओं को इकट्ठा किया। उसने इन योद्धाओं को यहूदा
और बिन्यामीन के परिवार समूहों से इकट्ठा किया। उसने इन्हें
इस्राएल के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार किया जिससे वह राज्य
को रहूबियाम को वापस लौटा सके। 2 किन्तु यहोवा का सन्देश
शमायाह के पास आया। शमायाह परमेश्वर का व्यक्ति था। यहोवा
ने कहा, 3 "शमायाह यहूदा के राजा, सुलैमान के पुत्र रहूबियाम से
बातें करो और यहूदा तथा बिन्यामीन में रहने वाले सभी इस्राएल के
लोगों से बातें करो। 4 उनसे कहो, यहोवा यह कहाता है: 'तुम्हें अपने
भाईयों के विरुद्ध नहीं लड़ना चाहिये! हर एक व्यक्ति अपने घर लौट
जाये। मैंने ही ऐसा होने दिया है।' " इसलिये राजा रहूबियाम और
उसकी सेना ने यहोवा का सन्देश माना और वे लौट गए। उन्होंने
यारोबाम पर आक्रमण नहीं किया।

रहूबियाम यहूदा को शक्तिशाली बनाता है

5 रहूबियाम यरूशलेम में रहने लगा। उसने आक्रमण के विरुद्ध
रक्षा के लिये यहूदा में सुदृढ़ नगर बनाए। 6 उसने बेतलेहेम, एताम,
तकोआ, 7 बेत्सूर, सोको, अदुल्लाम, 8 गत, मारेशा, जीप, 9 अदोरैम,
लाकीश, अजेका, 10 सोरा, अय्यालोन, और हेब्रोन नगरों की मरम्मत
कराई। यहूदा और बिन्यामीन में ये नगर दृढ़ बनाए गए। 11 जब
रहूबियाम ने उन नगरों को दृढ़ बना लिया तो उनमें सेनापति रखे।
उसने उन नगरों में भोजन, तेल और दाखमधु की पूर्ति की व्यवस्था
की। 12 रहूबियाम ने ढाल और भाले भी हर एक नगर में रखे और
उन्हें बहुत शक्तिशाली बनाया। रहूबियाम ने यहूदा और बिन्यामीन
के लोगों को अपने अधिकार में रखा।

13 पूरे इस्राएल के याचक और लेवीवंशी रहूबियाम से सहमत थे
और वे उसके साथ हो गए। 14 लेवीवंशियों ने अपनी घास वाली
भूमि और अपने खेत छोड़ दिये और वे यहूदा तथा यरूशलेम आ
गए। लेवीवंशियों ने यह इसलिये किया कि यारोबाम और उसके
पुत्रों ने उन्हें यहोवा के याचक के रूप में सेवा कराने से इन्कार कर
दिया।
15 यारोबाम ने अपने ही याजकों को वहाँ उच्च स्थानों पर सेवा
करने के लिये नियुक्त किया जहाँ उसने बकरे और बछड़े की उन
मूर्तियों को स्थापित की जिन्हें उसने बनाया था। 16 जब लेवीवंशियों
ने इस्राएल को छोड़ दिया तब इस्राएल के परिवार समूह के वे लोग
जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य थे, यरूशलेम
में यहोवा, अपने पूर्वजों के परमेश्वर को बलि चढ़ाने आए। 17 उन
लोगों ने यहूदा के राज्य को शक्तिशाली बनाया और उन्होंने सुलैमान
के पुत्र रहूबियाम को तीन वर्ष तक समर्थन दिया। वे ऐसा करते रहे
क्योंकि इस समय के बीच वे वैसे रहते रहे जैसे दाऊद और सुलैमान
रहे थे।

रहूबियाम का परिवार

18 रहूबियाम ने महलत से विवाह किया। उसका पिता यरीमोत
था। उसकी माँ अबीहैल थी। यरीमोत दाऊद का पुत्र था। अबीहैल
एलीआब की पुत्री थी और एलीआब यिशै का पुत्र था। 19 महलत
से रहूबियाम के ये पुत्र उत्पन्न हुए: यूश, शमर्याह और जाहम। 20 तब
रहूबियाम ने माका से विवाह किया। माका अबशलोम की पोती थी
और माका से रहूबियाम के ये बच्चे हुएः अबिय्याह, अत्ते, जीजा और
शलोमीत। 21 रहूबियाम माका से सभी अन्य पत्नियों और दासियों से
अधिक प्रेम करता था। माका अबशलोम की पोती थी। रहूबियाम
की अट्ठारह पत्नियाँ और साठ रखैल थीं। रहूबियाम अट्ठाईस पुत्रों
और साठ पुत्रियों का पिता था।

22 रहूबियाम ने अपने भाईयों में अबिय्याह को प्रमुख चुना।
रहूबियाम ने यह इसलिये किया कि उसने अबिय्याह को राजा बनाने
की योजना बनाई। 23 रहूबियाम ने बुद्धिमानी से काम किया और
उसने अपने लड़कों को यहूदा और बिन्यामीन के पूरे देश में हर
एक शक्तिशाली नगर में फैला दिया और रहूबियाम ने अपने पुत्रों
को बहुत अधिक पुत्रियाँ भेजीं। उसने अपने पुत्रों के लिये पत्नियों
की खोज की।

12

मिस्री राजा शीशक का यरूशलेम पर आक्रमण

1 रहूबियाम एक शक्तिशाली राजा हो गया। उसने अपने राज्य को
भी शक्तिशाली बनाया। तब रहूबियाम और यहूदा के सभी लोगों ने
यहोवा के नियम का पालन करने से इन्कार कर दिया।

2 रहूबियाम के राज्यकाल के पाँचवें वर्ष शीशक ने यरूशलेम पर
आक्रमण किया। शीशक मिस्र का राजा था। यह इसलिये हुआ कि
रहूबियाम और यहूदा के लोग यहोवा के प्रति निष्ठावान नहीं थे।
3 शीशक के पास बारह हज़ार रथ, साठ हज़ार अश्वारोही, और एक
सेना थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था। शीशक की सेना में लूबी,
सुक्किय्यी और कूशी सैनिक थे। 4 शीशक ने यहूदा के शक्तिशाली
नगरों को पराजित कर दिया। तब शीशक अपनी सेना को यरूशलेम
लाया।

5 तब शमायाह नबी रहूबियाम और यहूदा के प्रमुखों के पास
आया। यहूदा के वे प्रमुख यरूशलेम में इकट्ठे हुए थे क्योंकि वे
सभी शीशक से भयभीत थे। शमायाह ने रहूबियाम और यहूदा के
प्रमुखों से कहा, "यहोवा जो कहता है वह यह हैः 'रहूबियाम, तुम
और यहूदा के लोगों ने मुझे छोड़ दिया है और मेरे नियम का पालन
करने से इन्कार कर दिया है। इसलिये मैं तुमको अपनी सहायता
के बिना शीशक का सामना करने को छोड़ूँगा।' "

6 तब यहूदा के प्रमुखों और राजा रहूबियाम ने ग्लानि का अनुभव
करते हुये अपने को विनम्र किया और कहा कि, “यहोवा न्यायी
है।”

7 यहोवा ने देखा कि राजा और यहूदा के प्रमुखों ने अपने आप को
विनम्र बनाया है। तब यहोवा का सन्देश शमायाह के पास आया।
यहोवा ने शमायाह से कहा, “राजा और लोगों ने अपने को विनम्र
किया है, इसलिये मैं उन्हें नष्ट नहीं करूँगा अपितु मैं उन्हें शीघ्र ही
बचाऊँगा। मैं शीशक का उपयोग यरूशलेम पर अपना क्रोध उतारने
के लिये नहीं करूँगा। 8 किन्तु यरूशलेम के लोग शीशक के सेवक
हो जाएंगे। यह इसलिये होगा कि वे सीख सकें कि मेरी सेवा करना
दूसरे राष्ट्रों के राजाओं की सेवा करने से भिन्न है।”

9 शीशक ने यरूशलेम पर आक्रमण किया और यहोवा के मन्दिर
में जो खजाना था, ले गया। शीशक मिस्र का राजा था और उसने
उस खजाने को भी ले लिया जो राजा के महल में था। शीशक ने
हर एक चीज ली और उनके खजानों को ले गया। उसने सोने की
ढालों को भी लिया जिन्हें सुलैमान ने बनाया था। 10 राजा रहूबियाम
ने सोने की ढालों के स्थान पर काँसे की ढालें बनाई। रहूबियाम ने
उन सेनापतियों को जो राजमहल के द्वारों की रक्षा के उत्तरदायी थे,
काँसे की ढालें दीं। 11 जब राजा यहोवा के मन्दिर में जाता था तो
रक्षक काँसे की ढालें बाहर निकालते थे। उसके बाद वे काँसे की
ढालों को रक्षक—गृह में वापस रखते थे।

12 जब रहूबियाम ने अपने को विनम्र कर लिया तो यहोवा ने
अपने क्रोध को उससे दूर कर लिया। इसलिये यहोवा ने रहूबियाम
को पूरी तरह नष्ट नहीं किया। यहूदा में कुछ अच्छाई बची थी।

13 राजा रहूबियाम ने यरूशलेम में अपने को शक्तिशाली राजा
बना लिया। वह उस समय इकतालीस वर्ष का था, जब राजा बना।
रहूबियाम यरूशलेम में सत्रह वर्ष तक राजा रहा। यरूशलेम वह
नगर है जिसे यहोवा ने इस्राएल के सारे परिवार समूह में से चुना।
यहोवा ने यरूशलेम में अपने को प्रतिष्ठित करना चुना। रहूबियाम

की माँ नामा थी। नामा अम्मोन देश की थी। 14 रहूबियाम ने बुरी
चीज़ें इसलिये कीं क्योंकि उसने अपने हृदय से यहोवा की आज्ञा
पालन करने का निश्चय नहीं किया।

15 जब रहूबियाम राजा हुआ, अपने शासन के आरम्भ से अन्त
तक, उसने जो कुछ किया वह शमायाह और इद्दो के लेखों में लिखा
गया है। शमायाह एक नबी था और इद्दो दृष्टा। वे लोग परिवार
इतिहास लिखते थे और रहूबियाम तथा यारोबाम जब तक शासन
करते रहे उनके बीच सदा युद्ध चलता रहा। 16 रहूबियाम ने अपने
पूर्वजों के साथ विश्राम किया। रहूबियाम को दाऊद के नगर में
दफनाया गया। रहूबियाम का पुत्र अबिय्याह नया राजा हुआ।

13

यहूदा का राजा अबिय्याह

1 जब राजा यारोबाम इस्राएल के राजा के रूप में अट्ठारहवें
वर्ष में था अबिय्याह यहूदा का नया राजा बना। 2 अबिय्याह
यरूशलेम में तीन वर्ष तक राजा रहा। अबिय्याह की माँ मीकायाह
थी। मीकायाह, ऊरीएल की पुत्री थी। ऊरीएल गिबा नगर का था
और वहाँ अबिय्याह और यारोबाम के बीच युद्ध चल रहा था।
3 अबिय्याह की सेना में चार लाख वीर सैनिक थे। यारोबाम ने
अबिय्याह के विरुद्ध युद्ध के लिये तैयारी की। उसके पास आठ
लाख वीर सैनिक थे।

4 तब अबिय्याह एप्रैम के पर्वतीय प्रदेश में समारैम पर्वत पर
खड़ा हुआ। अबिय्याह ने कहा, "यारोबाम और सारे इस्राएली मेरी
बात सुनों! 5 तुम लोगों को जानना चाहिये कि यहोवा, इस्राएल
के प्ररमेश्वर ने दाऊद और उसकी सन्तानों को इस्राएल का राजा
होने का अधिकार सदैव के लिये दिया है। यहोवा ने दाऊद को यह
अधिकार नमकवाली वाचा के साथ दिया। 6 किन्तु यारोबाम अपने
स्वामी के विरुद्ध हो गया! यारोबाम जो नबात का पुत्र था, दाऊद
के पुत्र सुलैमान के अधिकारियों में से एक था। 7 तब निकम्मे, बुरे

व्यक्ति यारोबाम के मित्र हो गए तथा यारोबाम और वे बुरे व्यक्ति सुलैमान के पुत्र रहूबियाम के विरुद्ध हो गये। रहूबियाम युवक था और उसे अनुभव नहीं था। इसलिये रहूबियाम यारोबाम और उसके बुरे मित्रों को रोक न सका।

8 "तुम लोगों ने परमेश्वर के राज्य, जो दाऊद के पुत्रों द्वारा शासित
है, हराने की योजना बनाई है। तुम लोगों की संख्या बहुत है और
यारोबाम का तुम्हारे लिये बनाया गया सोने का बछड़ा तुम्हारा
ईश्वर है! 9 तुम लोगों ने हारून के वंशज यहोवा के याचकों और
लेवीवंशियों को निकाल बाहर किया है। तुमने पृथ्वी के अन्य देशों
के समान अपने याचकों को चुना है। तब तो कोई भी व्यक्ति जो
एक युवा बैल और सात मेंढ़े लाये, उन झूठे 'ईश्वरों' की सेवा करने
वाला याचक बन सकता है।

10 "किन्तु जहाँ तक हमारी बात है यहोवा हमारा परमेश्वर है। हम
यहूदा के निवासी लोगों ने यहोवा की आज्ञा पालन से इन्कार किया
नहीं है! हम लोगों ने उसको छोड़ा नहीं है! जो याचक यहोवा की
सेवा करते हैं, वे हारून की सन्तान हैं और लेवीवंशी यहोवा की
सेवा करने में याचकों की सहायता करते हैं। 11 वे होमबलि चढ़ाते
हैं और धूप की सुगन्धि यहोवा को हर सुबह– शाम जलाते हैं।
वे मन्दिर में विशेष मेज पर रोटियाँ पंक्तियों में रखते भी हैं और वे
सोने के दीपाधार पर रखे हुए दीपकों की देखभाल करते हैं ताकि
हर संध्या को वह प्रकाश के साथ चले। हम लोग यहोवा, अपने
परमेश्वर की सेवा सावधानी के साथ करते हैं। किन्तु तुम लोगों
ने उसको छोड़ दिया है। 12 स्वयं परमेश्वर हम लोगों के साथ है।
वह हमारा शासक है और उसके याचक हमारे साथ हैं। परमेश्वर
के याचक अपनी तुरही तुम्हें जगाने और तुम्हें उसके पास आने
को उत्साहित करने के लिये फूँकते हैं! ऐ इस्राएल के लोगों, अपने
पूर्वजों के यहोवा, परमेश्वर के विरुद्ध मत लड़ो! क्योंकि तुम सफल
नहीं होगे!"

13 किन्तु यारोबाम ने सैनिकों की एक टुकड़ी को चुपके—चुपके
गुप्त रूप से अबिय्याह की सेना के पीछे भेजा। यारोबाम की सेना
अबिय्याह की सेना के सामने थी। यारोबाम की सेना के गुप्त सैनिक
अबिय्याह की सेना के पीछे थे। 14 जब अबिय्याह की सेना के यहूदा
के सैनिकों ने चारों ओर देखा तो उन्होंने यारोबाम की सेना को आगे
और पीछे से आक्रमण करते पाया। यहूदा के लोगों ने यहोवा को
जोर से पुकारा और याचकों ने तुरहियाँ बजाई। 15 तब अबिय्याह
की सेना के लोगों ने उद्घोष किया। जब यहूदा के लोगों ने उद्घोष
किया तो परमेश्वर ने यारोबाम की सेना को हरा दिया। इस्राएल की
सारी यारोबाम की सेना अबिय्याह की यहूदा की सेना द्वारा हरा दी
गई। 16 इस्राएल के लोग यहूदा के लोगों के सामने भाग खड़े हुए।
परमेश्वर ने यहूदा की सेना द्वारा इस्राएल की सेना को हरवा दिया।
17 अबिय्याह की सेना ने इस्राएल की सेना को बुरी तरह हराया
और इस्राएल के पाँच लाख उत्तम योद्धा मारे गये। 18 इस प्रकार उस
समय इस्राएल के लोग पराजित और यहूदा के लोग विजयी हुए।
यहूदा की सेना विजयी हुई क्योंकि वह अपने पूर्वजों के परमेश्वर,
यहोवा पर आश्रित रही।

19 अबिय्याह की सेना ने यारोबाम की सेना का पीछा किया।
अबिय्याह की सेना ने यारोबाम से बेतेल, यशाना तथा एप्रोन नगरों
को ले लिया। उन्होंने उन नगरों और उनके आस पास के छोटे गावों
पर अधिकार कर लिया।

20 यारोबाम पर्याप्त शक्तिशाली फिर कभी नहीं हुआ जब तक
अबिय्याह जीवित रहा। यहोवा ने यारोबाम को मार डाला। 21 किन्तु
अबिय्याह शक्तिशाली हो गया। उसने चौदह स्त्रियों से विवाह किया
और वह बाईस पुत्रों तथा सोलह पुत्रियों का पिता था। 22 अन्य जो
कुछ अबिय्याह ने किया, वह इद्दो नबी की पुस्तकों में लिखा है।

14

1 अबिय्याह ने अपने पूर्वजों के साथ विश्राम लिया। लोगों ने उसे

दाऊद के नगर में दफनाया। तब अबिय्याह का पुत्र आसा अबिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। आसा के समय में देश में दस वर्ष शान्ति रही।

यहूदा का राजा आसा

2 आसा ने यहोवा परमेश्वर के सामने अच्छे और ठीक काम किये।
3 आसा ने उन विचित्र वेदियों को हटा दिया जिनका उपयोग मूर्तियों
की पूजा के लिये होता था। आसा ने उच्च स्थानों को हटा दिया
और पवित्र पत्थरों को नष्ट कर दिया और आसा ने अशेरा स्तम्भों
को तोड़ डाला। 4 आसा ने यहूदा के लोगों को पूर्वजों के यहोवा
परमेश्वर का अनुसरण करने का आदेश दिया। वह वही परमेश्वर है
जिसका अनुसरण उनके पूर्वजों ने किया था और आसा ने लोगों को
यहोवा के नियमों और आदेशों को पालन करने का आदेश दिया।
5 आसा ने उच्च स्थानों को और सुगन्धि की वेदियों को यहूदा के
सभी नगरों से हटाया। इस प्रकार जब आसा राजा था, राज्य शान्त
रहा। 6 आसा ने यहूदा में शान्ति के समय शक्तिशाली नगर बनाए।
आसा इन दिनों युद्ध से मुक्त रहा क्योंकि यहोवा ने उसे शान्ति दी।

7 आसा ने यहूदा के लोगों से कहा, "हम लोग इन नगरों को बनाऐं और इनके चारों ओर चारदीवारी बनाऐं। हम गुम्बद, द्वार और द्वारों में छड़ें लगायें। जब तक हम लोग देश में हैं, यह करें। यह देश हमारा है क्योंकि हम लोगों ने अपने यहोवा परमेश्वर का अनुसरण किया है। उसने हम लोगों को सब ओर से शान्ति दी है।" इसलिये उन्होंने यह सब बनाया और वे सफल हुए।

8 आसा के पास यहूदा के परिवार समूह से तीन लाख और बिन्यामीन के परिवार समूह से दो लाख अस्सी हज़ार सेना थी। यहूदा के लोग बड़ी ढालें और भाले ले चलते थे। बिन्यामीन के लोग छोटी ढालें और धनुष से चलने वाले बाण ले चलते थे। वे सभी बलवान और साहसी योद्धा थे।

9 तब जेरह आसा की सेना के विरुद्ध आया। जेरह कूश का था।
जेरह की सेना में एक लाख व्यक्ति और तीन सौ रथ थे। जेरह की
सेना मारेशा नगर तक गई। 10 आसा जेरह के विरुद्ध लड़ने के लिये
गया। आसा की सेना मारेशा के निकट सापता घाटी में युद्ध के लिये
तैयार हुई।

11 आसा ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा और कहा, "यहोवा,
केवल तू ही बलवान लोगों के विरुद्ध कमजोर लोगों की सहायता
कर सकता है! हे मेरे यहोवा परमेश्वर हमारी सहायता कर! हम तुझ
पर आश्रित हैं। हम तेरे नाम पर इस विशाल सेना से युद्ध करते हैं।
हे यहोवा, तू हमारा परमेश्वर है! अपने विरुद्ध किसी को जीतने न
दे!"

12 तब यहोवा ने यहूदा की ओर से आसा की सेना का उपयोग
कूश की सेना को पराजित करने के लिये किया और कूश की सेना
भाग खड़ी हुई। 13 आसा की सेना ने कूश की सेना का पीछा लगातार
गरार नगर तक किया। इतने अधिक कूश के लोग मारे गए कि वे
युद्ध करने योग्य एक सेना के रूप में फिर इकट्ठे न हो सके। वे यहोवा
और उसकी सेना के द्वारा कुचल दिये गये। आसा और उसकी सेना
ने शत्रु से अनेक बहुमूल्य चीज़ें ले ली। 14 आसा और उसकी सेना
ने गरार के निकट के सभी नगरों को हराया। उन नगरों में रहने वाले
लोग यहोवा से डरते थे। उन नगरों में असंख्य बहुमूल्य चीज़ें थीं।
आसा की सेना उन नगरों से इन बहुमूल्य चीज़ों को साथ ले आई।
15 आसा की सेना ने उन डेरों पर भी आक्रमण किया जिनमें गड़रिये
रहते थे। वे अनेक भेड़ें और ऊँट ले आए। तब आसा की सेना
यरूशलेम लौट गई।

15

आसा के परिवार्तन

1 परमेश्वर की आत्मा अजर्याह पर उतरी। अजर्याह ओदेद का
पुत्र था। 2 अजर्याह आसा से मिलने गया। अजर्याह ने कहा, "आसा

तथा यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों मेरी सुनो! यहोवा तुम्हारे साथ तब है जब तुम उसके साथ हो। यदि तुम यहोवा को खोजोगे तो तुम उसे पाओगे। किन्तु यदि तुम उसे छोड़ोगे तो वह तुम्हें छोड़
देगा। 3 बहुत समय तक इस्राएल सच्चे परमेश्वर के बिना था और वे
शिक्षक याचक और नियम के बिना थे। 4 किन्तु जब इस्राएल के
लोग कष्ट में पड़े तो वे फिर इस्राएल के यहोवा परमेश्वर की ओर
लौटे। उन्होंने यहोवा की खोज की और उसको उन्होंने पाया। 5 उन
विपत्ति के दिनों में कोई व्यक्ति सुरक्षित यात्रा नहीं कर सकता था।
सभी राष्ट्र बहुत अधिक उपद्रव ग्रस्त थे। 6 एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र
को और एक नगर दूसरे नगर को नष्ट करता था। यह इसलिये हो
रहा था कि परमेश्वर हर प्रकार की विपत्तियों से उनको परेशान कर
रहा था। 7 किन्तु आसा, तुम तथा यहूदा और बिन्यामीन के लोगों,
शक्तिशाली बनो। कमजोर न पड़ो, ढीले न पड़ो क्योंकि तुम्हें अपने
अच्छे काम का पुरस्कार मिलेगा!"

8 आसा ने जब इन बातों और ओदेद नबी के सन्देश को सुना तो वह बहुत उत्साहित हुआ। तब उसने सारे यहूदा और बिन्यामीन देश से घृणित मूर्तियों को हटा दिया और उसने एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश में अपने अधिकार में लाए गए नगरों में मूर्तियों को हटाया और उसने यहोवा की उस वेदी की मरम्मत की जो यहोवा के मन्दिर के द्वार मण्डप के सामने थी।

9 तब आसा ने यहूदा और बिन्यामीन के सभी लोगों को इकट्ठा किया। उसने एप्रैम, मनश्शे और शिमोन परिवारों को भी इकट्ठा किया जो इस्राएल देश से यहूदा देश में रहने केलिये आ गए थे। उनकी बहुत बड़ी संख्या यहूदा में आई क्योंकि उन्होंने देखा कि आसा का यहोवा परमेश्वर, आसा के साथ है।

10 आसा के शासन के पन्द्रहवें वर्ष के तीसरे महीने में आसा और
वे लोग यरूशलेम में इकट्ठे हुए। 11 उस समय उन्होंने यहोवा को सात
सौ बैलों और सात हज़ार भेड़ों और बकरों की बलि दी। आसा की

सेना ने उन जानवरों और अन्य बहुमूल्य चीज़ों को अपने शत्रुओं
से लिया था। 12 तब उन्होंने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की सेवा
पूरे हृदय और पूरी आत्मा से करने की वाचा की। 13 कोई व्यक्ति
जो यहोवा परमेश्वर की सेवा से इन्कार करता था, मार दिया जाता
था। इस बात का कोई महत्व नहीं था कि वह व्यक्ति महत्त्वपूर्ण
या साधारण है अथवा पुरुष या स्त्री है। 14 तब आसा और लोगों ने
यहोवा की शपथ ली। उन्होंने उच्च स्वर में उद्घोष किया। उन्होंने
तुरही और मेढ़ों के सींगे बजाए। 15 यहूदा से सभी लोग प्रसन्न थे
क्योंकि उन्होंने पूरे हृदय से शपथ ली थी। उन्होंने पूरे हृदय से यहोवा
का अनुसरण किया तथा येहोवा की खोज की और उसे पाया।
इसलिये यहोवा ने उनके पूरे देश में शान्ति दी।

16 राजा आसा ने अपनी माँ माका को राजमाता के पद से हटा
दिया। आसा ने यह इसलिये किया क्योंकि माका ने एक भंयकर
अशेरा—स्तम्भ बनाया था। आसा ने इस स्तम्भ को काट दिया और
इसे छोटे—छोटे टुकड़ों में ध्वस्त कर दिया। तब उसने उन छोटे
टुकड़ों को किद्रोन घाटी में जला दिया। 17 उच्च स्थानों को यहूदा से
नहीं हटाया गया, किन्तु आसा का हृदय जीवन भर यहोवा के प्रति
श्रद्धालु रहा।

18 आसा ने उन पवित्र भेंटों को रखा जिन्हें उसने और उसके पिता
ने यहोवा के मन्दिर में दिये थे। वे चीज़ें चाँदी और सोने की बनीं
थीं। 19 आसा के शासन के पैंतीस वर्ष तक कोई युद्ध नहीं हुआ।

16

आसा के अन्तिम वर्ष

1 आसा के राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष* बाशा ने यहूदा देश पर
आक्रमण किया। बाशा इस्राएल का राजा था। वह रामा नगर में
गया और इसे एक किले के रूप में बनाया। बाशा ने रामा नगर
का उपयोग यहूदा के राजा आसा के पास जाने और उसके पास

* **16:1:** राज्यकाल के छत्तीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 879

से लोगों को आने से रोकने के लिये किया। 2 आसाने यहोवा के
मन्दिर के कोषागार में रखे हुए चाँदी और सोने को लिया और उसने
राजमहल से चाँदी सोना लिया। तब आसा ने बेन्हदद को सन्देश
भेजा। बेन्हदद अराम का राजा था और दमिश्क नगर में रहता था।
आसा का सन्देश था: 3 "बेन्हदद मेरे और अपने बीच एक सन्धि
होने दो। इस सन्धि को वैसे ही होने दो जैसा वह हमारे पिता और
तुम्हारे पिता के बीच की गई थी। ध्यान दो, मैं तुम्हारे पास चाँदी
सोना भेज रहा हूँ। अब तुम इस्राएल के राजा बाशा के साथ की गई
सन्धि को तोड़ दो जिससे वह मुझे मुक्त छोड़ देगा और मुझे परेशान
करना बन्द कर देगा।"

4 बेन्हदद ने आसा की बात मान ली। बेन्हदद ने अपनी सेना के
सेनापतियों को इस्राएल के नगरों पर आक्रमण करने के लिये भेजा।
इन सेनापतियों ने इय्योन, दान और आबेल्लैम नगरों पर आक्रमण
किया। उन्होंने नप्ताली देश में उन सभी नगरों पर आक्रमण किया
जहाँ खजाने रखे थे। 5 बाशा ने इस्राएल के नगरों पर आक्रमण की
बात सुनी। इसलिए उसने रामा में किला बनाने का काम रोक दिया
और अपना काम छोड़ दिया। 6 तब राजा आसा ने यहूदा के सभी
लोगों को इकट्ठा किया। वे रामा नगर को गये और लकड़ी तथा
पत्थर उठा लाए जिनका उपयोग बाशा ने किला बनाने के लिये
किया था। आसा और यहूदा के लोगों ने पत्थरों और लकड़ी का
उपयोग गेवा और मिस्पा नगरों को अधिक मजबूत बनाने के लिये
किया।

7 उस समय दृष्टा हनानी यहूदा के राजा आसा के पास आया।
हनानी ने उससे कहा, "आसा, तुम सहायता के लिये अराम के राजा
पर आश्रित हुए, अपने यहोवा परमेश्वर पर नहीं। तुम्हें यहोवा पर
आश्रित रहना चाहिये था। तुम याहोवा पर सहायता के लिये आश्रित
नहीं रहे अतः अराम के राजा की सेना तुमसे भाग निकली। 8 कूश
और लूबी अति विशाल और शक्तिशाली सेना रखते थे। उनेक
पास अनेक रथ और सारथी थे। किन्तु आसा, तुम उस विशाल

शक्तिशाली सेना को हराने में सहायता के लिये यहोवा पर आश्रित
हुए और यहोवा ने तुम्हें उनको हराने दिया। 9 यहोवा की आँखे सारी
पृथ्वी पर उन लोगों को देखती फिरती है जो उसके प्रति श्रद्धालु
हैं जिससे वह उन लोगों को शक्तिशाली बना सके। आसा, तुमने
मूर्खतापूर्ण काम किया। इसलिये अब से लेकर आगे तक तुमसे
युद्ध होंगे।"

10 आसा हनानी पर उस बात से क्रोधित हुआ जो उसने कहा।
आसा इतना क्रोध से पागल हो उठा कि उसने हनानी को बन्दीगृह
में डाल दिया। आसा उस समय कुछ लोगों के साथ नीचता और
कठोरता का व्यवहार करता था।

11 आसा ने जो कुछ आरम्भ से अन्त तक किया। वह इस्राएल
और यहुदा के राजाओं के इतिहास की पुस्तक में लिखा है। 12 आसा
का पैर उसके राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष† में रोगग्रस्त हो गया।
उसका रोग बहुत बुरा था किन्तु उसने यहोवा से सहायाता नहीं
चाही। आसा ने वैद्यों से सहायता चाही। 13 आसा अपने राज्यकाल
के इकतालीसवें वर्ष में मरा और इस प्रकार आसा ने अपने पूर्वजों
के साथ विश्राम किया। 14 लोगों ने आसा को उसकी अपनी कब्र
में दफनाय जिसे उसने स्वयं दाऊद के नगर में बनाया था। लोगों
ने उसे एक अन्तिम शैया पर रखा जिस पर सुगन्धित द्रव्य और
विभिन्न प्रकार के मिले इत्र रखे थे। लोगों ने आसा का सम्मान करने
के लिये आग की महाज्वाला की।‡

17

यहूदा का राजा यहोशापात

1 आसा के स्थान पर यहोशापात यहूदा का नया राजा हुआ।
यहोशापात आसा का पुत्र था। यहोशापात ने यहूदा को शक्तिशाली

---

† **16:12:** राज्यकाल के उनतालीसवें वर्ष लगभग ई.पू. 875 ‡ **16:14:** लोगों ने ... महाज्वाला की सम्भवत: इसका तात्पर्य है कि आसा के सम्मान में लोगों ने सुगन्धित द्रव्य जलाए, किन्तु इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि उन्होंने उसके शरीर को जलाया।

बनाया जिससे वे इस्राएल के विरुद्ध लड़ सकते थे। 2 उसने यहूदा
के उन सभी नगरों में सेना की टुकड़ियाँ रखीं जो किले बना दिये
गए थे। यहोशापात ने यहूदा और एप्रैम के उन नगरों में किले बनाए
जिन्हें उसके पिता ने अपने अधिकार में किया था।

3 यहोवा यहोशापात के साथ था क्योंकि उसने वे अच्छे काम
किये जिन्हें उसके पूर्वज दाऊद ने किया था। यहोशापात ने बाल की
मूर्तियों का अनुसरण नहीं किया। 4 यहोशापात ने उस परमेश्वर को
खोजा जिसका अनुसरण उसके पूर्वज करते थे। उसने परमेश्वर के
आदेशों का पालन किया। वह उस तरह नहीं रहा जैसै इस्राएल के
अन्य लोग रहते थे। 5 यहोवा ने यहोशापात को यहूदा का शक्तिशाली
राजा बनाया। यहूदा के सभी लोग यहोशापात को भेंट लाए। इस
प्रकार यहोशापात के पास बहुत सी सम्पत्ति और सम्मान दोनों थे।
6 यहोशापात का हृदय यहोवा के मार्ग पर चलने में आनन्दित था।
उसने उच्च स्थानों और अशेरा के स्तम्भों को यहूदा देश से बाहर
किया।

7 यहोशापात ने अपने प्रमुखों को यहूदा के नगरों में उपदेश देने
के लिये भेजा। यह यहोशापात के राज्यकाल के तीसरे वर्ष हुआ।
वे प्रमुख बेन्हैल, ओबद्याह, जकर्याह, नतनेल और मीकायाह थे।
8 यहोशापात ने इन प्रमुखों के साथ लेवीवंशियों को भी भेजा।
ये लेवीवंशी शमायाह, नतन्याह, असाहेल, शमीरामोत, यहोनातान,
अदोनिय्याह और तोबिय्याह थे। यहोशापात ने याचक एलीशामा
और यहोराम को भेजा। 9 उन प्रमुखों, लेवीवंशियों और याचकों ने
यहूदा में लोगों को शिक्षा दी। उनके पास यहोवा के नियमों की
पुस्तक थी। वे यहूदा के सभी नगरों में गये और लोगों को उन्होंने
शिक्षा दी।

10 यहूदा के आसपास के नगर यहोवा से डरते थे। यही कारण था
कि उन्होंने यहोशापात के विरुद्ध युद्ध नहीं छेड़ा। 11 कुछ पलिश्ती
लोग यहोशापात के पास भेंट लाए। वे यहोशापात के पास चाँदी भी

लाए क्योंकि वे जानते थे कि वह बहुत शक्तिशाली राजा है। कुछ
अरब के लोग यहोशापात के पास रेवड़े लाये। वे उसके पास सात
हज़ार सात सौ भेंड़ें और सात हज़ार सात सौ बकरियाँ लाए।
12 यहोशापात अधिक से अधिक शक्तिशाली होता गया। उसने
किले और भण्डार नगर यहूदा देश में बनाये। 13 उसने बहुत सी
सामग्री भण्डार नगरों में रखी और यहोशापात ने यरूशलेम में
प्रशिक्षित सैनिक रखे। 14 उन सैनिकों की अपने परिवार समूह में
गिनती थी। यरूशलेम के उन सैनिकों की सूची ये हैः

यहूदा के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थेः
अदना तीन लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था।
15 यहोहानान दो लाख अस्सी हज़ार सैनिकों का सेनाध्यक्ष था।
16 अमस्याह दो लाख सैनिकों का सेनाध्यक्ष था। अमस्याह जिक्री का पुत्र था। अमस्याह अपने को यहोवा की सेवा में अर्पित करने में प्रसन्न था।
17 बिन्यामीन के परिवार समूह से ये सेनाध्यक्ष थेः
एलयादा के पास दो लाख सैनिक थे जो धनुष, बाण और ढाल का उपयोग करते थे। एल्यादा एक साहसी सैनिक था।
18 यहोजाबाद के पास एक लाख अस्सी हज़ार व्यक्ति युद्ध के लिये तैयार थे।

19 वे सभी सैनिक यहोशापात की सेवा करते थे। राजा ने पूरे यहूदा
देश के किलों में अन्य व्यक्तियों को भी रखा था।

18

मीकायाह राजा अहाब को चेतावनी देता है

1 यहोशापात के पास सम्पत्ति और सम्मान था। उसने राजा अहाब
के साथ विवाह द्वारा एक सन्धि की।* 2 कुछ वर्ष बाद, यहोशापात

---
* **18:1:** यहोशापात के … सन्धि की यहोशापात के पुत्र यहोराम ने अहाब की पुत्री अतल्याह से विवाह किया। देखें 2 इति. 21:6

शोमरोन नगर में अहाब से मिलने गया। अहाब ने बहुत सी भेड़ों
और पशुओं की बलि यहोशापात और उसके साथ के आदमियों के
लिये चढ़ाई। अहाब ने यहोशापात को गिलाद के रामोत नगर पर
आक्रमण के लिये प्रोत्साहित किया। 3 अहाब ने यहोशापात से कहा,
"क्या तुम मेरे साथ गिलाद के रामोत पर आक्रमण करने चलोगे"
अहाब इस्राएल का और यहोशापात यहूदा का राजा था। यहोशापात
ने अहाब को उत्तर दिया, "मैं तुम्हारी तरह हूँ और हमारे लोग तुम्हारे
लोगों की तरह हैं। हम युद्ध में तुम्हारा साथ देंगे।" 4 यहोशापात ने
अहाब से यह कहा, "ओओ, पहले हम यहोवा से सन्देश प्राप्त करे।"

5 इसलिए अहाब ने चार सौ नबियों को इकट्ठा किया। अहाब ने
उनसे कहा, "क्या हमें गिलाद के रामोत नगर के विरुद्ध युद्ध में जाना
चाहिये या नहीं"

नबियों ने अहाब को उत्तर दिया, "जाओ, क्योंकि यहोवा गिलाद के रामोत को तुम्हें पराजित करने देगा।"

6 किन्तु यहोशापात ने कहा, "क्या कोई यहाँ यहोवा का नबी है
हम लोग नबियों में से एक के द्वारा यहोवा से पूछना चाहते हैं।"

7 तब राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, "यहाँ पर अभी एक
व्यक्ति है। हम उसके माध्यम से यहोवा से पूछ सकते हैं। किन्तु मैं
इस व्यक्ति से घृणा करता हूँ क्योंकि इसने कभी मेरे बारे में यहोवा
से कोई अच्छा सन्देश नहीं दिया। इसने सदैव बुरा ही सन्देश मेरे
लिये दिया है। इस आदमी का नाम मीकायाह है। यह यिम्ला का पुत्र
है।"

किन्तु यहोशापात ने कहा, "अहाब, तुम्हें ऐसा नहीं कहेना चाहिये!"

8 तब इस्राएल के राजा अहाब ने अपने अधिकारियों में से एक
को बुलाया ओर कहा, "शीघ्रता करो, यिम्ला के पुत्र मीकायाह को
यहाँ लाओ!"

9 इस्राएल के राजा अहाब और यहूदा के राजा यहेशापात ने
अपने राजसी वस्त्र पहन रखे थे। वे अपने सिंहासनों पर खलिहन
में शोमरोन नगर के सम्मुख द्वार के निकट बैठे थे। वे चार सौ नबी
अपना सन्देश दोनों राजाओं के सामने दे रहे थे। 10 सिदकिय्याह
कनाना नामक व्यक्ति का पुत्र था। सिदकिय्याह ने लोहे की कुछ
सींगे बनाई। सिदकिय्याह ने कहा, "यही है जो यहोवा कहता है:
'तुम लोग लोहे की सिंगों का उपयोग तब तक अश्शूर के लोगों
में घोंपने के लिये करोगे जब तक वे नष्ट न हो जायें।' " 11 सभी
नबियों ने वही बात कही। उन्हो ने कहा, "गिलाद के रामेत नगर
को जाओ। तुम लोग सफल होंगे और जीतोगे। यहोवा राजा और
अश्शूर के लोगों को हराने देगा।"

12 जो दूत मीकायाह को लाने गया था उसने उससे कहा,
"मीकायाह, सुनो, सभी नबी एक ही बात कह रहे हैं। वे कह रहे
हैं कि राजा को सफलता मिलेगी। इसलिये वही कहो जो वे कह
रहे हैं। तुम भी अच्छी बात कही।"

13 किन्तु मीकायाह ने उत्तर दिया, "यह वैसे ही सत्य है जैसा कि
यहोवा शाश्वत है अत: मैं वही कहूँगा जो मेरा परमेश्वर कहता है।"

14 तब मीकायाह राजा अहाब के पास आया। राजा ने उससे कहा,
"मीकायाह, क्या हमें युद्ध करने के लिये गिलाद के रामोत नगर को
जाना चाहिये या नहीं"

मीकायाह ने कहा, "जाओ औऱ आक्रमण करो। यहोवा तुम्हें उन
लोगों को हराने देगा।"

15 राजा अहोब ने मीकायाह से कहा, "कई बार मैंने तुमसे प्रतिज्ञा
करवायी थी कि तुम यहोवा के नाम पर मुझे केवल सत्य बताओ!"

16 तब मीकायाह ने कहा, "मैंने इस्राएल के सभी लोगों को पहाड़ों
पर बिखरे हुए देखा। वे गड़रिये के बिना भेड़ की तरह थे। यहोवा
ने कहा, 'उनका कोई नेता नही है। हर एक व्यक्ति को सुरक्षित घर
लौटने दो।' "

17 इस्राएल के राजा अहाब ने यहोशापात से कहा, “मैंने कहा था
कि मीकायाह मेरे लिए यहोवा से अच्छा सन्देश नही पाएगा। वह
मेरे लिए केवल बुरे सन्देश रखता है!”

18 मीकायाह ने कहा, “यहोवा के सन्देश को सुनो: मैंने यहोवा
को अपने सिंहासन पर बैठे देखा। स्वर्ग की पूरी सेना उसके चारों
और खड़ी थी।† कुछ उसके दाहि नी ओर और कुछ उसके बाँयीं
ओर। 19 यहोवा ने कहा, ‘इस्राएल के राजा आहाब को कौन धोखा
देगा जिससे वह गिलाद के रामोत के नगर पर आक्रमण करे और
वह वहाँ मार दिया जाये’ यहोवा के चारों ओर खड़े विभिन्न लोगों
ने विभिन्न उत्तर दिये। 20 तब एक आत्मा आई और वह यहोवा के
सामने खड़ी हुई। उस आत्मा ने कहा, ‘मैं अहाब को धोखा दूँगी।’
यहोवा ने आत्मा से पूछा, ‘कैसे?’ 21 उस आत्मा ने उत्तर दिया, ‘मैं
बाहर जाऊँगी और अहोब के नबियों के मुँह में झूठ बोलने वाली
आत्मा बनूँगी’ और यहोवा ने कहो, ‘तुम्हें अहाब को धोखा देने में
सफलता मिलेगी। इसलिये जाओ और इसे करो।’

22 “अहोब, अब ध्यान दो, यहोवा ने तुम्हारे नबियों के मुँह में झूठ
बोलने बाली आत्मा प्रवेश कराई है। यहोवा ने कहा है कि तुम्हारे
साथ बुरा घटेगा।”

23 तब सिदकिय्याह मीकायाह के पास गया और उसके मुँह पर
मारा। कनाना के पुत्र सिदकिय्याह ने कहा, “मीकायाह, यहोवा की
आत्मा मुझे त्याग कर तुझसे वार्तालाप करने कैसे आई?”

24 मीकायाह ने उत्तर दिया, “सिदकिय्याह, तुम उस दिन इसे
जानोगे जब तुम एक भीतरी घर में छिपने जाओगे!”

25 तब राजा अहाब ने कहा, “मीकायाह को लो और इसे नगर
के प्रशासक आमोन और राजा के पुत्र योआश के पास भेज दो।
26 आमोन और योआश से कहो, ‘राजा यह कहते हैं: मीकायाह को

† **18:18:** स्वर्ग की … खड़ी थी हिब्रू पाठ है। स्वर्गों के सभी समूह उनके दायीं और बांयी ओर खड़े थे।

बन्दीगृह में डाल दो। उसे रोटी और पानी के अतिरिक्त तब तक कुछ खाने को न दो जब तक मैं युद्ध से न लौटूँ।' "

27 मीकायाह ने उत्तर दिया, "अहाब, यदि तुम युद्ध से सुरक्षित लौट आते हो तो यहोवा ने मेरे द्वारा नहो कहा है। तुम सभी लोग सुनों और मेरे वचन को याद रखो!"

अहाब गिलाद के रामोत में मारा गया

28 इसलिये इस्राएल के राजा अहोब और यहूदा के राजा
यहोशापात ने गिलाद के रामोत नगर पर आक्रमण किया।
29 इस्राएल के राजा अहोब ने यहोशापात से कहो, "मैं युद्ध में जाने के
पहले अपना रुप बदल लूँगा। किन्तु तुम अपने राजवस्त्र हो पहनों।"
इसलिये इस्राएल के राजा अहोब ने अपना रुप बदल लिया और
दोनों राजा युद्ध में गए।

30 अराम के राजा ने अपने रथों के रथपतियों को आदेश दिया।
उसने उनसे कहो, "चाहे जितना बड़ा या छोटा कोई व्यक्ति हो
उससे युद्ध न करो। किन्तु केवल इस्राएल के राजा अहाब से युद्ध
करो।" 31 जब रथपतियों ने यहोशापात को देखा उन्ह ने सोचा,
"वही इस्राएल का राजा अहाब है!" वे यहोशापात पर आक्रमण
करने के लिये उसकी ओर मुड़े। किन्तु यहोशापात ने उद्घोष किया
और यहोवा ने उसकी सहायात की। परमेश्वर ने रथपतियों को
यहोशापात के सामने से दूर मुड़ जाने दिया। 32 जब उन्ह ने समझा
कि यहोशापात इस्राएल का राजा नहो है उन्ह ने उसका पीछा करना
छोड़ दिया।

33 किन्तु एक सैनिक से बिना किसी लक्ष्य बेध के धनुष से बाण छूट गया। उस बाण ने इस्राएल के राजा अहाब को बेध दिया। इसने, अहाब के कवच के खुले भाग में बेधा। अहाब ने अपने रथ के सारथी से कहा, "पीछे मुड़ो और मुझे युद्ध से बाहर ले चलो। मैं घायल हो गया हूँ!"

34 उस दिन युद्ध अधिक बुरी तरह लड़ा गया। अहाब ने अपने
रथ में अरामियों का सामना करते हुए शाम तक अपने को संभाले
रखा। तब अहाब सूर्य डूबने पर मर गया।

19

1 यहूदा का राजा यहोशापात सुरक्षित यरूशलेम अपने घर लौटा।
2 दृष्टा येहू यहोशापात से मिलने गया। येहू के पिता का नाम हनानी
था। येहू ने राजा यहोशापात से कहा, "तुम बुरे आदमियों की
सहायता क्यों करते हो तुम उन लोगों से क्यों प्रेम करते हो जो
यहोवा से घृणा करते हैं। यही कारण है कि यहोवा तुम पर क्रोधित
है। 3 किन्तु तुम्ह रे जीवन में कुछ अच्छी बातें हैं। तुमने अशेरा—
स्तम्भों को इस देश से बाह र किया और तुमने हृदय से परमेश्वर का
अनुसरण करने का निश्चय किया।"

यहोशापात न्यायाधीशों को चुनता है

4 यहोशापात यरूशलेम में रहता था। वह एप्रैम के पहाड़ी प्रदेश
में बेर्शोबा नगर के लोगों के साथ एक होने के लिये फिर वहां गया।
यहोशापात ने उन लोगों को उस यहोवा परमेश्वर के पास लौटाया
जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। 5 यहोशापात ने यहूदा में
न्यायधीश चुने। उसने यहूदा के हर किले में रहने के लिये न्यायाधीश
चुने। 6 यहोशापात ने इन न्यायाधीशों से कहा, "जो कुछ तुम करो
उसमें सावधान रहा क्योंकि तुम, लोगों के लिये न्याय नही कर रहे
अपितु यहोवा के लिये कर रहे हो। जब तुम निर्णय करोगे तब यहोवा
तुम्हारे साथ होगा। 7 तुम में से हर एक को अब यहोवा से डरना
चाहिए। जो करो उसमें सावधान रहो क्योंकि हमारा यहोवा परमेश्वर
न्यायी है। वह किसी व्यक्ति को अन्य व्यक्ति से अधिक महत्वपूर्ण
मानकर व्यवहार नही करता। वह अपने निर्णय को बदलने के लिये
धन नही लेता।"

8 और यहोशापात ने यरूशलेम में, लेवीवंशियों, याजकों और
इस्राएल के परिवार प्रमुखों को न्यायाधीश चुना। उन लोगों को
यहोवा के नियमों का उपयोग यरूशलेम के लोगों की समस्याओं
को निपटाने के लिये करना था। 9 यहोशापात ने उनको आदेश दिये।
यहोशापात ने कहा, "तुम्हें अपने पूरे हृदय से विश्वसनीय काम करना
चाहिए। तुम्हें यहोवा से अवश्य डरना चाहिए। 10 तुम्हारे पास हत्या,
नियम, आदेश, शासन या किसी अन्य नियमों के मामले आ सकते
हैं। ये सभी मामले नगरों में रहने वाले तुम्हारे भाईयों के यह से
आएंगे। इन सभी मामलों में लोगों को इस बात की चेतावनी दो कि
वे लोग यहोवा के विरुद्ध पाप न करें। यदि तुम विश्वास योग्यता के
साथ यहोवा की सेवा नहीं करते तो तुम यहोवा के क्रोध को अपने
ऊपर और अपने भाईयों के ऊपर लाने का कारण बनोगे। यह करो,
तब तुम अपराधी नही होगे।

11 "अमर्याह मार्गदर्शक याजक है। वह यहोवा के सम्बन्ध की
सभी बातों में तुम्हारे ऊपर रहेगा और राजा सम्बन्धी सभी विषयों में
जबद्याह तुम्हारे ऊपर होगा। जबद्याह के पिता का नाम इश्माएल है।
जबद्याह यहूदा के परिवार समूह में प्रमुख है। लेवीवंशी शास्त्रियों
के रुप में भी तुम्हारी सेवा करेंगे। जो कुछ करो उसमें साहस रखो।
यहोवा उन लोगों के साथ हो, जो वही करते हैं जो ठीक है।"

20

यहोशापात युद्ध का सामना करता है

1 कुछ समय पश्चात मोआबी, अम्मोनी और कुछ मूनी लोग
यहोशापात के साथ युद्ध आरम्भ करने आए। 2 कुछ लोग आए और
उन्हीने यहोशापात से कहा, "तुम्हारे विरुद्ध एदोम से एक विशाल
सेना आ रही है। वे मृत सागर की दूसरी ओर से आ रहे हैं। वे
हसासोन्तामार में पहले से ही है।" (हसासोन्तामार के एनगदी भी
कहा जाता है) 3 यहोशापात डर गया और उसने यहोवा से यह पूछने
का निश्चय किया कि मैं क्या करूँ उसने यहूदा में हर एक के लिये

उपवास का समय घोषित किया। 4 यहूदा के लोग एक साथ यहोवा
से सहायता माँगने आए। वे यहूदा के सभी नगरों से यहोवा की
सहायता माँगने आए। 5 यहोशापात यहोवा के मन्दिर में नये आँगन
के सामने था। वह यरूशलेम और यहूदा से आए लोगों की सभा में
खड़ा हुआ। 6 उसने कहा,

"हे हमारे पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर, तू स्वर्ग में परमेश्वर है! तू
सभी राष्टों में सभी राज्यों पर शासन करता है! तू प्रभुता और शक्ति
रखता है! कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध खड़ा नही हो सकता! 7 तू हमारा
परमेश्वर है। तूने इस प्रदेश में रहने वालों को इसे छोड़ने को विवश
किया। यह तूने अपने इस्राएली लोगों के सामने किया। तूने यह
भूमि इब्राहाम के वंशजों को सदैव के लिये दे दी। इब्राहाम तेरा
मित्र था। 8 इब्राहीम के वंशज इस देश में रहते थे और उन्होने एक
मन्दिर तेरे नाम पर बनाया। 9 उन्होने कहा, 'यदि हम लोगों पर
आपत्ति आएगी जैसे तलवार, दण्ड, रोग या अकाल तो हम इस
मन्दिर के सामने और तेरे सामने खड़े होगे। इस मन्दिर पर तेरा
नाम है। जब हम लोगों पर विपत्ति आएगी तो हम लोग तुझको
पुकारेंगे। तब तू हमारी सुनेगा और हमारी रक्षा करेगा।'

10 "किन्तु इस समय यही अम्मोन, मोआब और सेईर पर्वत के
लोग चढ़ आए हैं! तूने इस्राएल के लोगों को उस समय उनकी
भूमि में नही जाने दिया जब इस्राएल के लोग मिस्र से आए।
इसलिए इस्राएल के लोग मुड़ गए थे और उन लोगों ने उनको
नष्ट नही किया था। 11 किन्तु देख कि वे लोग हमें उन्हें नष्ट न
करने का किस प्रकार का पुरस्कार दे रहे हैं। वे हमें तेरी भूमि से
बाहर होने के लिए विवश करने आए हैं। यह भूमि तूने हमें दी है।
12 हमारे परमेश्वर, उन लोगों को दण्ड दे! हम लोग उस विशाल
सेना के विरुद्ध कोई शक्ति नही रखते जो हमारे विरुद्ध आ रही
है! हम नहीं जानते कि क्या करें! यही कारण है कि हम तुझसे

सहायता की आशा करते हैं।”

13 यहूदा के सभी लोग यहोवा के सामने अपने शिशुओं, पत्नियों
और बच्चों के साथ खड़े थे। 14 तब यहोवा की आत्मा यहजीएल पर
उतरी। यहजीएल जकर्याह का पुत्र था। (जकर्याह बनायाह का पुत्र
था बनायाह यीएल का पुत्र था और यीएल मत्तन्याह का पुत्र था।)
यहजीएल एक लेवीवंशी था और आसाप का वंशज था। 15 उस
सभा के बीच यहजीएल ने कह “राजा यहशापात तथा यहूदा और
यरूशलेम में रहने वाले लोगों, मेरी सुनों! यहोवा तुमसे यह कहता
है: ‘इस विशाल सेना से न तो डरो, न हो परेशान होओ क्योंकि यह
तुम्हारा युद्ध नही है। यह परमेश्वर का युद्ध है! 16 कल तुम वहाँ जाओ
और उन लोगों से लड़ो। वे सीस के दर्रे से होकर आएँगे। तुम लोग
उन्हें घाटी के अन्त में यरूएल मरुभूमि की दूसरी ओर पाओगे।
17 इस युद्ध में तुम्हें लड़ना नही पड़ेगा। अपने स्थानों पर दृढ़ता से
खड़े रहो। तुम देखोगे कि यहोवा ने तुम्हें बचा लिया। यहूदा और
यरूशलेम के लोगों, डरो नहो परेशान मत हो! यहोवा तुम्हारे साथ
है अत: कल उन लोगों के विरुद्ध जाओ।’ ”
18 यहोशापात अति नम्रता से झुका। उसका सिर भूमि को छू रहा
था और यहूदा तथा यरूशलेम में रहने वाले सभी लोग यहोवा के
सामने गिर गए और उन सभी ने यहोवा की उपासना की। 19 कहाती
परिवार समूह के लेवीवंशी और कहाती लोग, इस्राएल के यहोवा
परमेश्वर की स्तुति के लिये खड़े हुए। उन्होने अत्यन्त उच्च स्वर में
स्तुति की।

20 यहोशापात की सेना तकोआ मरुभूमि में बहुत सवेरे गई। जब
वे बढ़ना आरम्भ कर रहे थे, यहोशापात खड़ा हुआ और उसने कहा,
“यहूदा और यरूशलेम के लोगों, मेरी सुनों। अपने यहोवा परमेश्वर
में विश्वास रखो और तब तुम शक्ति के साथ खड़े रहोगे। यहोवा के
नबियों में विश्वास रखो। तुम लोग सफल होगे!”

21 यहोशापात ने लोगों का सुझाव सुना। तब उसने यहोवा के
लिये गायक चुने। वे गायक यहोवा की स्तुति के लिये चुने गए थे
क्योंकि वह पवित्र और अद्भुत है। वे सेना के सामने कदम मिलाते
हुए बढ़े और उन्होने यहोवा की स्तुति की। इन गायकों ने गाया,

"परमेश्वर को धन्यवाद दो
क्योंकि उसका प्रेम सदैव रहता है!"*

22 ज्योंहो उन लोगों ने गाना गाकर यहोवा की स्तुति आरम्भ की,
यहोवा ने अज्ञात गुप्त आक्रमण अम्मोन, मोआब और सेईर पर्वत
के लोगों पर कराया। ये वे लोग थे जो यहूदा पर आक्रमण करने
आए थे। वे लोग पिट गए। 23 अम्मोनी और मोआबी लोगों ने सेईर
पर्वत से आये लोगों के विरुद्ध युद्ध आरम्भ किया। अम्मोनी और
मोआबी लोगों ने सेईर पर्वत से आए लोगों को मार डाला और नष्ट
कर दिया। जब वे सेईर के लोगों को मार चुके तो उन्होने एक दूसरे
को मार डाला।

24 यहूदा के लोग मरुभूमि में सामना करने के बिन्दु पर आए।
उन्होने शत्रु की विशाल सेना को देखा। किन्तु उन्होने केवल शवो
को भूमि पर पड़े देखा। कोई व्यक्ति बचा न था। 25 यहोशापात
और उसकी सेना शवों से बहुमूल्य चीजें लेने आई। उन्हें बहुत
से जानवर, धन, वस्त्र और कीमती चीज़ें मिलीं। यहोशापात और
उसकी सेना ने उन्हें अपने लिये ले लिया। चीज़ें उससे अधिक थीं
जितना यहोशापात और उसकी सेना ले जा सकती थी। उनको शवों
से कीमती चीज़ें इकट्ठी करने में तीन दिन लगे, क्योंकि वे बहुत
अधिक थीं। 26 चौथे दिन यहोशापात और उसकी सेना बराका की
घाटी में मिले। उन्होने उस स्थान पर यहोवा की स्तुति की। यही
कारण है कि उस स्थान का नाम आज तक "बराका की घाटी" है।

---

* **20:21:** परमेश्वर को … रहता है देखें भजन. 136

27 तब यहोशापात यहूदा और यरूशलेम के लोगों को यरूशलेम
लौटा कर ले गया। यहोवा ने उन्हें अत्यन्त प्रसन्न किया क्योंकि
उनके शत्रु पराजित हो गये थे। 28 वे यरूशलेम में वीणा सितार और
तुरहियों के साथ आये और यहोवा के मन्दिर में गए।

29 सभी देशों के सारे राज्य यहोवा से भयभीत थे क्योंकि उन्होने
सुना कि यहोवा इस्राएल के शत्रुओं से लड़ा। 30 यही कारण है कि
यहोशापात के राज्य में शान्ति रही। यहोशापात के परमेश्वर ने उसे
चारों ओर से शान्ति दी।

यहोशापात के शासन का अन्त

31 यहोशापात ने यहूदा देश पर शासन किया। यहोशापात ने जब
शासन आरम्भ किया तो वह पैंतीस वर्ष का था। उसने पच्चीस वर्ष
यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम अजूबा था। अजूबा
शिल्ही की पुत्री थी। 32 यहोशापात सच्चे मार्ग पर अपने पिता आसा
की तरह रहा। यहोशापात, आसा के मार्ग का अनुसरण करने से
मुड़ा नही। यहोशापात ने यहोवा की दृष्टि में उचित किया। 33 किन्तु
उच्च स्थान नही हटाये गये और लोगों ने अपना हृदय उस परमेश्वर
का अनुसरण करने में नही लगाया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज
करते थे।

34 यहोशापात ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ किया वह येहू
की रचनाओं में लिखा है। येहू के पिता का नाम हनानी था। ये बातें
इस्राएल के राजाओं के इतिहास नामक पुस्तक में लिखी हुई हैं।

35 कुछ समय पश्चात यहूदा के राजा यहोशापात ने इस्राएल
के राजा अहज्याह के साथ सन्धि की। अहज्याह ने बुरा किया।
36 यहोशापात ने अहज्याह का साथ तर्शीश नगर में जहज जाने देने
में दिया। उन्होने जहाजों को एस्योन गेबेर नगर में बनाया। 37 तब
एलीआजर ने यहोशापात के विरुद्ध कहा। एलीआजर के पिता का
नाम दोदावाह था। एलीआजर मारेशा नगर का था। उसने कहा,
“यहोशापात, तुम अहज्याह के साथ मिल गये हो, यही कारण है

कि यहोवा तुम्हारे कार्य को नष्ट करेगा।” जहाज टूट गए, अत: यहोशापात और अहज्याह उन्हें तर्शीश नगर को न भेज सके।

21

1 तब यहोशापात मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।
उसे दाऊद के नगर में दफनाया गया। यहोराम यहोशापात के स्थान
पर नया राजा हुआ। यहोराम यहोशापात का पुत्र था। 2 यहोराम के
भाई अजर्याह, यहीएल, जकर्याह, अजर्याह, मीकाएल और शपत्याह
थे। वे लोग यहोशापात के पुत्र थे। यहोशापात यहूदा का राजा
था। 3 यहोशापात ने अपने पुत्रों को चाँदी, सोना और कीमती चीज़ें
भेंट में दीं। उसने उन्हें यहूदा में शक्तिशाली किले भी दिये। किन्तु
यहोशापात ने राज्य यहोराम को दिया क्योंकि यहोराम सबसे बड़ा
पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोराम

4 यहोराम ने अपने पिता का राज्य प्राप्त किया और अपने को
शक्तिशाली बनाया। तब उसने तलवार का उपयोग अपने सभी
भाईयों को मारने के लिये किया। उसने इस्राएल के कुछ प्रमुखों
को भी मार डाला। 5 यहोराम ने जब शासन आरम्भ किया तो वह
बत्तीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में आठ वर्ष तक शासन किया।
6 वह उसी तरह रहा जैसे इस्राएल के राजा रहते थे। वह उसी प्रकार
रहा जिस प्रकार अहाब का परिवार रहता था। यह इसलिये हुआ
कि यहोराम ने अहाब की पुत्री से विवाह किया और यहोराम ने
यहोवा की दृष्टि में बुरा किया। 7 किन्तु यहोवा दाऊद के परिवार
को नष्ट नही करना चाहता था क्योंकि उसने दाऊद के साथ वाचा
की थी। यहोवा ने वचन दिया था कि दाऊद और उसकी सन्तान
का एक वंश सदैव चलता रहेगा।
8 यहोराम के समय में, एदोम यहूदा के अधिकार क्षेत्र से बाहर
निकल गया। एदोम के लोगों ने अपना राजा चुन लिया। 9 इसलिये
यहोराम अपने सभी सेनापतियों और रथों के साथ एदोम गया।
एदोमी सेना ने यहोराम और उसके रथ के रथपतियों को घेर लिया।

किन्तु यहोराम ने रात में युद्ध करके अपने निकलने का रास्ता ढूँढ
लिया। 10 उस समय से अब तक एदोम का देश यहूदा के विरुद्ध
विद्रोही रहा है। लिब्ना नगर के लोग भी यहोराम के विरुद्ध हो गए।
यह इसलिए हुआ कि यहोराम ने पूर्वजों के, यहोवा परमेश्वर को
छोड़ दिया। 11 यहोराम ने उच्च स्थान भी यहूदा के पहोड़ियों पर
बनाए। यहोराम ने यरूशलेम के लोगों को, परमेश्वर जो चाहता है
उसे करने से मना किया वह यहूदा के लोगों को यहोवा से दूर ले
गया।

12 एलिय्याह नबी से यहोराम को एक सन्देश मिला। सन्देश में
यह कहा गया था:

"यह वह है जो परमेश्वर यहोवा कहता है। यही वह परमेश्वर
है जिसका अनुसरण तुम्हारा पूर्वज दाऊद करता था। यहोवा
कहता है, 'यहोराम, तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार तुम्हारा
पिता यहोशापात रहा। तुम उस प्रकार नहीं रहे जिस प्रकार यहूदा
का राजा आसा रहा। 13 किन्तु तुम उस प्रकार रहे जिस प्रकार
इस्राएल के राजा रहे। तुमने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को
वह काम करने से रोका है जो यहोवा चाहता है। यही अहाब और
उसके परिवार ने किया। वे यहोवा के प्रति विश्वासयोग्य न रहे।
तुमने अपने भाईयों को मार डाला। तुम्हारे भाई तुमसे अच्छे थे।
14 अत: अब यहोवा शीघ्र ही तुम्हारे लोगों को बहुत अधिक दण्ड
देगा। यहोवा तुम्हारे बच्चों, पत्नियों और तुम्हारी सारी सम्पत्ति को
दण्ड देगा। 15 तुम्हें आँतों की भंयकर बीमारी होगी। यह प्रतिदिन
अधिक बिगड़ती जायेगी। तब तुम्हारी भंयकर बीमारी के कारण
तुम्हारी आँतें बाहर निकल आएंगी।' "

16 यहोवा ने पलिश्तियों और कूशी लोगों के पास रहने वाले
अरब लोगों को यहोराम से रूष्ट किया। 17 उन लोगों ने यहूदा देश
पर आक्रमण कर दिया। वे राजमहल की सारी सम्पत्ति और यहोराम

के पुत्रों और पत्नियों को ले गए। केवल यहोराम का सबसे छोटा पुत्र छोड़ दिया गया। यहोराम के सबसे छोटे पुत्र का नाम यहोआहाज था।
18 उन चीज़ों के होने के बाद यहोवा ने यहोराम की आँतों में ऐसा
रोग उत्पन्न किया जिसका उपचार न हो सका। 19 तब यहोराम की
आँतें, दो वर्ष बाद, उसकी बीमारी के कारण, बाहर आ गई। वह बहुत बुरी पीड़ा में मरा। यहोराम के सम्मान नें लोगों ने आग की महाज्वाला नहीं जलाई जैसा उन्होंने उसके पिता के लिये किया
था। 20 यहोराम उस समय बत्तीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ
था। उसने यरुश्लेम में आठ वर्ष शासन किया। जब यहोराम मरा तो कोई व्यक्ति दु:खी नहीं हुआ। लोगों ने यहोराम को दाऊद के नगर में दफनाया किन्तु उन कब्रों में नहीं जहाँ राजा दफनाये जाते हैं।

22

यहूदा का राजा अहज्याह

1 यरूशलेम के लोगों ने अहज्याह को यहोराम के स्थान पर नया राजा होने के लिये चुना। अहज्याह यहोराम का सबसे छोटा पुत्र था। अरब लोगों के साथ जो लोग यहोराम के डेरों पर आक्रमण करने आए थे उन्होंने यहोराम के अन्य पुत्रों को मार डाला था।
अत: यहूदा में अहज्याह ने शासन करना आरम्भ किया। 2 अहज्याह
ने जब शासन करना आरम्भ किया तब वह बाईस वर्ष का था।* अहज्याह ने यरूशलेम में एक वर्ष शासन किया। उसकी माँ का नाम
अतल्याह था। अतल्याह के पिता का नाम ओम्री था। 3 अहज्याह
भी वैसे ही रहा जैसे अहाब का परिवार रहता था। वह उस प्रकार रहा क्योंकि उसकी माँ ने उसे गलत काम करने के लिये प्रोत्साहित
किया। 4 अहज्याह ने यहोवा की दृष्टि में बुरे काम किये। यही अहाब
के परिवार ने किया था। अहाब के परिवार ने अहज्याह को उसके पिता के मरने के बाद सलाह दी। उन्होंने अहज्याह को बुरी सलाह

---

* **22:2:** अहज्याह ... वर्ष का था कुछ प्राचीन प्रतियों में है, “बयालिस वर्ष का।” 2 राजा 8:26 में यह लिखा है कि अहज्याह बाईस वर्ष का था जब उसने शासन करना आरम्भ किया।

दी। उस बुरी सलाह ने उसे मृत्यु तक पहुँचा दिया। 5 अहज्याह ने
उसी सलाह का अनुसरण किया जो अहाब के परिवार ने उसे दी।
अहज्याह राजा योराम के साथ अराम के राजा हज़ाएल के विरुद्ध
गिलाद के रामोत नगर में गया। योराम के पिता का नाम अहाब था
जो इस्राएल का राजा था। किन्तु अर्मिया के लोगों ने योराम को युद्ध
में घायल कर दिया। 6 योराम लौटकर यिज्रेल नगर को स्वस्थ होने
के लिये गया। वह तब घायल हुआ था जब वह अराम के राजा
हजाएल के विरुद्ध रामोत में युद्ध कर रहा था। तब अहज्याह योराम
से मिलने यिज्रेल नगर को गया। अहज्याह के पिता का नाम यहोराम
था। वह यहूदा का राजा था। योराम के पिता का नाम अहाब था।
योराम यिज्रेल नगर में था क्योंकि वह घायल था।

7 परमेश्वर ने अहज्याह की मृत्यु तब करवा दी जब वह योराम
से मिलने गया। अहज्याह पहुँचा और योराम के साथ येहू से मिलने
गया। येहू के पिता का नाम निमशी था। यहोवा ने येहू को अहाब
के परिवार को नष्ट करने के लिये चुना। 8 येहू अहाब के परिवार
को दण्ड दे रहा था। येहू ने यहूदा के प्रमुखों और अहज्याह के उन
सम्बन्धियों का पता लगाया जो अहज्याह की सेवा करते थे। येहू ने
यहूदा के उन प्रमुखों और अहज्याह के सम्बन्धियों को मार डाला।
9 तब येहू अहज्याह की खोज में था। येहू के लोगों ने उसे उस समय
पकड़ लिया जब वह शोमरोन नगर में छिपने का प्रयत्न कर रहा
था। वे अहज्याह को येहू के पास लाए। उन्होंने अहज्याह को मार
दिया और उसे दफना दिया। उन्होंने कहा, “अहज्याह यहोशापात
का वंशज है। यहोशापात ने पूरे हृदय से यहोवा का अनुसरण किया
था।” अहज्याह के परिवार में वह शक्ति नहीं थी कि यहूदा के राज्य
को अखण्ड रख सके।

रानी अतल्याह

10 अतल्याह अहज्याह की माँ थी। जब उसने देखा कि उसका
पुत्र मर गया तो उसने यहूदा में राजा के सभी पुत्रों को मार डाला।

11 किन्तु यहोशावत ने अहज्याह के पुत्र योआश को लिया और
उसे छिपा दिया। यहोशापात ने योआश और उसकी धाय को अपने
शयनकक्ष के भीतर रखा। यहोशावत राजा यहोराम की पुत्री थी।
वह यहोयादा की पत्नी भी थी। यहोयादा एक याजक था और
यहोशावत अहज्याह की बहन थी। अतल्याह ने योआश को नहीं
मारा क्योंकि यहोशावत ने उसे छिपा दिया था। 12 योआश याजक
के साथ परमेश्वर के मन्दिर में छ: वर्ष तक छिपा रहा। उस काल में
अतल्याह ने रानी के रूप में देश पर शासन किया।

23

1 छ: वर्ष, बाद यहोयादा ने अपनी शक्ति दिखाई। उसने नायकों के
साथ सन्धि की। वे नायक: यरोहाम का पुत्र अजर्याह, यहोहानान का
पुत्र इश्माएल, ओबेद का पुत्र अजर्याह, अदायाह का पुत्र मासेयाह
और जिक्री का पुत्र एलीशापात थे। 2 वे यहूदा के चारों ओर गए
और यहूदा के सभी नगरों से उन्होंने लेवीवंशियों को इकट्ठा किया।
उन्होंने इस्राएल के परिवारों के प्रमुखों को भी इकट्ठा किया। तब
वे यरूशलेम गए। 3 सभी लोगों ने एक साथ मिलकर राजा के साथ
परमेश्वर के मन्दिर में एक सन्धि की।

यहोयादा ने इन लोगों से कहा, “राजा का पुत्र शासन करेगा।
यही वह वचन है जो यहोवा ने दाऊद के वंशजों को दिया था।
4 अब, तुम्हें यह अवश्य करना चाहिए: याजकों और लेवीयों सब्त
के दिन तुममें से जो काम पर जाते हैं उनका एक तिहाई द्वार की
रक्षा करेगा। 5 तुम्हारा एक तिहाई राजमहल पर रहेगा और तुम्हारा
एक तिहाई प्रारम्भिक फाटक पर रहेगा। किन्तु अन्य सभी लोग
यहोवा के मन्दिर के आँगन में रहेंगे। 6 किसी भी व्यक्ति को यहोवा
के मन्दिर में न आने दो। केवल सेवा करने वाले याजकों और
लेवीवंशियों को पवित्र होने के कारण, यहोवा के मन्दिर में आने
की स्वीकृति है। किन्तु अन्य लोग वह कार्य करेंगे जो यहोवा ने
दे रखा है। 7 लेवीवंशी राजा के साथ रहेंगे। हर एक व्यक्ति अपनी
तलवार अपने साथ रखेगा। यदि कोई व्यक्ति मन्दिर में प्रवेश करने

की कोशिश करता है तो उस व्यक्ति को मार डालो। तुम्हें राजा के साथ रहना है, वह जहाँ कहीं भी जाये।"

8 लेवीवंशी और यहूदा के सभी लोगों ने याजक यहोयादा ने जो आदेश दिया, उसका पालन किया। याजक यहोयादा ने याजकों के समूह में से किसी को छूट न दी। इस प्रकार हर एक नायक और उसके सभी लोग सब्त के दिन उनके साथ अन्दर आए जो सब्त
के दिन बाहर गए थे। 9 याजक यहोयादा ने वे भाले तथा बड़ी और छोटी ढालें अधिकारियों को दीं जो राजा दाऊद की थीं। वे हथियार
परमेश्वर के मन्दिर में रखे थे। 10 तब यहोयादा ने लोगों को बताया कि उन्हें कहाँ खड़ा होना है। हर एक व्यक्ति अपने हथियार अपने हाथ में लिये था। पुरुष मन्दिर की दाँयी ओर से बाँयी ओर तक
लगातार खड़े थे। वे वेदी, मन्दिर और राजा के निकट खड़े थे। 11 वे
राजा के पुत्र को बाहर लाए और उसे मुकुट पहना दिया। उन्होंने उसे व्यवस्था के पुस्तक की एक प्रति दी।* तब उन्होंने योआश को राजा बनाया। यहोयादा और उसके पुत्रों ने योआश का अभिषेक किया। उन्होंने कहा, "राजा दीर्घायु हो!"

12 अतल्याह ने मन्दिर की ओर दौड़ते हुए और राजा की प्रशंसा करते हुए लोगों का शोर सुना। वह यहोवा के मन्दिर पर लोगों के
पास आई। 13 उसने नजर दौड़ाई और राजा को देखा। राजा राज स्तम्भ के साथ सामने बाले द्वार पर खड़ा था। अधिकारी और लोग जो तुरही बजाते थे, राजा के पास थे। देश के लोग प्रसन्न थे और तुरही बजा रहे थे। गायक संगीत वाद्यों को बजा रहे थे। गायक प्रशंसा के गायन में लोगों का नेतृत्व कर रहे थे। तब अतल्याह ने अपने वस्त्रों को फाड़ डाला, और उसने कहा, "षड़यन्त्र!"

14 याजक यहोयादा सेना के नायकों को बाहर लाया। उसने उनसे कहा, "अतल्याह को, सेना से, बाहर ले आओ। अपनी तलवार का उपयोग उस व्यक्ति को मार डालने के लिये करो जो उसके साथ

* **23:11:** उन्होंने उसे … प्रति दी हिब्रू में पाठ हैं, "उन्होंने उसे प्रमाण पत्र दिया।" यहाँ शब्द का अर्थ उन नियमों की प्रति है जिनका पालन राजा को करना था। देखें व्यवस्था. 17:18

जाता है।" तब याजक ने सैनिकों को चेतावनी दी, "अतल्याह को
यहोवा के मन्दिर में मत मारो।" 15 तब उन लोगों ने अतल्याह को
वश में कर लिया जब वह राजमहल के अश्व द्वार पर आई। तब
उन्होंने उसी स्थान पर उसे मार डाला।

16 तब यहोयादा ने राजा और सभी लोगों के साथ एक सन्धि की।
सभी ने स्वीकार किया कि वे यहोवा के लोग रहेंगे। 17 सभी लोग
बाल की मूर्ति के मन्दिर में गए और उसे उखाड़ डाला। उन्होंने बाल
के मन्दिर की वेदियों और मूर्तियों को तोड़ डाला। उन्होंने बाल की
वेदी के सामने बाल के याजक मत्तान को मार डाला।

18 तब यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के लिये उत्तरदायी याजकों
को चुना। वे याजक लेवीशंशी थे और दाऊद ने उन्हें यहोवा के
मन्दिर के प्रति उत्तरदायी होने का कार्य सौंपा था। उन याजकों को
होमबलि मूसा के आदेश के अनुसार यहोवा को चढ़ानी थी। वे
अति प्रसन्नता से दाऊद के आदेश के अनुसार गाते हुए बलि चढ़ाते
थे। 19 यहोयादा ने यहोवा के मन्दिर के द्वार पर द्वारपाल रखे जिससे
कोई व्यक्ति जो किसी दृष्टि से शुद्ध नहीं था मन्दिर में नहीं जा सकता
था।

20 यहोयादा ने सेना के नायकों, प्रमुखों, लोगों के प्रशासकों और
देश के सभी लोगों को अपने साथ लिया। तब यहोयादा ने राजा को
यहोवा के मन्दिर से बाहर निकाला और वे ऊपरी द्वार से राजमहल
में गए। उस स्थान पर उन्होंने राजा को गद्दी पर बिठाया। 21 यहूदा
के सभी लोग बहुत प्रसन्न थे और यरूशलेम नगर में शान्ति रही
क्योंकि अतल्याह तलवार से मार दी गई थी।

24

योआश फिर मन्दिर बनाता है

1 योआश जब राजा बना सात वर्ष का था। उसने यरूशलेम में
चालीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम सिब्या था।
सिब्या बेर्शेबा नगर की थी। 2 योआश यहोवा के सामने तब तक
ठीक काम करता रहा जब तक याजक यहोयादा जीवित रहा।

3 यहोयादा ने योआश के लिये दो पत्नियाँ चुनीं। यहोआश के पुत्र
और पुत्रियाँ थीं।

4 तब कुछ समय बाद, योआश ने यहोवा का मन्दिर दुबारा बनाने
का निश्चय किया। 5 योआश ने याजकों और लेवीवंशियों को एक
साथ बुलाया। उसने उनसे कहा, "यहूदा के नगरों में जाओ और
उस धन को इकट्ठा करो जिसका भुगतान इस्राएल के लोग हर वर्ष
करते हैं। उस धन का उपयोग परमेश्वर के मन्दिर को दुबारा बनाने
में करो। शीघ्रता करो और इसे पूरा कर लो।" किन्तु लेवीवंशियों ने
शीघ्रता नहीं की।

6 इसलिये राजा योआश ने प्रमुख याजक यहोयादा को बुलाया।
राजा ने कहा, "यहोयादा, तुमने लेवीवंशियों को यहूदा और
यरूशलेम से कर का धन लाने को प्रेरित क्यों नहीं किया यहोवा
के सेवक मूसा और इस्राएल के लोगों ने पवित्र तम्बू के लिये इस
कर के धन का उपयोग किया था।"

7 बीते काल में अतल्याह के पुत्र, परमेश्वर के मन्दिर में बलपूर्वक
घुस गए थे। उन्होंने यहोवा के मन्दिर की पवित्र चीज़ों का उपयोग
अपने बाल देवताओं की पूजा के लिये किया था। अतल्याह एक
दुष्ट स्त्री थी।

8 राजा योआश ने एक सन्दूक बनाने और उसे यहोवा के मन्दिर
के द्वार के बाहर रखने का आदेश दिया। 9 तब लेवीवंशियों ने यहूदा
और यरूशलेम में यह घोषणा की। उन्होंने लोगों से कर का धन
यहोवा के लिये लाने को कहा। यहोवा के सेवक मूसा ने इस्राएल
के लोगों से मरुभूमि में रहते समय जो कर के रुप में धन माँगा था
उतना ही यह धन है। 10 सभी प्रमुख और सभी लोग प्रसन्न थे। वे
धन लेकर आए और उन्होंने उसे सन्दूक में डाला। वे तब तक देते
रहे जब तक सन्दूक भर नहीं गया। 11 तब लेवीवंशियों को राजा
के अधिकारियों के सामने सन्दूक ले जाना पड़ा। उन्होंने देखा कि
सन्दूक धन से भर गया है। राजा के सचिव और प्रमुख याजक

के अधिकारी आए और उन्होंने धन को सन्दूक से निकाला। तब वे सन्दूक को अपनी जगह पर फिर वापस ले गए। उन्होंने यह बार—बार किया और बहुत धन बटोरा।
12 तब राजा योआश और योहोयादा ने वह धन उन लोगों को दिया जो यहोवा के मन्दिर को बनाने का कार्य कर रहे थे और यहोवा के मन्दिर को बनाने में कार्य करने वालों ने यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कुशल बढ़ई और लकड़ी पर खुदाई का काम करने वालों को मजदूरी पर रखा। उन्होंने यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने के लिये कांसे और लोहे का काम करने की जानकारी रखने वालों को भी मजदूरी पर रखा।

13 काम की निगरानी रखने वाले व्यक्ति विश्वसनीय थे। यहोवा के मन्दिर को दुबारा बनाने का काम सफल हुआ। उन्होंने परमेश्वर के मन्दिर को जैसा वह पहले था, वैसा ही बनाया और पहले से अधिक मजबूत बनाया।
14 जब कारीगरों ने काम पूरा कर लिया तो वे उस धन को जो बचा था, राजा योआश और यहोयादा के पास ले आए। उसका उपयोग उन्होंने यहोवा के मन्दिर के लिये चीज़ें बनाने के लिये किया। वे चीज़ें मन्दिर के सेवाकार्य में और होमबलि चढ़ाने में काम आती थीं। उन्होंने सोने और चाँदी के कटोरे और अन्य वस्तुएँ बनाई। याजकों ने यहोवा के मन्दिर में हर एक संध्या को होमबलि तब तक चढ़ाई जब तक यहोयादा जीवित रहा।

15 यहोयादा बूढ़ा हुआ। उसने बहुत लम्बी उम्र बिताई तब वह मरा। यहोयादा जब मरा, वह एक सौ तीस वर्ष का था।
16 लोगों ने यहोयादा को दाऊद के नगर में वहाँ दफनाया जहाँ राजा दफनाए जाते हैं। लोगों ने यहोयादा को वहाँ दफनाया क्योंकि अपने जीवन में उसने परमेश्वर और परमेश्वर के मन्दिर के लिये इस्राएल में बहुत अच्छे कार्य किये।

17 यहोयादा के मरने के बाद यहूदा के प्रमुख आए और वे राजा योआश के सामने झुके। राजा ने इन प्रमुखों की सुनी।
18 राजा और प्रमुखों ने उस यहोवा, परमेश्वर के मन्दिर को अस्वीकार कर दिया

जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। उन्होंने अशेरा—स्तम्भ और
अन्य मूर्तियों की पूजा आरम्भ की। परमेश्वर यहूदा और यरूशलेम
के लोगों पर क्रोधित हुआ क्योंकि राजा और वे प्रमुख अपराधी
थे। 19 परमेश्वर ने लोगों के पास नबियों को उन्हें यहोवा की ओर
लौटाने के लिये भेजा। नबियों ने लोगों को चेतावनी दी। किन्तु लोगों
ने सुनने से इन्कार कर दिया।

20 परमेश्वर की आत्मा जकर्याह पर उतरी। जकर्याह का पिता
याजक यहोयादा था। जकर्याह लोगों के सामने खड़ा हुआ और
उसने कहा, "जो यहोवा कहता है वह यह है: 'तुम लोग यहोवा का
आदेश पालन करने से क्यों इन्कार करते हो तुम सफल नहीं होगे।
तुमने यहोवा को छोड़ा है। इसलिये यहोवा ने भी तुम्हें छोड़ दिया
है!' "

21 लेकिन लोगों ने जकर्याह के विरुद्ध योजना बनाई। राजा ने
जकर्याह को मार डालने का आदेश दिया, अत: उन्होंने उस पर तब
तक पत्थर मारे जब तक वह मर नहीं गया। लोगों ने यह मन्दिर
के आँगन में किया। 22 राजा योआश ने अपने ऊपर यहोयादा की
दयालुता को भी याद नहीं रखा। यहोयादा जकर्याह का पिता था।
किन्तु योआश ने यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार डाला। मरने के
पहले जकर्याह ने कहा, "यहोवा उस पर धन्यान दे जो तुम कर रहे
हो और तुम्हें दण्ड दे!"

23 वर्ष के अन्त में अराम की सेना योआश के विरुद्ध आई। उन्होंने
यहूदा और यरूशलेम पर आक्रमण किया और लोगों के सभी प्रमुखों
को मार डाला। उन्होंने सारी कीमती चीज़ें दमिश्क के राजा के पास
भेज दीं। 24 अराम की सेना बहुत कम समूहों में आई थी किन्तु
यहोवा ने उसे यहूदा की बहुत बड़ी सेना को हराने दिया। यहोवा ने
यह इसलिये किया कि यहूदा के लोगों ने यहोवा परमेश्वर को छोड़
दिया जिसका अनुसरण उनके पूर्वज करते थे। इस प्रकार योआश
को दण्ड मिला। 25 जब अराम के लोगों ने योआश को छोड़ा, वह
बुरी तरह घायल था। योआश के अपने सेवकों ने उसके विरुद्ध

योजना बनाई। उन्होंने ऐसा इसलिये किया कि योआश ने याजक यहोयादा के पुत्र जकर्याह को मार डाला था। सेवकों ने योआश को उसकी अपनी शैया पर ही मार डाला। योआश के मरने के बाद लोगों ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। किन्तु लोगों ने उसे स्थान पर नहीं दफनाया जहाँ राजा दफनायें जाते हैं।

26 जिन सेवकों ने योआश के विरुद्ध योजना बनाई, वे ये हैं जाबाद और यहोजाबाद। जाबाद की माँ का नाम शिमात था। शिमात अम्मोन की थी। यहोजाबाद की माँ का नाम शिम्रित था।
शिम्रित मोआब की थी। 27 योआश के पुत्रों की कथा, उसके विरुद्ध बड़ी भविष्यवाणियाँ और उसने फिर परमेश्वर का मन्दिर कैसे बनाया, राजाओं को व्याख्या नामक पुस्तक में लिखा है। उसके बाद अमस्याह नया राजा हुआ। अमस्याह योआश का पुत्र था।

25

यहूदा का राजा अमस्याह

1 अमस्याह राजा बनने के समय पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम में उन्तीस वर्ष तक शासन किया। उसकी माँ का नाम
यहोअद्दान था। यहोअद्दान यरूशलेम की थी। 2 अमस्याह ने वही किया जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। किन्तु उसने उन्हें पूरे
हृदय से नहीं किया। 3 अमस्याह के हाथ में राज्यसत्ता सुदृढ़ हो गयी। तब उसने उन अधिकारियों को मार डाला जिन्होंने उसके
पिता राजा को मारा था। 4 किन्तु अमस्याह ने उन अधिकारियों के बच्चों को नहीं मारा। क्यों क्योंकि उसने मूसा के पुस्तक में लिखे नियमों को माना। यहोवा ने आदेश दिया था, “पिताओं को अपने पुत्रों के पाप के लिये नहीं मारना चाहिए। बच्चों को अपने पिता के पापों के लिये नहीं मरना चाहिए। हर एक व्यक्ति को अपने स्वयं के पाप के लिये मरना चाहिए।”

5 अमस्याह ने यहूदा के लोगों को इकट्ठा किया। उसने उनके परिवारों का वर्ग बनाया और उन वर्गो के अधिकारी सेनाध्यक्ष और नायक नियुक्त किये। वे प्रमुख यहूदा और बिन्यामीन के

सभी सैनिकों के अधिकारी हुए। सभी लोग जो सैनिक होने के
लिये चुने गए, बीस वर्ष के या उससे अधिक के थे। वे सब तीन
लाख प्रशिक्षित सैनिक भाले और ढाल के साथ लड़ने वाले थे।
6 अमस्याह ने एक लाख सैनिकों को इस्राएल से किराये पर लिया।
उसने पौने चार टन चाँदी का भुगतान उन सैनिकों को किराये पर
लेने के लिये किया। 7 किन्तु परमेश्वर का एक व्यक्ति अमस्याह के
पास आया। परमेश्वर के व्यक्ति ने कहा, "राजा, अपने साथ इस्राएल
की सेना को न जाने दो। परमेश्वर इस्राएल के साथ नहीं है। परमेश्वर
एप्रैम के लोगों के साथ नहीं है। 8 सम्भव है तुम अपने को शक्तिशाली
बनाओ औऱ युद्ध की तैयारी करो, किन्तु परमेश्वर तुम्हें जिता या हरा
सकता है।" 9 अमस्याह ने परमेश्वर के व्यक्ति से कहा, "किन्तु हमारे
धन का क्या होगा जो मैंने पहले ही इस्राएल की सेना को दे दिया
है" परमेश्वर के व्यक्ति ने उत्तर दिया, "यहोवा के पास बहुत अधिक
है। वह उससे भी अधिक तुमको दे सकता है!"

10 इसलिए अमस्याह ने इस्राएल की सेना को वापस घर एप्रैम
को भेज दिया। वे लोग राजा और यहूदा के लोगों के विरुद्ध बहुत
क्रोधित हुए। वे बहुत अधिक क्रोधित होकर अपने घर लौटे।

11 तब अमस्याह बहुत साहसी हो गया और वह अपनी सेना को
एदोम देश में नमक की घाटी में ले गया। उस स्थान पर अमस्याह
की सेना ने सेईर के दस हज़ार सैनिकों को मार डाला। 12 यहूदा की
सेना ने सेईर से दस हज़ार आदमी पकड़े। वे उन लोगों को सेईर से
एक ऊँची चट्टान की चोटी पर ले गए। वे लोग तब तक जीवित थे।
तब यहूदा की सेना ने उन व्यक्तियों को उस ऊँची चट्टान की चोटी
से नीचे फेंक दिया और उनके शरीर नीचे की चट्टनों पर चूर चूर हो
गए।

13 किन्तु उसी समय इस्राएली सेना यहूदा के कुछ नगरों पर
आक्रमण कर रही थी। वे शोमरोन से बेथोरोन नगर तक के नगरों
पर आक्रमण कर रहे थे। उन्होंने तीन हज़ार लोगों को मार डाला
और वे बहुत सी कीमती चीज़ें ले गए। उस सेना के लोग इसलिये

क्रोधित थे क्योंकि अमस्याह ने उन्हें युद्ध में अपने साथ सम्मिलित नहीं होने दिया।

14 अमस्याह एदोमी लोगों को हराने के बाद घर लौटा। वह सेईर के लोगों की उन देवमूर्तियों को लाया जिनकी वे पूजा करते थे। अमस्याह ने उन देवमूर्तियों को पूजना आरम्भ किया। उसने उन देवताओं को प्रणाम किया और उनको सुगन्धि भेंट की।
15 यहोवा
अमस्याह पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने अमस्याह के पास एक नबी भेजा। नबी ने कहा, "अमस्याह, तुमने उन देवताओं की क्यों पूजा की जिन्हें वे लोग पूजते थे वे देवता तो अपने लोगों की भी तुमसे रक्षा न कर सके!"

16 जब नबी ने यह बोला, अमस्याह ने नबी से कहा, "हम लोगों ने तुम्हें कभी राजा का सलाहकार नहीं बनाया! चुप रहो! यदि तुम चुप नहीं रहे तो मार डाले जाओगे।" नबी चुप हो गया, किन्तु उसने तब कहा, "परमेश्वर ने सचमुच तुमको नष्ट करने का निश्चय कर लिया है। क्योंकि तुम वे बुरी बातें करते हो और मेरी सलाह नहीं सुनते।"

17 यहूदा के राजा अमस्याह ने अपने सलाहकार के साथ सलाह की। तब उसने योआश के पास सन्देश भेजा। अमस्याह ने योआश से कहा, "हम लोग आमने—सामने मिलें।" योआश यहोआहाज का पुत्र था। यहोआहाज येहू का पुत्र था। येहू इस्राएल का राजा था।

18 तब योआश ने अपना उत्तर अमस्याह को भेजा। योआश इस्राएल का राजा था और अमस्याह यहूदा का राजा था। योआश ने यह कथा सुनाई: "लेबानोन की एक छोटी कंटीली झाड़ी ने लबानोन के एक विशाल देवदारु के वृक्ष को सन्देश भेजा। छोटी कंटीली झाड़ी ने कहा, 'अपनी पुत्री का विवाह मेरे पुत्र के साथ कर दो,' किन्तु एक जंगली जानवर निकला और उसने कंटीली झाड़ी
को कुचला और उसे नष्ट कर दिया।
19 तुम कहते हो, 'मैंने एदोम
को हराया है!' तुम्हें उसका घंमड है और उसकी डींग हाँकते हो। किन्तु तुम्हें घर में घुसे रहना चाहिए। तुम्हें खतरा मोल लेने की

आवश्यकता नहीं है। यदि तुम मुझसे युद्ध करोगे ते तुम औऱ यहूदा नष्ट हो जाएंगे।”

20 किन्तु अमस्याह ने सुनने से इन्कार कर दिया। यह परमेश्वर की ओर से हुआ। परमेश्वर ने यहूदा को इस्राएल द्वारा हराने की योजना बनाई क्योंकि यहूदा के लोग उन देवताओं का अनुसरण कर रहे थे जिनका अनुसरण एदोम के लोग करते थे।
21 इसलिये इस्राएल का राजा योआश बेतशेमेश नगर में यहूदा के राजा अमस्याह से आमने—सामने मिला। बेतशेमेश यहूदा में है।
22 इस्राएल ने यहूदा को हराया। यहूदा का हर एक व्यक्ति अपने घरों को भाग गया।
23 योआश ने अमस्याह को बेतशेमेश में पकड़ा और उसे यरूशलेम ले गया। अमस्याह के पिता का नाम योआश था। योआश के पिता का नाम यहोआहाज था। योआश ने छ: सौ फुट लम्बी यरूशलेम की उस दीवार को जो एप्रैम फाटक से कोने के फाटक तक थी, गिरा दिया।
24 तब योआश ने परमेश्वर के मन्दिर का सोना, चाँदी तथा कई अन्य सामान ले लिया। ओबेदेदोम मन्दिर में उन चीज़ों की सुरक्षा का उत्तरदायी था। किन्तु योआश ने उन सभी चीजों को ले लिया। योआश ने राजमहल से भी कीमती चीज़ों को लिया। तब योआश ने कुछ व्यक्तियों को बन्दी बनाया और शोमरोन लौट गया।

25 अमस्याह योआश के मरने के बाद पन्द्रह वर्ष जीवित रहा। अमस्याह का पिता यहूदा का राजा योआश था।
26 अमस्याह ने आरम्भ से अन्त तक अन्य जो कुछ किया वह सब इस्राएल और यहूदा के राजा के इतिहास नामक पुस्तक में लिखा है।
27 जब अमस्याह ने यहोवा की आज्ञा का पालन करना छोड़ दिया, यरूशलेम के लोगों ने उसके विरुद्ध एक योजना बनाई। वह लाकीश नगर को भाग गया। किन्तु लोगों ने लाकीश में व्यक्तियों को भेजा और उन्होंने अमस्याह को वहाँ मार डाला।
28 तब वे अमस्याह के शव को घोड़ों पर ले गए और उसे उसके पूर्वजों के साथ यहूदा में दफनाया।

26

यहूदा का राजा उज्जिय्याह

1 तब यहूदा के लोगों ने अमस्याह के स्थान पर नया राजा होने के
लिये उज्जिय्याह को चुना। अमस्याह उज्जिय्याह का पिता था। जब
यह हुआ तो उज्जिय्याह सोलह वर्ष का था। 2 उज्जिय्याह ने एलोत
नगर को दुबारा बनाया और इसे यहूदा को लौटा दिया। उज्जिय्याह
ने यह अमस्याह के मर जाने और पूर्वजों के साथ उसके दफनाए
जाने के बाद किया।

3 उज्जिय्याह जब राजा हुआ तो वह सोलह वर्ष का था। उसने
यरूशलेम में बावन वर्ष तक राज्य किया। उसकी माँ का नाम
यकील्याह था। यकील्याह यरूशलेम की थी। 4 उज्जिय्याह ने वह
किया जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने यहोवा का
अनुसरण वैसे ही किया जैसे उसके पिता अमस्याह ने किया था।
5 उज्जिय्याह ने परमेश्वर का अनुसरण जकर्याह के जीवन—काल
में किया। जकर्याह ने उज्जिय्याह को शिक्षा दी कि परमेश्वर का
सम्मान और उसकी आज्ञा का पालन कैसे किया जाता है। जब
उज्जिय्याह यहोवा की आज्ञा का पालन कर रहा था तब परमेश्वर
ने उसे सफलता दिलाई।

6 उज्जिय्याह ने पलिश्ती लोगों के विरुद्ध एक युद्ध किया। उसने
गत, यब्ने, और अशदोद नगर की दीवारों को गिरा दिया। उज्जिय्याह
ने अशदोद नगर के पास और पलिश्ती लोगों के बीच अन्य स्थानों
में नगर बसाये। 7 परमेश्वर ने उज्जिय्याह की सहायता पलिशितयों
के गूर्बाल नगर में रहने वाले अरबों और मुनियों के साथ युद्ध करने
में की। 8 अम्मोनी उज्जिय्याह को राज्य कर देते थे। उज्जिय्याह का
नाम मिस्र की सीमा तक प्रसिद्ध हो गया। वह प्रसिद्ध था क्योंकि
वह बहुत शक्तिशाली था।

9 उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, घाटी के फाटक
और दीवार के मुड़ने के स्थानों पर मीनारें बनवाई। उज्जिय्याह ने
उन मीनारों को दृढ़ बनाया। 10 उज्जिय्याह ने मीनारों को मरुभूमि

में बनाया। उसने बहुत से कुँए भी खुदवाए। उसके पास पहाड़ी और मैदानी प्रदेशों में बहुत से पशु थे। उज्जिय्याह के पास पर्वतों में और जहाँ अच्छी उपज होती थी, उस भूमि में किसान थे। वह ऐसे व्यक्तियों को भी रखे हुए था जो उन खेतों की रखवाली करते थे जिनमें अँगूर होते थे। उसे कृषि से प्रेम था।

11 उज्जिय्याह के पास प्रशिक्षित सैनिकों की एक सेना थी। वे सैनिक सचिव यीएल और अधिकारी मासेयाह द्वारा वर्गो में बँटे थे। हनन्याह उनका प्रमुख था। यीएल और मासेयाह ने उन सैनिकों को गिना और उन्हें वर्गो में रखा। हनन्याय राजा के अधिकारियों
में से एक था। 12 सैनिकों के ऊपर दो हज़ार छ: सौ प्रमुख थे। 13 वे
परिवार प्रमुख तीन लाख सात हज़ार पाँच सौ पुरुषों की उस सेना के अधिपति थे जो बड़ी शक्ति से लड़ती थी। वे सैनिक राजा को शत्रुओं
के विरुद्ध सहायता करते थे। 14 उज्जिय्याह ने सेना को ढाल, भाले,
टोप, कवच, धनुष और गुलेलों के लिये पत्थर दिये थे। 15 यरूशलेम
में उज्जिय्याह ने जो यन्त्र बनाए वह बुद्धिमानों के अविष्कार थे। वे यन्त्र मीनारों तथा कोने की दीवारों पर रखे गए थे। ये यन्त्र बाण और बड़े पत्थर फेंकते थे। उज्जिय्याह प्रसिद्ध हो गया। लोग उसका नाम दूर—दूर के देशों में जानते थे। उसके पास बड़ी सहायता थी और वह शक्तिशाली राजा हो गया।

16 किन्तु जब उजिय्याह शक्तिशाली हो गया, उसके घमण्ड ने उसे नष्ट किया। वह यहोवा परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं रहा। वह
यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने की वेदी पर गया। 17 याजक
अजर्याह और यहोवा के अस्सी साहसी याजक सेवक उजिय्याह
के पीछे मन्दिर में गए। 18 उन्होंने उजिय्याह से कहा कि तुम गलती
कर रहे हो। उन्होंने उससे कहा, “उजिय्याह, यहोवा के लिये सुगन्धि जलाना तुम्हारा काम नहीं है। यह करना तुम्हारे लिये ठीक नहीं है। याजक और हारून के वंशज ही केवल यहोवा के लिये सुगन्धि जलाते हैं। इन याजकों को सुगन्धि जलाने की पवित्र सेवा के लिये

प्रशिक्षण दिया गया है। सर्वाधिक पवित्र स्थान से बाहर निकल जाओ। तुम विश्वासयोग्य नहीं रहे हो। यहोवा परमेश्वर तुमको इसके लिये सम्मान नहीं देगा!”

19 किन्तु उज्जिय्याह क्रोधित हुआ। उसके हाथ में सुगन्धि जलाने के लिये एक कटोरा था। जिस समय उज्जिय्याह याजकों पर बहुत क्रोधित था, उसी समय उसके माथे पर कुष्ठ हो गया। यह याजकों के सामने यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के वेदी के पास
हुआ। 20 प्रमुख याजक अजर्याह और सभी याजकों ने उज्जिय्याह को देखा। वे उसके ललाट पर कुष्ठ देख सकते थे। याजकों ने शीघ्रता से उज्जिय्याह को मन्दिर से बाहर जाने को विवश किया। उज्जिय्याह ने स्वयं शीघ्रता की, क्योंकि यहोवा ने उसे दण्ड दे दिया
था। 21 राजा उज्जिय्याह मृत्यु पर्यन्त कोढ़ी था। वह यहोवा के मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता था। उज्जिय्याह के पुत्र योताम ने राजमहल को व्यवस्थित रखा और लोगों का प्रशासक बना।

22 उज्जिय्याह ने आरम्भ से लेकर अन्त तक जो कुछ किया वह यशायाह नबी द्वारा लिखा गया। यशायाह का पिता आमोस
था। 23 उज्जिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के पास दफनाया गया। उज्जिय्याह को राजाओं के कब्रिस्तान के पास मैदान में दफनाया गया। क्यों? क्योंकि लोगों ने कहा, “उज्जिय्याह को कोढ़ है।” योताम उज्जिय्याह के स्थान पर नया राजा हुआ। योताम उज्जिय्याह का पुत्र था।

27

यहूदा का राजा योताम

1 योताम पच्चीस वर्ष का था जब वह राजा हुआ। उसने सोलह वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम यरूशा
था। यरूशा सादोक की पुत्री थी। 2 योताम ने वह किया, जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने परमेश्वर की आज्ञा का पालन वैसे ही किया जैसे उसके पिता उज्जिय्याह ने किया था। किन्तु

योताम यहोवा के मन्दिर में सुगन्धि जलाने के लिये उसी प्रकार
नहीं घुसा जैसे उसका पिता घुसा था। किन्तु लोगों ने पाप करना
जारी रखा। 3 योताम ने यहोवा के मन्दिर के ऊपरी द्वार को दुबारा
बनाया। उसने ओपेल नामक स्थान में दीवार पर बहुत से निर्माण
कार्य किये। 4 योताम ने यहूदा के पहाड़ी प्रदेश में भी नगर बनाए।
योताम ने मीनार और किले जंगलों में बनाए। 5 योताम अम्मोनी
लोगों के राजा और उसके सेना के विरुद्ध लड़ा और उन्हें हराया।
इसलिये हर वर्ष तीन वर्ष तक अम्मोनी लोग योताम को पौने चार
टन चाँदी, बासठ हज़ार बुशल गेहूँ और बासठ बुशल जौ देते रहे।
6 योताम शक्तिशाली हो गया क्योंकि उसने विश्वासपूर्वक यहोवा,
अपने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया। 7 योताम ने अन्य जो
कुछ भी किया तथा उसके सभी युद्ध यहूदा और इस्राएल के राजाओं
के इतिहास की पुस्तक में लिखे गए हैं। 8 योताम जब राजा हुआ था,
पच्चीस वर्ष का था। उसने यरूशलेम पर सोलह वर्ष शासन किया।
9 तब योताम मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों
ने उसे दाऊद के नगर में दफनाया। योताम के स्थान पर आहाज
राजा हुआ। आहाज योताम का पुत्र था।

28

यहूदा का राजा आहाज

1 आहाज बीस वर्ष का था, जब वह राजा हुआ। उसने यरूशलेम
में सोलह वर्ष तक राज्य किया। आहाज अपने पूर्वज दाऊद की तरह
सच्चाई से नहीं रहा। आहाज ने वह नहीं किया जो कुछ यहोवा चाहता
था कि वह करे। 2 आहाज ने इस्राएली राजाओं के बुरे उदाहरणों
का अनुसरण किया। उसने बाल—देवता की पूजा के लिये मूर्तियों
को बनाने के लिये साँचे का उपयोग किया। 3 आहाज ने हिन्नोम
की घाटी में सुगन्धि जलाई। उसने अपने पुत्रों को आग में जलाकर
बलि भेंट की। उसने वे सब भयंकर पाप किये जिसे उस प्रदेश में

रहने वाले व्यक्तियों ने किया था। यहोवा ने उन व्यक्तियों को बाहर
जाने को विवश किया था जब इस्राएल के लोग उस भूमि में आए
थे। 4 आहाज ने बलि भेंट की और सुगन्धि को उच्चस्थानों अर्थात्
पहाड़ियों और हर एक हरे पेड़ के नीचे जलाया।
5-6 आहाज ने पाप किया, इसलिये यहोवा, उसके परमेश्वर ने
अराम के राजा को उसे पराजित करने दिया। अराम के राजा और
उसकी सेना ने आहाज को हराया और यहूदा के अनेक लोगों को
बन्दी बनाया। अराम का राजा उन बन्दियों को दमिश्क नगर को
ले गया। यहोवा ने इस्राएल के राजा पेकह को भी आहाज को
पराजित करने दिया। पेकह के पिता का नाम रमल्याह था। पेकह
और उसकी सेना ने एक दिन में यहूदा के एक लाख बीस हज़ार वीर
सैनिकों को मार डाला। पेकह ने यहूदा के उन लोगों को इसलिये
हराया कि उन्होंने उस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानना अस्वीकार
कर दिया जिसकी आज्ञा उनके पूर्वज मानते थे। 7 जिक्री एप्रैमी का
एक वीर सैनिक था। जिक्री ने राजा आहाज के पुत्र मासेयाह और
राजामहल के संरक्षक अधिकारी अज्रीकाम और एलकाना को मार
डाला। एलकाना राजा के ठीक बाद द्वितीय शक्ति था।
8 इस्राएल की सेना ने यहूदा में रहने वाले दो लाख अपने निकट
सम्बन्धियों को पकड़ा। उन्होंने स्त्रियों, बच्चे और यहूदा से बहुत
कीमती चीज़ों लीं। इस्राएली उन बन्दियों और उन चीज़ों को शोमरोन
नगर को ले आए। 9 किन्तु वहाँ यहोवा का एक नबी था। इस
नबी का नाम ओदेद था। ओदेद इस्राएल की इस सेना से मिला जो
शोमरोन लौट आई। ओदेद ने इस्राएल की सेना से कहा, "यहोवा,
परमेश्वर ने जिसकी आज्ञा तुम्हारे पूर्वजों ने मानी, तुम्हें यहूदा के
लोगों को हराने दिया क्योंकि वह उन पर क्रोधित था। तुम लोगों
ने यहूदा के लोगों को बहुत नीच ढंग से मारा और दण्डित किया।
अब परमेश्वर तुम पर क्रोधित है। 10 तुम यहूदा और यरूशलेम के
लोगों को दास की तरह रखने की योजना बना रहे हो। तुम लोगों
ने भी यहोवा, अपने परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया है। 11 अब मेरी

सुनो। अपने जिन भाई बहनों को तुम लोगों ने बन्दी बनाया है उन्हें वापस कर दो। यह करो क्योंकि यहोवा का भयंकर क्रोध तुम्हारे विरुद्ध है।”

12 तब एप्रैम के कुछ प्रमुखों ने इस्राएल के सैनिकों को युद्ध से
लौटकर घर आते देखा। वे प्रमुख इस्राएल के सैनिकों से मिले और
उन्हें चेतावनी दी। वे प्रमुख योहानान का पुत्र अजर्याह, मशिल्लेमोत
का पुत्र बेरेक्याह, शल्लूम का पुत्र यहिजकिय्याह और हदलै का पुत्र
अमासा थे। 13 उन प्रमुखों ने इस्राएली सैनिकों से कहा, “यहूदा के
बन्दियों को यहाँ मत लाओ। यदि तुम यह करते हो तो यह हम
लोगों को यहोवा के विरुद्ध बुरा पाप करायेगा। वह हमारे पाप और
अपराध को और अधिक बुरा करेगा तथा यहोवा हम लोगों के
विरुद्ध बहुत क्रोधित होगा!”

14 इसलिए सैनिकों ने बन्दियों और कीमती चीज़ों को उन प्रमुखों
और इस्राएल के लोगों को दे दिया। 15 पहले गिनाए गए प्रमुख
(अजर्याह, बेरेक्याह, यहिजकिय्याह और अमास) खड़े हुए और
उन्होंने बन्दियों की सहायता की। इन चारों व्यक्तियों ने उन वस्त्रों
को लिया जो इस्राएली सेना ने लिये थे और इसे उन लोगों को दिया
जो नंगे थे। उन प्रमुखों ने उन लोगों को जूते भी दिये। उन्होंने यहूदा
के बन्दियों को कुछ खाने और पीने को दिया। उन्होंने उन लोगों
को तेल मला। तब एप्रैम के प्रमुखों ने कमजोर बन्दियों को खच्चरों
पर चढ़ाया और उन्हें उनके घर यरीहो में उनके परिवारों के पास ले
गये। यरीहो का नाम ताड़ के पेड़ का नगर था। तब वे चारों प्रमुख
अपने घर शोमरोन को लौट गए।

16-17 उसी समय, एदोम के लोग फिर आए और उन्होंने यहूदा
के लोगों को हराया। एदोमियों ने लोगों को बन्दी बनाया और उन्हें
बन्दी के रूप में ले गए। इसलिये राजा आहाज ने अश्शूर के राजा से
सहायता माँगी। 18 पलिश्ती लोगों ने भी पहाड़ी के नगरों और दक्षिण
यहूदा पर आक्रमण किया। पलिश्ती लोगों ने बेतशेमेश, अय्यालोन,

गदेरोत, सोको, तिम्ना और गिमजो नामक नगरों पर अधिकार कर
लिया। उन्होंने उन नगरों के पास के गाँवों पर भी अधिकार कर
लिया। तब उन नगरों में पलिशती रहने लगे। 19 यहोवा ने यहूदा
को कष्ट दिया क्योंकि यहूदा के राजा आहाज ने यहूदा के लोगों
को पाप करने के लिये प्रोत्साहित किया। वह यहोवा के प्रति बहुत
अधिक अविश्वास योग्य था। 20 अश्शूर का राजा तिलगतपिलनेसेर
आया और आहाज को सहायता देने के स्थान पर उसने कष्ट दिया।
21 आहाज ने कुछ कीमती चीज़ों यहोवा के मन्दिर, राजमहल और
राजकुमार भवन से इकट्टा कीं। आहाज ने वे चीज़ें अश्शूर के राजा
को दीं। किन्तु उसने आहाज को सहायता नहीं दी।

22 आहाज की परेशानियों के समय में उसने और अधिक बुरे
पाप किये और यहोवा का औऱ अधिक अविश्वास योग्य बन गया।
23 उसने दमिश्क के लोगों द्वारा पूजे जाने वाले देवताओं को बलिभेंट
की। दमिश्क के लोगों ने आहाज को पराजित किया था। इसलिए
उसने मन ही मन सोचा था, "अराम के लोगों के देवताओं की पूजा ने
उन्हें सहायता दी। यदि मैं उन देवताओं को बलिभेंट करुँ तो संभव
है, वे मेरी भी सहायता करें।" आहाज ने उन देवताओं की पूजा की।
इस प्रकार उसने पाप किया और उसने इस्राएल के लोगों को पाप
करने वाला बनाया।

24 आहाज ने यहोवा के मन्दिर से चीज़ें इकट्ठी कीं और उनके
टुकड़े कर दिये। तब उसने यहोवा के मन्दिर का द्वार बन्द कर
दिया। उसने वेदियाँ बनाई और यरूशलेम में सड़क के हर मोड़ पर
उन्हें रखा। 25 आहाज ने यहूदा के हर नगर में अन्य देवताओं की
पूजा के लिये उच्च स्थान सुगन्धि जलाने के लिये बनाए। आहाज
ने यहोवा, परमेश्वर को बहुत क्रोधित कर दिया जिसकी आज्ञा का
पालन उसके पूर्वज करते थे।

26 आहाज ने आरम्भ से अन्त तक जो कुछ अन्य किया वह
यहूदा औऱ इस्राएल के राजाओं के इतिहास नामक पुस्तक में लिखा
है। 27 आहाज मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया।

लोगों ने आहाज को यरूशलेम नगर में दफनाया। किन्तु उन्होंने आहाज को उसी कब्रिस्तान में नहीं दफनाया जहाँ इस्राएल के राजा दफनाये गए थे। आहाज के सथान पर हिजकिय्याह नया राजा बना। हिजकिय्याह आहाज का पुत्र था।

29

यहूदा का राजा हिजकिय्याह

1 हिजकिय्याह जब पच्चीस वर्ष का था, राजा हुआ। उसने उनतीस
वर्ष तक यरूशलेम में शासन किया। उसकी माँ का नाम अबिय्याह
था। अबिय्याह जकर्याह की पुत्री थी। 2 हिजकिय्याह ने वही किया
जो यहोवा चाहता था कि वह करे। उसने अपने पूर्वज दाऊद की
तरह, जो उचित था, वही किया।
3 हिजकिय्याह ने यहोवा के मन्दिर के दरवाजों को जोड़ा और
उन्हें मजबूत किया। हिजकिय्याह ने मन्दिर को फिर खोला। उसने
राजा होने के बाद, वर्ष के पहले महीन में यह किया। 4-5 हिजकिय्याह
ने याजकों और लेवीवंशियों को एक बैठक में एक साथ बिठाया।
वह मन्दिर के पूर्व की दिशा में खुले आँगन में उनके साथ बैठक में
शामिल हुआ। हिजकिय्याह ने उनसे कहा, "मेरी सुनों, लेवीवंशियों!
पवित्र सेवा के लिये अपने को तैयार करो। यहोवा, परमेश्वर के
मन्दिर को पवित्र सेवा के लिये तैयार करो। वह परमेश्वर है जिसकी
आज्ञा का पालन तुम्हारे पूर्वजों ने किया। मन्दिर से उन चीज़ों को
बाहर करो जो वहाँ के लिये नहीं हैं। वे चीज़ें मन्दिर को शुद्ध नहीं
बनाती। 6 हमारे पूर्वजों ने यहोवा को छोड़ा और यहोवा के भवन
से मुख मोड़ लिया। 7 उन्होंने मन्दिर के स्वागत—कक्ष के दरवाजे
को बन्द कर दिया और दीपकों को बुझा दिया। उन्होंने सुगन्धि का
जलाना और इस्राएल के परमेश्वर को पवित्र स्थान में होमबलि भेंट
करना बन्द कर दिया। 8 इसलिये, यहोवा यहूदा और यरूशलेम के
लोगों पर बहुत क्रोधित हुआ। यहोवा ने उन्हें दण्ड दिया। अन्य लोग
भयभीत हुए और दु:खी हुए जब उन्होंने देखा कि यहोवा ने यहूदा

और यरूशलेम के लोगों के साथ क्या किया। अन्य लोगों ने यहूदा
के लोंगों के लिये लज्जा और घृणा से अपने सिर झुका लिये। तुम
जानते हो कि यह सब सच है। तुम अपनी आँखों से इसे देख सकते
हो। 9 यही कारण है कि हमारे पूर्वज युद्ध में मारे गये। हमारे पुत्र,
पुत्रियाँ औऱ पत्नियाँ बन्दी बनाई गई। 10 इसलिये मैं हिजकिय्याह
ने यह निश्चय किया है कि मैं यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के साथ
एक वाचा करुँ। तब वह हम लोगों पर आगे क्रोधित नहीं होगा।
11 इसलिए मेरे पुत्रों, तुम लोग सुस्त न हो या और अधिक समय
नष्ट न करो। यहोवा ने तुम लोगों को अपनी सेवा के लिये चुना है।
तुम्हें उसकी सेवा करनी चाहिए और उसके लिये सुगन्धि जलानी
चाहिए।”

12-14 उन लेवीवंशियों की यह सूची है जो वहाँ थे और जिन्होंने
कार्य आरम्भ किया।

कहाती परिवार के अमासै का पुत्र महत और अजर्याह का पुत्र योएल थे।
मरारीत परिवार के अब्दी का पुत्र कीश और यहल्लेलेल का पुत्र अजर्याह थे।
गेर्शोनी परिवार से जिम्मा का पुत्र योआह और योआह का पुत्र एदेन थे।
एलीसापान के वंशजों में शिम्री औऱ यूएल थे।
आसाप के वंशजों में जकर्याह और मत्तन्याह थे।
हेमान के वंशजों में से यहूएल और शिमी थे।
यदूतून के वंशजों में से शमायाह और उज्जीएल थे।

15 तब इन लेवीवंशियों ने अपने भाइयों को इकट्ठा किया और
मन्दिर में पवित्र सेवा करने के लिये अपने को तैयार किया। उन्होंने
राजा के उन आदेशों का पालन किया जो यहोवा के पास से आये थे।
वे यहोवा के मन्दिर में उसे स्वच्छ करने गए। 16 याजक यहोवा के

मन्दिर के भीतरी भाग में उसे स्वच्छ करने गए। उन्होंने सभी अशुद्ध
चीज़ों को बाहर निकाला जिन्हें उन्होंने मन्दिर में पाया। वे अशुद्ध
चीज़ों को यहोवा के मन्दिर के आँगन में ले आए। तब लेवीवंशी
अशुद्ध चीज़ों को किद्रोन की घाटी में ले गए। 17 पहले महीने के
पहले दिन लेवीवंशी अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार करने
लगे। महीने के आठवें दिन लेवीवंशी यहोवा के मन्दिर के द्वार—
मण्डप में आए। आठ दिन और, वे यहोवा के मन्दिर को पवित्र
उपयोग के लिये स्वच्छ करते रहे। उन्होंने पहले महीन के सोलहवें
दिन यह काम पूरा किया।

18 तब वे राजा हिजकिय्याह के पास गए। उन्होंने उससे कहा,
"राजा हिजकिय्याह, हम लोगों ने यहोवा के पूरे मन्दिर और भेंट
जलाने के लिये वेदी को स्वच्छ कर दिया। हम लोगों ने रोटी को
पक्तियों में रखने की मेज और उस के लिये उपयोग में आने वाली
सभी चीज़ों को स्वच्छ कर दिया। 19 उन दिनों जब आहाज राजा
था उसने परमेश्वर के प्रति विरोध किया। उसने बहुत सी चीज़ें फेंक
दी थीं। जो मन्दिर में थीं। किन्तु हम लोगों ने फिर उन चीज़ों को
रख दिया है और उन्हें पवित्र कार्य के लिये तैयार कर दिया है। वे
अब यहोवा की वेदी के सामने हैं।"

20 राजा हिजकिय्याह ने नगर अधिकारियों को इकट्ठा किया और
अगली सुबह वह यहोवा के मन्दिर गया। 21 वे सात बैल, सात मेढ़े,
सात मेमने और सात छोटे बकरे लाए। वे जानवर यहूदा के राज्य
की पापबलि, पवित्र स्थान को शुद्ध करने और यहूदा के लोगों के
लिये थे। राजा हिजकिय्याह ने उन याजकों को जो हारून के वंशज
थे, आदेश दिया कि वे उन जानवरों को यहोवा की वेदी पर चढ़ाऐं।
22 इसलिये याजकों ने बैलों को मार डाला और उनका खून रख
लिया। तब उन्होंने बैलों का खून वेदी पर छिड़का। तब याजकों ने
मेढ़ों को मारा और वेदी पर मेंढ़ों का खून छिड़का। तब याजकों ने
मेमनों को मारा और उनका खून वेदी पर छिड़का। 23-24 तब याजक
बकरों को राजा और एक साथ इकट्ठे लोगों के सामने लाए। बकरे

पापबलि थे। याजकों ने अपने हाथ बकरों पर रखे और उन्हें मारा। याजकों ने बकरों के खून से वेदी पर पापबलि चढ़ाई। उन्होंने यह इसलिये किया कि यहोवा इस्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। राजा ने कहा कि होमबलि और पापबलि इस्राएल के सभी लोगों के लिये होंगी।

25 राजा हिजकिय्याह ने लेवीवंशियों को यहोवा के मन्दिर में
मंजीरों, तम्बूरों और वीणा के साथ रखा जैसा दाऊद, राजा का दृष्टा
गाद और नातान नबी ने आदेश दिया था। यह आदेश नबियों द्वारा
यहोवा के यहाँ से आया था। 26 इस प्रकार लेवीवंशी, दाऊद के
गीत के वाद्यों के साथ और याजक अपनी तुरहियों के साथ खड़े
हुए। 27 तब हिजकिय्याह ने होमबलि की बलि वेदी पर चढ़ाने के
लिये आदेश दिया। जब होमबलि देना आरम्भ हुआ, यहोवा के लिये
गायन भी आरम्भ हुआ। तुरहियाँ बजाई गई और इस्राएल के राजा
दाऊद के वाद्यायन्त्र बजे। 28 सारी सभा ने दण्डवत किया, गायकों
ने गाया और तुरही वादकों ने अपनी तुरहियाँ तब तक बजाई जब
तक होमबलि का चढ़ाया जाना पूरा नहीं हुआ।

29 बलिदानों के पूरे होने के बाद राजा हिजकिय्याह और उसके
साथ के सभी लोग झुके और उन्होंने उपासना की। 30 राजा
हिजकिय्याह और उसके अधिकारियों ने लेवीवंशियों को यहोवा
की स्तुति का आदेश दिया। उन्होंने उन गीतों को गाया जिन्हें दाऊद
और दृष्टा आसाप ने लिखा था। उन्होंने यहोवा की स्तुति की और
प्रसन्न हुए। वे सभी झुके और उन्होंने यहोवा की उपासना की।
31 हिजकिय्याह ने कहा, “यहूदा के लोगों, अब तुम लोग स्वयं को
यहोवा को अर्पित कर चुके हो। निकट आओ, बलि और धन्यवाद
की भेंट यहोवा के मन्दिर में लाओ।” तब लोग बलि और धन्यवाद
की भेंट लाये। कोई व्यक्ति, जो चाहता था, वह होमबलि भी लाया।
32 सभा द्वारा मन्दिर में लाई गई होमबलि ये हैं: सत्तर बैल, सौ मेढ़े
और दो सौ मेमने। ये सभी जानवर यहोवा को होमबलि के रुप में
बलि किये गये। 33 यहोवा के लिये पवित्र भेटें छ: सौ बैल और

तीन हज़ार भेंड़—बकरे थे। 34 किन्तु वहाँ पर्याप्त याजक नहीं थे
जो होमबलि के लिये जानवारों की खाल उतार सकें और सभी
जानवरों को काट सकें। इसलिये उनके सम्बन्धी लेवीवंशियों ने
उनकी सहायता तब तक की जब तक काम पूरा न हुआ और
जब तक दूसरे याजक अपने को पवित्र सेवा के लिये तैयार न कर
सके। लेवीवंशी यहोवा की सेवा के लिये अपने को तैयार करने
में अधिक दृढ़ थे। वे याजकों की अपेक्षा अधिक दृढ़ थे। 35 वहाँ
अनेक होमबिल, मेलबलि की चर्बो और पेय भेंट चढ़ीं। इस प्रकार
यहोवा के मन्दिर में सेवा फिर आरम्भ हुई। 36 हिजकिय्याह और
सभी लोग उन चीज़ों के लिये प्रसन्न थे जिन्हें यहोवा ने अपने लोगों
के लिये बनाई और वे प्रसन्न थे कि उन्होंने उन्हें इतनी शीघ्रता से
किया!

30

हिजकिय्याह फसहपर्व मनाता है

1 हिजकिय्याह ने इस्राएल और यहूदा के सभी लोगों को सन्देश
भेजा। उसने एप्रैम और मनश्शे के लोगों को भी पत्र लिखा।
हिजकिय्याह ने उन सभी लोगों को यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर
में आने के लिये निमन्त्रित किया जिससे वे सभी फसहपर्व यहोवा,
इस्राएल के परमेश्वर के लिये मना सकें। 2 हिजकिय्याह ने सभी
अधिकारियों और यरूशलेम की सभा से यह सलाह की कि फसह
पर्व दूसरे महीने मनें मनाया जाये। 3 वे फसह पर्व को नियमित समय
से न मना सके। क्यों क्योंकि याजक पर्याप्त संख्या में पवित्र सेवा
के लिये अपने को तैयार न कर सके और दूसरा कारण यह था
कि लोग यरूशलेम में इकट्ठे नहीं हो सके थे। 4 इस सुझाव ने
राजा हिजकिय्याह और पूरी सभा को सन्तुष्ट किया। 5 इसलिये
उन्होंने इस्राएल में बेर्शेबा नगर से लेकर लगातार दान नगर तक हर
एक स्थान पर घोषणा की। उन्होंने लोगों से कहा कि वे यरूशलेम
में यहोवा, इस्राएल के परमेश्वर के लिये फसह पर्व मनाने आऐं।
इस्राएल के बहुत बड़े समूह ने बहुत समय से फसह पर्व उस प्रकार

नहीं मनाया था, जिस प्रकार मूसा के नियमों ने इसे मनाने को कहा
था। 6 इसलिये दूत राजा का पत्र पूरे इस्राएल औऱ यहूदा में ले गए।
उन पत्रों में यह लिखा था:

“इस्राएल की सन्तानों, इब्राहीम, इसहाक और इस्राएल
(याकूब), जिस यहोवा, परमेश्वर की आज्ञा मानते थे उसके पास
लौटो। तब यहोवा तुम लोगों के पास वापस आयेगा जो अश्शूर
के राजा से बच गए हैं और अभी तक जीवित हैं। 7 अपने पिता
और भाइयों की तरह न बनो। यहोवा उनका परमेश्वर था, किन्तु
वे उसके विरुद्ध हो गए। इसलिये यहोवा ने उनके प्रति लोगों
के हृदय में घृणा पैदा की और उनके बारे में बुरा कहलवाया।
तुम स्वयं अपनी आँखों से देख सकते हो कि यह सत्य है।
8 अपने पूर्वजों की तरह हठी न बनो। अपितु सच्चे हृदय से यहोवा
की आज्ञा मानो। सर्वाधिक पवित्र स्थान पर आओ। यहोवा ने
सर्वाधिक पवित्र स्थान को सदैव के लिये पवित्र बनाया है। अपने
यहोवा, परमेश्वर की सेवा करो। तब यहोवा का डरावना क्रोध
तुम पर से हट जाएगा। 9 यदि तुम लौटोगे और यहोवा की आज्ञा
मानोगे तब तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे उन लोगों की कृपा पाएंगे
जिन्होंने उन्हें बन्दी बनाया है और तुम्हारे सम्बन्धी और बच्चे
इस देश में लौटेंगे। यहोवा, तुम्हारा परमेश्वर कृपालु है। यदि तुम
उसके पास लौटोगे तो वह तुमसे दूर नहीं जायेगा।”

10 दूत एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्रों के सभी नगरों में गए। वे
लगातार पूरे जबूलून देश में गए। किन्तु लोगों ने दूतों की हँसी
उड़ाई औऱ उनका मजाक उड़ाया। 11 किन्तु आशेर, मनश्शे और
जबूलून देश के कुछ लोग विनम्र हुए और यरूशलेम गए। 12 यहूदा
में परमेश्वर की शक्ति ने लोगों को संगठित किया ताकि वे राजा
हिजकिय्याह औऱ उसके अधिकारियों की आज्ञा का पालन करें।
इस तरह उन्होंने यहोवा की आज्ञा का पालन किया।

13 बहुत से लोग एक साथ यरूशलेम, दूसरे महीने में अखमीरी
रोटी का उत्सव मनाने आए। यह बहुत बड़ी भीड़ थी। 14 उन लोगों
ने यरूशलेम में असत्य देवताओं की वेदियों को हटा दिया। उन्होंने
असत्य देवताओं के लिये सुगन्धि भेंट की वेदियों को भी हटा दिया।
उन्होंने उन वेदियों को किद्रोन की घाटी में फेंक दिया। 15 तब उन्होंने
फसह पर्व के मेमने को दूसरे महीने के चौदहवें दिन मारा। याजक
और लेवीवंशी लज्जित हुए। उन्होंने अपने को पवित्र सेवा के लिये
तैयार किया। याजक और लेवीवंशी होमबलि यहोवा के मन्दिर
में ले आए। 16 मन्दिर में अपने लिए निर्धारित स्थान पर वे वैसे
ही बैठे जैसा परमेश्वर के व्यक्ति मूसा के नियम में कहा गया था।
लेवीवंशियों ने याजकों को खून दिया। तब याजकों ने खून को वेदी
पर छिड़का। 17 उस समूह में बहुत से लोग ऐसे थे जिन्होंने अपने
को पवित्र सेवा के लिये तैयार नहीं किया था अत: वे फसह पर्व
के मेमने को मारने की स्वीकृति नहीं पा सके। यही कारण था कि
लेवीवंशी उन सभी लोगों के लिए फसह पर्व के मेमने को मारने के
उत्तरदायी थे जो शुद्ध नहीं थे। लेवीवंशी ने हर एक मेमने को यहोवा
के लिये पवित्र बनाया।

18-19 एप्रैम, मनश्शे, इस्साकार और जबूलून के बहुत से लोग
फसह पर्व उत्सव के लिये अपने को ठीक प्रकार से तैयार नहीं
किया था। उन्होंने फसह पर्व मूसा के नियम के अनुसार ठीक ढंग
से नहीं मनाया। किन्तु हिजकिय्याह ने उन लोगों के लिए प्रार्थना
की। इसलिये हिजकिय्याह ने यह प्रार्थना की, "यहोवा, परमेश्वर तू
अच्छा है। ये लोग तेरी उपासना ठीक ढंग से करना चाहते थे,
किन्तु वे अपने को नियम के अनुसार शुद्ध न कर सके, कृपया उन
लोगों को क्षमा कर। तू परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का पालन हमारे
पूर्वजों ने किया। यदि किसी ने सर्वाधिक पवित्र स्थान के नियम
के अनुसार अपने को शुद्ध न किया तो भी क्षमा कर।" 20 यहोवा ने
राजा हिजकिय्याह की प्रार्थना सुनी। यहोवा ने लोगों को क्षमा कर
दिया। 21 इस्राएल की सन्तानों ने यरूशलेम में अखमीरी रोटी का

उत्सव सात दिन तक मनाया। वे बहुत प्रसन्न थे। लेवीवंशी और
याजकों ने अपनी पूरी शक्ति से हर एक दिन यहोवा की स्तुति की।
22 राजा हिजकिय्याह ने उन सभी लेवीवंशियों को उत्साहित किया
जो अच्छी तरह समझ गये थे कि यहोवा की सेवा कैसे की जाती
है। लोगों ने सात दिन तक पर्व मनाया और मेलबलि चढ़ाई। उन्होंने
अपने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर को धन्यवाद दिया और उसकी
स्तुति की।

23 सभी लोग सात दिन और ठहरने को सहमत हो गए। वे
फसहपर्व मनाते समय सात दिन तक बड़े प्रसन्न रहे। 24 यहूदा के
राजा हिजकिय्याह ने उस सभा को एक हज़ार बैल तथा सात हज़ार
भेड़ें मारने और खाने के लिये दिये। प्रमुखों ने सभा को एक हज़ार
बैल और दस हज़ार भेड़ें दीं। बहुत से याजकों ने पवित्र सेवा के लिये
अपने को तैयार किया। 25 यहूदा की पूरी सभा, याजक, लेवीवंशी,
इस्राएल से आने वाली पूरी सभा और वे यात्री जो इस्राएल से आए
थे तथा यहूदा पहुँच गए थे, सभी लोग अत्यन्त प्रसन्न थे। 26 इस
प्रकार यरूशलेम में बहुत आनन्द था। इस पर्व के समान कोई भी
पर्व इस्राएल के राजा, दाऊद के पुत्र सुलैमान के समय के बाद से
नहीं हुआ था। 27 याजक और लेवीवंशी खड़े हुए और यहोवा से
लोगों को आशीर्वाद देने को कहा। परमेश्वर ने उनकी सुनी। उनकी
प्रार्थना स्वर्ग में यहोवा के पवित्र निवास तक पहुँची।

31

राजा हिजकिय्याह सुधार करता है

1 फसह पर्व का उत्सव पूरा हुआ। इस्राएल के जो लोग फसह
पर्व के लिये यरूशलेम में थे, वे यहूदा के नगरों को चले गए। तब
उन्होंने पत्थर की उन मूर्तियों को ध्वस्त किया जो उन नगरों में थी।
उन पत्थर की मूर्तियों का पूजन असत्य देवताओं के रूप में होता
था। उन लोगों ने अशेरा के स्तम्भों को भी काट डाला और उन्होंने

उन उच्चस्थानों और वेदियों को भी तोड़ा डाला जो बिन्यामीन और यहूदा के पूरे देशों में थे। लोगों ने एप्रैम और मनश्शे के क्षेत्र में भी वही किया। लोगों ने यह तब तक किया जब तक उन्होंने असत्य देवाताओं की पूजा की सभी चीज़ों को नष्ट नहीं कर दिया। तब सभी इस्राएली अपने नगरों को घर लौट गए।

2 राजा हिजकिय्याह ने फिर याजकों और लेवीवंशियों को समूहों में बाँटा और प्रत्येक समूह को अपना विशेष कार्य करना होता था। अत: राजा हिजकिय्याह ने उन समूहों को अपना कार्य फिर से आरम्भ करने को कहा। अत: याजकों और लेवीवंशियों का फिर से होमबलि और मेलबलि चढ़ाने का काम था। उन का काम मन्दिर में सेवा करना, गाना और यहोवा के भवन के द्वार पर परमेश्वर की
स्तुति करना था। 3 हिजकिय्याह ने अपने पशुओं में से कुछ को
होमबलि के लिये दिया। ये पशु प्रतिदिन प्रात: और सन्ध्या को होमबलि के लिये प्रयोग में आते थे। ये पशु सब्त के दिनों में और नवचन्द्र के समय और अन्य विशेष उत्सवों पर दी जाती थीं। यह वैसे ही किया जाता था जैसा यहोवा की व्यवस्था में लिखा है।

4 हिजकिय्याह ने यरूशलेम में रहने वाले लोगों को आदेश दिया कि जो हिस्सा याजकों और लेवीवंशियों का है वह उन्हें दें। तभी याजक और लेवीवंशी पूरे समय अपने को यहोवा के नियम के
अनुसार दे सकते हैं। 5 देश के चारों ओर के लोगों ने इस आदेश
के बारे में सुना। अत: इस्राएल के लोगों ने अपने अन्न, अंगूर, तेल, शहद और जो कुछ भी वे अपने खेतों में उगाते थे उन सभी फसलों का पहला भाग दिया। वे स्वेच्छा से इन सभी चीजों का दसवाँ भाग
लाए। 6 इस्राएल और यहूदा के लोग जो यहूदा के नगरों में रहते
थे, अपने पशुओं और भेड़ों का दसवाँ भाग भी लाए। वे उन चीज़ों का दसवाँ भाग भी लाए जो उस विशेष स्थान में रखी जाती थी जो केवल यहोवा के लिये था। वे उन सभी चीज़ों को अपने यहोवा, परमेश्वर के लिय ले कर आए। उन्होंने उन सभी चीज़ों को ढेरों में रखा।

7 लोगों ने तीसरे महीने (मई/जून) में अपनी चीज़ों के संग्रह को
लाना आरम्भ किया और उन्होंने संग्रह का लाना सातवें महीने
(सित्मबर/अक्टूबर) में पूरा किया। 8 जब हिजकिय्याह और प्रमुख
आए तो उन्होंने संग्रह की गई चीज़ों के ढेरों को देखा। उन्होंने यहोवा
की स्तुति की और इस्राएल के लोगों अर्थात् यहोवा के लोगों की
प्रशंसा की।

9 तब हिजकिय्याह ने याजकों और लेवीवंशियों से ढेरों के
सम्बन्ध में पूछा। 10 सादोक परिवार के मुख्य याजक अजर्याह ने
हिजकिय्याह से कहा, "क्योंकि लोगों ने भेंटों को यहोवा के मन्दिर
में लाना आरम्भ कर दिया है अत: हम लोगों के पास खाने के लिये
बहुत अधिक है। हम लोगों ने पेट भर खाया और अभी तक हम
लोगों के पास बहुत बचा है! यहोवा ने अपने लोगों को सच में
आशीष दी है। इसलिये हम लोगों के पास यह सब बचा है।"

11 तब हिजकिय्याह ने याजकों को आदेश दिया कि वे यहोवा
के मन्दिर में भण्डार गृह तैयार रखें। अत: यह किया गया। 12 तब
याजक भेंटे दशमांश और अन्य वस्तुएं लाए जो केवल यहोवा को दी
जानी थीं। वे सभी संग्रह की गई चीज़ें मन्दिर के भण्डारगृहों में रख
दी गई। लेवीवंशी कोनन्याह सभी संग्रह की गई चीजों का अधीक्षक
था। शिमी उन चीज़ों का उपाधीक्षक था। शिमी कोनन्याह का भाई
था। 13 कोनन्याह और उसका भाई इन व्यक्तियों के निरीक्षक थे:
अहीएल, अजज्याह, नहत, असाहेल, यरीमेत, योजाबाद, एलीएल,
यिस्मक्याह, महत और बनायाह। राजा हिजकिय्याह और यहोवा
के मन्दिर का अधीक्षक अधिकारी अजर्याह ने उन व्यक्तियों को
चुना।

14 कोरे उन भेंटों का अधीक्षक था जिन्हें लोग स्वेच्छा से यहोवा
को चढ़ाते थे। वह उन संग्रहों को देने का उत्तरदायी था जो यहोवा
को चढ़ाये जाते थे और वह उन उपहारों को वितरित करने का
उत्तरदायी था जो यहोवा के लिये पवित्र बनाई जाती थीं। कोरे पूर्वी
द्वार का द्वारपाल था। उसके पिता का नाम यिम्ना था जो लेवीवंशी
था। 15 एदेन, मिन्यामीन, येशू, शमायाह, अमर्याह और शकन्याह कोरे

की सहायता करते थे। वे लोग ईमानदारी से उन नगरों में सेवा करते थे जहाँ याजक रहते थे। वे संग्रह की गई चीज़ों को हर एक याजकों के समूह में उनके सम्बन्धियों को देते थे। वे वही चीज़ें, अधिक या कम महत्व के हर व्यक्ति को देते थे।

16 ये लोग संग्रह की हुई चीज़ों को तीन वर्ष के लड़के और उससे
अधिक उम्र के उन लड़कों को भी देते थे जिनका नाम लेवीवंश
के इतिहास में होता था। इन सभी पुरुषों को यहोवा के मन्दिर में
अपनी नित्य सेवाओं को करने के लिये जाना होता था जिनको
करना उनका उत्तरदायित्व था। लेवीवंशियों के हर एक समूह का
अपना उत्तरदायित्व था। 17 याजकों को संग्रह का उनका हिस्सा
दिया जाता था। यह परिवार के क्रम से वैसे ही किया जाता था
जैसे वे अपने परिवार इतिहास में लिखे रहते थे। बीस वर्ष या उससे
अधिक आयु के लेवीवंशियों को संग्रह का उनका हिस्सा दिया
जाता था। यह उनके उत्तरदायित्व और वर्ग के अनुसार किया जाता
था। 18 लेविवंशियों के बच्चे, पत्नियाँ, पुत्र तथा पुत्रियाँ भी संग्रह का
अपना हिस्सा पाते थे। यह उन सभी लेवीवंशियों के लिये किया
जाता था जो परिवार के इतिहास में अंकित थे। यह इसलिये हुआ
कि लेवीवंशी अपने को पवित्र और सेवा के लिये तैयार रखने में
दृढ़ विश्वास रखते थे।

19 याजक हारून के कुछ वंशजों के पास कुछ कृषि योग्य खेत नगर के समीप वहाँ थे जहाँ लेवीवंशी रहते थे और हारून के वंशजों में से कुछ नगरों में भी रहते थे। उन नगरों में से हर एक में हारून के इन वंशजों को संग्रह का हिस्सा देने के लिये व्यक्ति नामांकन द्वारा चुने जाते थे। पुरुष तथा वे सभी जिनका नाम लेवीवंश के इतिहास में था सभी संग्रह का हिस्सा पाते थे।

20 इस प्रकार राजा हिजकिय्याह ने पूरे यहूदा में वे सब अच्छे
कार्य किये। उसने वही किया जो यहोवा, उसके परमेश्वर की दृष्टि में
अच्छा, ठीक और विश्वास योग्य था। 21 उसने जो भी कार्य परमेश्वर
के मन्दिर की सेवा में, नियमों व आज्ञाओं का पालन करने में और

अपने परमेश्वर का अनुसरण करने में किये उसमें उसे सफलता मिली। हिजकिय्याह ने ये सभी कार्य अपने पूरे हृदय से किया।

32

अराम का राजा हिजकिय्याह को परेशान करने का प्रयत्न करता है

1 हिजकिय्याह ने ये सब कार्य जो विश्वासपूर्वक पूरे किये। अश्शूर
का राजा सन्हेरीब यहूदा देश पर आक्रमण करने आया। सन्हेरीब
और उसकी सेना ने किले के बाहर डेरा डाला। उसने यह इसलिये
किया कि वह नगरों को जीतने की योजना बना सके। सन्हेरीब इन
नगरों को अपने लिये जीतना चाहता था। 2 हिजकिय्याह जानता
था कि वह यरूशलेम, इस पर आक्रमण करने आया है। 3 तब
हिजकिय्याह ने अपने अधिकारियों और सेना के अधिकरियों से
सलाह ली। वे एकमत हो गए कि नगर के बाहर के सोतों का पानी
रोक दिया जाये। उन अधिकारियों और सेना के अधिकारियों ने
हिजकिय्याह की सहायता की। 4 बहुत से लोग एक साथ आए
और उन्होंने सभी सोतों और नालों को जो देश के बीच से होकर
बहते थे, रोक दिया। उन्होंने कहा, "अश्शूर के राजा को यहाँ आने
पर पर्याप्त पानी नहीं मिलेगा!" 5 हिजकिय्याह ने यरूशलेम को
पहले से अधिक मजबूत बनाया। यह उसने इस प्रकार किया:
उसने दीवार के टूटे भागों को फिर बनवाया। उसने दीवारों पर
मीनारें बनाई। उसने पहली दीवार के बाहर दूसरी दीवार बनाई।
उसने फिर पुराने यरूशलेम के पूर्व की ओर के स्थानों को मजबूत
किया। उसने अनेकों हथियार और ढालें बनवाई। 6-7 हिजकिय्याह
ने युद्ध के अधिकारियों को लोगों का अधीक्षक होने के लिये चुना।
वह इन अधिकारियों से नगर द्वार के बाहर खुले स्थान में मिला।
हिजकिय्याह ने उन अधिकारियों से सलाह की और उन्हें उत्साहित
किया। उसने कहा, "दृढ़ और साहसी बनो। अश्शूर के राजा या
उसके साथ की विशाल सेना से मत डरना, न ही उससे परेशान
होना। अश्शूर के राजा के पास जो शक्ति है उससे भी बड़ी शक्ति

हम लोगों के साथ है! 8 अश्शूर के राजा के पास केवल व्यक्ति हैं।
किन्तु हम लोगों के साथ यहोवा, अपना परमेश्वर है। हमारा परमेश्वर
हमारी सहायता करेगा। वह हमारा युद्ध स्वयं लड़ेगा।" इस प्रकार
यहूदा के राजा हिजकिय्याह ने लोगों को उत्साहित किया और उन्हें
पहले से अधिक शक्तिशाली होने का अनुभव कराया।

9 अश्शूर के राजा सन्हेरीब और उसकी सारी सेना लाकीश नगर
के पास डेरा डाले पड़ी थी। ताकि वे इसे हरा सकें तब अश्शूर के
राजा सन्हेरीब ने यरूशलेम में यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास
और यहूदा के सभी लोगों के पास अपने सेवक भेजे। सन्हेरीब के
सेवक हिजकिय्याह और यरूशलेम के सभी लोगों के लिये एक
सन्देश ले गए।

10 उन्होंने कहा, "अश्शूर का राजा सन्हेरीब यह कहता है:
'तुम किसमें विश्वास करते हो जो तुम्हें यरूशलेम में युद्ध की
स्थिति में ठहरना सिखाता है 11 हिजकिय्याह तुम्हें मूर्ख बना रहा
है। तुम्हें यरूशलेम में ठहरे रखने के लिये धोखा दिया जा रहा
है। इस प्रकार तुम भूख—प्यास से मर जाओगे। हिजकिय्याह
तुमसे कहता है, "यहोवा, हमारा परमेश्वर हमें अश्शूर के राजा से
बचायेगा।" 12 हिजकिय्याह ने स्वयं यहोवा के उच्चस्थानों और
वेदियों को हटाया है। उसने यहूदा और इस्राएल के तुम लोगों
से कहा कि तुम लोगों को केवल एक वेदी पर उपासना करनी
और सुगन्धि चढ़ानी चाहिए। 13 निश्चय ही, तुम जानते हो कि मेरे
पूर्वजों और मैंने अन्य देशों के लोगों के साथ क्या किया है अन्य
देशों के देवता अपने लोगों को नहीं बचा सके। वे देवता मुझे
उनके लोगों को नष्ट करने से न रोक सके। 14 मेरे पूर्वजों ने उन
देशों को नष्ट किया। कोई भी ऐसा देवता नहीं जो मुझसे अपने
लोगों को नष्ट होने से बचा ले। फिर भी तुम सोचते हो कि तुम्हारा
देवता तुम्हें मुझसे बचा लेगा 15 हिजकिय्याह को तुम्हें मूर्ख बनाने

और धोखा देने मत दो। उस पर विश्वास न करो क्योंकि किसी राष्ट्र या राज्य का कोई देवता कभी हमसे या हमारे पूर्वजों से अपने लोगों को बचाने में समर्थ नहीं हुआ है। इसलिये यह मत सोचो कि तुम्हारा देवता मुझे तुमको नष्ट करने से रोक लेगा।' "

16 अश्शूर के राजा के सेवकों ने इससे भी बुरी बातें यहोवा
परमेश्वर तथा परमेश्वर के सेवक हिजकिय्याह के विरुद्ध कहीं हैं।
17 अश्शूर के राजा ने ऐसे पत्र भी लिखे जो इस्राएल के यहोवा
परमेश्वर का अपमान करते थे। अश्शूर के राजा ने ऐसे पत्र भी लिखे
जो इस्राएल के यहोवा परमेश्वर का अपमान करते थे। अश्शूर के
राजा ने उन पत्रों में जो कुछ लिखा था वह यह है: "अन्य राज्यों के
देवता मुझसे नष्ट होने से अपने लोगों को न बचा सके। उसी प्रकार
हिजकिय्याह का परमेश्वर अपने लोगों को मेरे द्वारा नष्ट किये जाने
से नहीं रोक सकता।" 18 तब अश्शूर के राजा के सेवक यरूशलेम
के उन लोगों पर जोर से चिल्लाये जो नगर की दीवार पर थे। उन
सेवकों ने उस समय हिब्रू भाषा का प्रयोग किया जब वे दीवार
पर के लोगों के प्रति चिल्लाये। अश्शूर के राजा के उन सेवकों ने
यह सब इसलिये किया कि यरूशलेम के लोग डर जायें। उन्होंने
वे बातें इसलिये कहीं कि यरूशलेम नगर पर अधिकार कर सकें।
19 उन सेवकों ने उन देवताओं के विरुद्ध बुरी बातें कहीं जिनकी
पूजा संसार के लोग करते थे। वे देवता सिर्फ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें
मनुष्यों ने अपने हाथ से बनाया है। इस प्रकार उन सेवकों ने वे ही
बुरी बातें यरूशलेम के परमेश्वर के विरुद्ध कहीं।

20 राजा हिजकिय्याह और आमोस के पुत्र यशायाह नबी ने इस
समस्या के बारे में प्रार्थना की। उन्होंने जोर से स्वर्ग को पुकारा।
21 तब यहोवा ने अश्शूर के राजा के खेमे में एक स्वर्गदूत को भेजा।
उस स्वर्गदूत ने अश्शूर की सेना के सब अधिकारियों, प्रमुखों और
सैनिकों को मार डाला। इसलिये अश्शूर का राजा अपने देश में अपने

घर लौट गया और उसके लोग उसकी वजह से बहुत लज्जित हुए।
वह अपने देवता के मन्दिर में गया और उसी के पुत्रों में से किसी ने
उसे वहीं तलवार से मार डाला। 22 इस प्रकार यहोवा ने हिजकिय्याह
और यरूशलेम के लोगों को अश्शूर के राजा सन्हेरीब और सभी
अन्य लोगों से बचाया। यहोवा ने हिजकिय्याह और यरूशलेम के
लोगों की देखभाल की। 23 बहुत से लोग यरूशलेम में यहोवा के
लिये भेंट लाए। वे यहूदा के राजा हिजकिय्याह के पास बहुमूल्य
चीज़ें ले आए। उस समय के बाद सभी राष्ट्रों ने हिजकिय्याह को
सम्मान दिया।

24 उन दिनों हिजकिय्याह बहुत बीमार पड़ा और मृत्यु के निकट
था। उसने यहोवा से प्रार्थना की। यहोवा हिजकिय्याह से बोला और
उसे एक चिन्ह दिया।* 25 किन्तु हिजकिय्याह का हृदय घमण्ड से
भर गया इसलिये उसने परमेश्वर की कृपा के लिये परमेश्वर को
धन्यवाद नहीं किया। यही कारण था कि परमेश्वर हिजकिय्याह
और यरूशलेम तथा यहूदा के लोगों पर क्रोधित हुआ। 26 किन्तु
हिजकिय्याह और यरूशलेम में रहने वाले लोगों ने अपने हृदय तथा
जीवन को बदल दिया। वे विनम्र हो गये और घमण्ड करना छोड़
दिया। इसलिये जब तक हिजकिय्याह जीवित रहा यहोवा का क्रोध
उस पर नहीं उतरा।

27 हिजकिय्याह को बहुत धन औऱ सम्मान प्राप्त था। उसने चाँदी,
सोने, कीमती रत्न, मसालें, ढालें और सभी प्रकार की चीज़ों के रखने
के लिये स्थान बनाए। 28 हिजकिय्याह के पास लोगों द्वारा भेजे गये
अन्न, नया दाखमधु और तेल के लिये भंडारण भवन थे। उसके पास
पशुओं के लिये पशुशालायें और भेड़ों के लिये भेड़शालायें थीं।
29 हिजकिय्याह ने बहुत से नगर भी बनाये और उसे अनेक पशुओं
के झुँड और भेड़ों के रेवड़ें मिलीं। परमेश्वर ने हिजकिय्याह को बहुत
अधिक धन दिया। 30 यह हिजकिय्याह ही था जिसने यरूशलेम में

---

* **32:24:** यहोवा … चिन्ह दिया देखें यशा. 38:1-8 हिजकिय्याह के विषय की कहानी और कैसे यहोवा ने हिजकिय्याह को पन्द्रह वर्ष और जीवित रहने दिया।

गिहोन सोते की ऊपरी जल धाराओं के उदगमों को रोका और उन जल धाराओं को दाऊद नगर के ठीक पश्चिम को बहाया और हिजकिय्याह उन सबमें सफल रहा जो कुछ उसने किया।
31 किसी समय बाबुल के प्रमुखों ने हिजकिय्याह के पास दूत भेजे। उन दूतों ने एक विचित्र दृश्य के विषय में पूछा जो राष्ट्रों में प्रकट हुआ था। जब वे आए तो परमेश्वर ने हिजकिय्याह को अकेले छोड़ दिया जिससे कि वह अपनी जाँच कर सके और वह सब कुछ जान सके जो हिजकिय्याह के हृदय में था।†
32 हिजकिय्याह का शेष इतिहास और कैसे उसने यहोवा को प्रेम किया, का विवरण आमोस के पुत्र यशायाह नबी के दर्शन ग्रन्थ और यहूदा और इस्राएल के राजाओं के इतिहास की पुस्तक
में मिलता है। 33 हिजकिय्याह मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफनाया गया। लोगों ने हिजकिय्याह को उस पहाड़ी पर दफनाया जहाँ दाऊद के पुत्रों की कब्रें हैं। जब वह मरा तो यहूदा के सभी लोगों ने तथा यरूशलेम के रहने वालों ने हिजकिय्याह को सम्मान दिया। हिजकिय्याह के स्थान पर मनश्शे नया राजा हुआ। मनश्शे हिजकिय्याह का पुत्र था।

33

यहूदा का राजा मनशशे

1 मनशशे जब यहूदा का राजा हुआ वह बारह वर्ष का था। वह
यरूशलेम में पचपन वर्ष तक राजा रहा। 2 मनशशे ने वे सब कार्य
किये जिन्हें यहोवा ने गलत कहा था। उसने अन्य राष्ट्रों के भयंकर और पापपूर्ण तरीकों का अनुसरण किया। यहोवा ने उन राष्ट्रों को इस्राएल के लोगों के सामने बाहर निकल जाने के लिये विवश
किया था। 3 मनशशे ने फिर उन उच्च स्थानों को बनाया जिन्हें उसके पिता हिजकिय्याह ने तोड़ गिराया था। मनशशे ने बाल देवताओं की वेदियाँ बनाई और अशेरा—स्तम्भ खड़े किये। वह नक्षत्र—समूह

† **32:31:** हिजकिय्याह के हृदय में देखें 2 राजा 20:12-19

को प्रणाम करता था तथा उन्हें पूजता था। 4 मनश्शे ने यहोवा के
मन्दिर में असत्य देवताओं के लिये वेदियाँ बनाई। यहोवा ने मन्दिर
के बारे में कहा था, "मेरा नाम यरूशलेम में सदैव रहेगा।" 5 मनश्शे
ने सभी नक्षत्र—समूहों के लिये यहोवा के मन्दिर के दोनों आँगनों में
वेदियाँ बनाई। 6 मनश्शे ने अपने बच्चों को भी बलि के लिये हिन्नोम
की घाटी में जलाया। मनश्शे ने शान्तिपाठ, दैवीकरण और भविष्य
कथन के रूप में जादू का उपयोग किया। उसने ओझाओं और भूत
सिद्धि करने वालों के साथ बातें कीं। मनशशे ने यहोवा की दृष्टि में
बहुत पाप किया। मनशशे के पापों ने यहोवा को क्रोधित किया।
7 उसने एक देवता की मूर्ति बनाई और उसे परमेश्वर के मन्दिर में
रखा। परमेश्वर ने दाऊद और उसके पुत्र सुलैमान से मन्दिर के बारे
में कहा था, "मैं इस भवन तथा यरूशलेम में अपना नाम सदा के
लिये अंकित करता हूँ। मैंने यरूशलेम को इस्राएल के सभी परिवार
समूहों में से चुना। 8 मैं फिर इस्राएलियों को उस भूमि से बाहर नहीं
करूँगा जिसे मैंने उनके पूर्वजों को देने के लिये चुना। किन्तु उन्हें
उन नियमों का पालन करना चाहिए जिनका आदेश मैंने दिया है।
इस्राएल के लोगों को उन सभी विधियों, नियमों और आदेशों का
पालन करना चाहिए जिन्हें मैंने मूसा को उन्हें देने के लिये दिया।"

9 मनशशे ने यहूदा के लोगों और यरूशलेम में रहने वाले लोगों
को पाप करने के लिये उत्साहित किया। उसने उन राष्ट्रों से भी बड़ा
पाप किया जिन्हें यहोवा ने नष्ट किया था और जो इस्राएलियों से
पहले उस प्रदेश में थे!

10 यहोवा ने मनश्शे और उसके लोगों से बातचीत की। किन्तु
उन्होंने सुनने से इन्कार कर दिया। 11 इसलिये यहोवा ने यहूदा पर
आक्रमण करने के लिये अश्शूर के राजा के सेनापतियों को वहाँ
पहुँचाया। इन सेनापतियों ने मनश्शे को पकड़ लिया और उसे बन्दी
बना लिया। उन्होंने उसको बेड़ियाँ पहना दीं और उसके हाथों में
पीतल की जंजीरे डालीं। उन्होंने मनश्शे को बन्दी बनाया और उसे

बाबुल देश ले गए।

12 मनश्शे को कष्ट हुआ। उस समय उसने यहोवा अपने परमेश्वर
से याचना की। मनश्शे ने स्वयं को अपने पूर्वजों के परमेश्वर के
सामने विनम्र बनाया। 13 मनश्शे ने परमेश्वर से प्रार्थना की और
परमेश्वर से सहायता की याचना की। यहोवा ने मनश्शे की याचना
सुनी और उसे उस पर दया आई। यहोवा ने उसे यरूशलेम अपने
सिंहासन पर लौटने दिया। तब मनश्शे ने समझा कि यहोवा सच्चा
परमेश्वर है।

14 जब यह सब हुआ तो मनश्शे ने दाऊद नगर के लिये बाहरी
दीवार बनाई। बाहरी दीवार गिहोन सोते के पश्चिम की ओर घाटी
(किद्रोन) में मछली द्वार के साथ थी। मनश्शे ने इस दीवार को
ओपेल पहाड़ी के चारों ओर बना दिया। उसने दीवार को बहुत ऊँचा
बनाया। तब उसने अधिकारियों को यहूदा के सभी किलों में रखा।
15 मनश्शे ने विचित्र देवमूर्तियों को हटाया। उसने यहोवा के मन्दिर
से देवमूर्ति को बाहर किया। उसने उन सभी वेदियों को हटाया जिन्हें
उसने मन्दिर की पहाड़ी पर और यरूशलेम में बनाया था। मनश्शे
ने उन सभी वेदियों को यरूशलेम नगर से बाहर फेंका। 16 तब उसने
यहोवा की वेदी स्थापित की और मेलबलि तथा धन्यवाद भेंट इस
पर चढ़ाई। मनश्शे ने यहूदा के सभी लोगों को इस्राएल के यहोवा
परमेश्वर की सेवा करने का आदेश दिया। 17 लोगों ने उच्च स्थानों
पर बलि देना जारी रखा, किन्तु उनकी भेंटे केवल यहोवा उनके
परमेश्वर के लिये थीं।

18 मनश्शे ने जो कुछ अन्य किया और उसकी परमेश्वर से प्रार्थनाएं
और उन दृष्टाओं के कथन जिन्होंने इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के
नाम पर उससे बातें की थी, वे सभी इस्राएल के राजा नामक पुस्तक
में लिखी हैं। 19 मनश्शे ने कैसे प्रार्थना की और परमेश्वर ने वह कैसे
सुनी और उस पर दया की, यह दृष्टाओं की पुस्तक में लिखा है।
मनश्शे के सभी पाप और बुराईयाँ जो उसने स्वयं को विनम्र करने

से पूर्व कीं और वे स्थान जहाँ उसने उच्च स्थान बनाए और अशेरा—
स्तम्भ खड़े किये, दृष्टाओं की पुस्तक में लिखे हैं। 20 अन्त में मनश्शे
मरा और अपने पूर्वजों के साथ दफना दिया गया। लोगों ने मनश्शे
को उसके अपने राजभवन में दफनाया। मनश्शे के स्थान पर आमोन
नया राजा हुआ। आमोन मनश्शे का पुत्र था।

यहूदा का राजा आमोन

21 आमोन जब यहूदा का राजा हुआ, बाईस वर्ष का था। वह दो
वर्ष तक यरूशलेम का राजा रहा। 22 आमोन ने यहोवा के सामने बुरे
काम किये। यहोवा उससे जो कराना चाहता था उन्हें उसने ठीक
अपने पिता मनश्शे की तरह नहीं किया। आमोन ने सभी खुदी हुई
मूर्तियों तथा अपने पिता मनश्शे की बनाई मूर्तियों को बलि चढ़ाई।
आमोन ने उन मूर्तियों की पूजा की। 23 आमोन ने स्वयं को अपने
पिता मनश्शे की तरह यहोवा के सामने विनम्र नहीं बनाया। किन्तु
आमोन अधिक से अधिक पाप करता गया। 24 आमोन के सेवकों
ने उसके विरुद्ध योजना बनाई। उन्होंने आमोन को उसके घर में
मार डाला। 25 किन्तु यहूदा के लोगों ने उन सभी सेवकों को मार
डाला जिन्होंने राजा आमोन के विरुद्ध योजना बनाई थी। तब लोगों
ने योशिय्याह को नया राजा चुना। योशिय्याह आमोन का पुत्र था।

34

यहूदा का राजा योशिय्याह

1 योशिय्याह जब राजा बना, आठ वर्ष का था। वह यरूशलेम में
इकतिस वर्ष तक राजा रहा। 2 योशिय्याह ने वही किया जो उचित
था। उसने वही किया जो यहोवा उससे करवाना चाहता था। उसने
अपने पूर्वज दाऊद की तरह अच्छे काम किये। योशिय्याह उचित
काम करने से नहीं हटा। 3 जब योशिय्याह आठ वर्ष तक राजा रह
चुका तो वह अपने पूर्वज दाऊद के अनुसार परमेश्वर का अनुसरण
करने लगा। योशिय्याह बच्चा ही था जब उसने परमेश्वर की आज्ञा
माननी आरम्भ की। जब योशिय्याह राजा के रूप में बारह वर्ष का

हुआ, उसने उच्च स्थानों, अशेरा—स्तम्भों पर खुदी मूर्तियों और यहूदा
और यरूशलेम में ढली मूर्तियों को नष्ट करना आरम्भ कर दिया।
4 लोगों ने बाल देवताओं की वेदियाँ तोड़ दीं। उन्होंने यह योशिय्याह
के सामने किया। तब योशिय्याह ने सुगन्धि के लिये बनी उन वेदियों
को नष्ट कर डाला जो लोगों से भी बहुत ऊँची उठी थीं। उसने खुदी
मूर्तियों तथा ढली मूर्तियों को तोड़ डाला। उसने उन मूर्तियों को
पीटकर चूर्ण बना दिया। तब योशिय्याह ने उस चूर्ण को उन लोगों की
कब्रों पर डाला जो बाल देवताओं को बलि चढ़ाते थे। 5 योशिय्याह
ने उन याजकों की हड्डियों तक को जलाया जिन्होंने अपनी वेदियों पर
बाल—देवताओं की सेवा की थी। इस प्रकार योशिय्याह ने मूर्तियों
और मूर्ति पूजा को यहूदा और यरूशलेम से नष्ट किया। 6 योशिय्याह
ने यही काम मनश्शे, एप्रैम, शिमोन और नप्ताली तक के राज्यों के
नगरों में किया। उसने वही उन सब नगरों के पास के खंडहरों के
साथ किया। 7 योशिय्याह ने वेदियों और अशेरा—स्तम्भों को तोड़
दिया। उसने मूर्तियों को पीटकर चूर्ण बना दिया। उसने पूरे इस्राएल
देश में उन सुगन्धि—वेदियों को काट डाला जो बाल की पूजा में
काम आती थीं। तब योशिय्याह यरूशलेम लौट गया।

8 जब योशिय्याह यहूदा के राजा के रूप में अपने अट्ठारहवें वर्ष में
था, उसने शापान, मासेयाह और योआह को अपने यहोवा परमेश्वर
के मन्दिर की मरम्मत करने के लिये भेजा। शापान के पिता का नाम
असल्याह था। मासेयाह नगर प्रमुख था और योआह के पिता का
नाम योआहाज था। योआह वह व्यक्ति था जिसने जो कुछ हुआ
उसे लिखा। (वह लेखक था)।

योशिय्याह ने मन्दिर को स्थापित करने का आदेश दिया जिससे
वह यहूदा और मन्दिर दोनों को स्वच्छ रख सके। 9 वे लोग महा
याजक हिल्किय्याह के पास आए। उन्होंने वह धन उसे दिया जो
लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये दिया था। लेवीवंशी द्वारपालों ने
यह धन मनश्शे, एप्रैम और बचे सभी इस्राएलियों से इकट्ठा किया।
उन्होंने यह धन सारे यहूदा, बिन्यामीन और यरूशलेम में रहने वाले

सभी लोगों से भी इकट्ठा किया। 10 तब लेवीवंशियों ने उन व्यक्तियों
को यह धन दिया जो यहोवा के मन्दिर के काम की देख–रेख कर
रहे थे और निरीक्षकों ने उन मज़दूरों को यह धन दिया जो यहोवा
के मन्दिर को फिर बना कर स्थापित कर रहे थे। 11 उन्होंने बढ़ईयों
और राजगीरों को पहले से कटी बड़ी चट्टानों को खरीदने के लिये
और लकड़ी खरीदने के लिये धन दिया। लकड़ी का उपयोग भवनों
को फिर से बनाने और भवन के शहतीरों के लिये किया गया।
भूतकाल में यहूदा के राजा मन्दिरों की देखभाल नहीं करते थे। वे
भवन पुराने और खंडहर हो गए थे। 12-13 लोगों ने विश्वासपूर्वक
काम किया। उनके निरीक्षक यहत और ओबद्याह थे। यहत और ओबद्याह लेवीवंशी थे और वे मरारी के वंशज थे। अन्य निरीक्षक जकर्याह और मशुल्लाम थे। वे कहात के वंशज थे। जो लेवीवंशी संगीत–वाद्या बजाने में कुशल थे, वे भी चिज़ों को ढोने वाले तथा अन्य मज़दूरों का निरीक्षण करते थे। कुछ लेवीवंशी सचिव, अधिकारी और द्वारपाल का काम करते थे।

व्यवस्था की पुस्तक मिली

14 लेवीवंशियों ने उस धन को निकाला जो यहोवा के मन्दिर
में था। उस समय याजक हिल्किय्याह ने यहोवा के व्यवस्था की
वह पुस्तक प्राप्त की जो मूसा द्वारा दी गई थी। 15 हिल्किय्याह ने
सचिव शापान से कहा, “मैंने यहोवा के मन्दिर में व्यवस्था की
पुस्तक पाई है!” हिल्कय्याह ने शापान को पुस्तक दी। 16 शापान
उस पुस्तक को राजा योशिय्याह के पास लाया। शापान ने राजा
को सूचना दी, “तुम्हारे सेवक हर काम कर रहे हैं जो तुमने करने
को कहा है। 17 उन्होंने यहोवा के मन्दिर से धन को निकाला और
उसे निरीक्षकों एवं मज़दूरों को दे रहे हैं।” 18 तब शापान ने राजा
योशिय्याह से कहा, “याजक हिल्किय्याह ने मुझे एक पुस्तक दी
है।” तब शापान ने पुस्तक से पढ़ा। जब वह पढ़ रहा था, तब वह
राजा के सामने था। 19 जब राजा योशिय्याह ने नियमों को पढ़े जाते
हुए सुना, उसने अपने वस्त्र फाड़ लिये। 20 तब राजा ने हिल्किय्याह

शापान के पुत्र अहीकाम, मीका के पुत्र अब्दोन, सचिव शापान और
सेवक असायाह को आदेश दिया। 21 राजा ने कहा, "जाओ, मेरे लिये
तथा इस्राएल और यहूदा में जो लोग बचे हैं उनके लिये यहोवा से
याचना करो। जो पुस्तक मिली है उसके कथनों के बारे में पूछो।
यहोवा हम लोगों पर बहुत क्रोधित है क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यहोवा
के कथनों का पालन नहीं किया। उन्होंने वे सब काम नहीं किये जो
यह पुस्तक करने को कहती है!"

22 हिल्किय्याह और राजा के सेवक नबिया हुल्दा के पास गए,
हुल्दा शल्लूम की पत्नी थी। शल्लूम तोखत का पुत्र था। तोखत हस्रा
का पुत्र था। हस्रा राजा के वस्त्रों की देखरेख करता था। हुल्दा
यरूशलेम के नये भाग में रहती थी। हिल्किय्याह और राजा के
सेवकों ने हुल्दा को सब कुछ बताया जो हो चुका था। 23 हुल्दा
ने उनसे कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा जो कहता है वह यह
है: राजा योशिय्याह से कहो: 24 यहोवा जो कहता है वह यह है,
'मैं इस स्थान और यहाँ के निवासियों पर विपत्ति डालूँगा। मैं सभी
भंयकर विपत्तियों को जो यहूदा के राजा के सामने पढ़ी पुस्तक में
लिखी गई हैं, लाऊँगा। 25 मैं यह इसलिये करूँगा कि लोगों ने मुझे
छोड़ा और अन्य देवताओं के लिये सुगन्धि जलाई। उन लोगों ने
मुझे क्रोधित किया क्योंकि उन्होंने सभी बुरी बातें की हैं। इसलिये
मैं अपना क्रोध इस स्थान पर उतारूँगा। मेरा क्रोध तप्त अग्निज्वाला
की तरह बुझाया नहीं जा सकता!'

26 "किन्तु यहूदा के राजा योशिय्याह से कहो। उसने यहोवा
से पूछने के लिये तुम्हें भेजा। इस्राएल का यहोवा परमेश्वर, 'जिन
कथनों को तुमने कुछ समय पहले सुना है, उनके विषय में कहता
है: 27 योशिय्याह तुमने पश्चाताप किया और तुमने अपने को विनम्र
किया और अपने वस्त्रों को फाड़ा, तथा तुम मेरे सामने चिल्लाए।
अत: क्योंकि तुम्हारा हृदय कोमल है। 28 मैं तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों के
पास ले जाऊँगा। तुम अपनी कब्र में शान्तिपूर्वक जाओगे। तुम्हें उन

विपत्तियों में से कोई भी नहीं देखनी पड़ेंगी जिन्हें मैं इस स्थान और यहाँ रहने वाले लोगों पर लाऊँगा।' " हिल्किय्याह और राजा के सेवक योशिय्याह के पास यह सन्देश लेकर लौटे।

29 राजा योशिय्याह ने यहूदा और यरूशलेम के सभी अग्रजों को
अपने पास आने और मिलने के लिये बुलाया। 30 राजा, यहोवा
के मन्दिर में गया। यहूदा के सभी लोग, यरूशलेम में रहने वाले लोग, याजक, लेवीवंशी और सभी साधारण व असाधारण लोग योशिय्याह के साथ थे। योशिय्याह ने उन सबके सामने साक्षी की पुस्तक के कथन पढ़े। वह पुस्तक यहोवा के मन्दिर में मिली थी।
31 तब राजा अपने स्थान पर खड़ा हुआ। उसने यहोवा के साथ वाचा
की। उसने यहोवा का अनुसरण करने की और यहोवा के आदेशों, विधियों और नियमों का पालन करने की वाचा की। योशिय्याह पूरे हृदय और आत्मा से आज्ञा पालन करने को सहमत हुआ। वह पुस्तक में लिखे वाचा के कथनों का पालन करने को सहमत हुआ।
32 तब योशिय्याह ने यरूशलेम और बिन्यामीन के सभी लोगों से
वाचा को स्वीकार करने की प्रतिज्ञा कराई। यरूशलेम में लोगों ने परमेश्वर की वाचा का पालन किया, उस परमेश्वर की वाचा का
जिसकी आज्ञा का पालन उनके पूर्वजों ने किया था। 33 योशिय्याह
ने उन सभी स्थानों से मूर्तियों को फेंक दिया जो स्थान इस्राएल के लोगों के थे। यहोवा उन मूर्तियों से घृणा करता है। योशिय्याह ने इस्राएल के हर एक व्यक्ति को अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा में पहुँचाया। जब तक योशिय्याह जीवित रहा, लोगों ने पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना बन्द नहीं किया।

35

योशिय्याह फसह पर्व मनाता है

1 यरूशलेम में राजा योशिय्याह ने यहोवा के लिये फसह पर्व
मनाया। पहले महीने के चौदहवें दिन फसह पर्व का मेमना मारा
गया। 2 योशिय्याह ने अपना अपना कार्य पूरा करने के लिये याजकों

को चुना। उसने याजकों को उत्साहित किया, जब वे यहोवा के
मन्दिर में सेवा कर रहे थे। 3 योशिय्याह ने उन लेवीवंशियों से बातें
की जो इस्राएल के लोगों को उपदेश देते थे तथा जो यहोवा की
सेवा के लिये पवित्र बनाए गए थे। उसने उन लेवीवंशियों से कहा:
"पवित्र सन्दूक को उस मन्दिर में रखो जिसे सुलैमान ने बनाया।
सुलैमान दाऊद का पुत्र था। दाऊद इस्राएल का राजा था। पवित्र
सन्दूक को अपने कंधों पर फिर एक स्थान से दूसरे स्थान पर मत
ले जाओ। अब अपने यहोवा परमेश्वर की सेवा करो। परमेश्वर के
लोगों अर्थात् इस्राएल के लोगों की सेवा करो। 4 अपने को, अपने
परिवार समूहों के क्रम में, मन्दिर की सेवा के लिये तैयार करो। उन
कार्यों को करो जिन्हें राजा दाऊद और उसके पुत्र राजा सुलैमान
ने तुम्हें करने के लिये दिया था। 5 पवित्र स्थान में लेवीवंशियों के
समूह के साथ खड़े हो। लोगों के हर एक भिन्न परिवार समूह के
साथ ऐसा ही करो, इस प्रकार तुम उनकी सहायता कर सकते हो।
6 फसह पर्व के मेमनों को मारो और यहोवा के प्रति अपने को पवित्र
करो। मेमनों को अपने भाई इस्राएलियों के लिये तैयार करो। सब
कुछ वैसे ही करो जैसा करने का आदेश यहोवा ने दिया है। यहोवा
ने उन सभी आदेशों को हमें मूसा द्वारा दिया था।"

7 योशिय्याह ने इस्राएल के लोगों को तीस हज़ार भेड़—बकरियाँ
फसह पर्व की बलि के लिये दीं। उसने लोगों को तीन हजार पशु
भी दिये। ये सभी जानवर राजा योशिय्याह के अपने जानवरों में
से थे। 8 योशिय्याह के अधिकारियों ने भी, स्वेच्छा से लोगों को
याजकों और लेवीवंशियों को फसह पर्व में उपयोग करने के लिये
जानवर और चीज़ें दीं। प्रमुख याजक हिल्किय्याह, जकर्याह और
यहीएल मन्दिर के उत्तरदायी अधिकारी थे। उन्होंने यजाकों को दो
हजार छ: सौ मेमने और बकरे और तीन सौ बैल फसह पर्व बलि के
लिये दिये। 9 कोनन्याह ने भी शमायाह, नतनेल, तथा उसके भाईयों
के साथ और हसब्याह, यीएल तथा योजाबाद ने पाँच सौ भेड़ें—
बकरियाँ, पाँच सौ बैल फसह पर्व बलि के लिये लेवीवंशियों को

दिये। वे लोग लेवीवंशियों के प्रमुख थे।

10 जब हर एक चीज़ फसह पर्व की सेवा आरम्भ करने के लिये
तैयार हो गई, तो याजक और लेवीवंशी स्थानों पर गए। यह वही
हुआ जो राजा का आदेश था। 11 फसह पर्व के मेमने मारे गए।
तब लेवीवंशियों ने जानवरों के चमड़े उतारे और याजकों को खून
दिया। याजकों ने खून को वेदी पर छिड़का। 12 तब उन्होंने जानवरों
को विभिन्न परिवार समूहों की होमबलि में उपयोग के लिये दिया।
यह इसलिये किया गया कि होमबलि उस प्रकार दी जा सके जिस
प्रकार मूसा के नियमों ने सिखाया था। 13 लेवीवंशियों ने फसह पर्व
फसह पर्व की बलियों को आग पर इस प्रकार भूना जैसा उन्हें
आदेश दिया गया था और उन्होंने पवित्र भेंटों को हंडिया, देग और
कढ़ाहियों में पकाया। तब उन्होंने लोगों को शीघ्रता से माँस दिया।
14 जब यह पूरा हुआ तब लेवीवंशियों को अपने लिये और उन
याजकों के लिये माँस मिला जो हारून के वंशज थे। उन याजकों
को काम करते हुए अंधेरा होने तक काम में बहुत अधिक लगाए
रखा गया। उन्होंने होमबलि औक बलिदानों की चर्बी को जलाते
हुए कड़ा परिश्रम किया। 15 आसाप के परिवार के लेवीवंशी गायक
उन स्थानों पर पहुँचे जिन्हें राजा दाऊद ने उनके खड़े होने के लिये
चुना था। वे: आसाप, हेमान और राजा का नबी यदूतून थे। हर एक
द्वार पर द्वारपाल अपना स्थान नहीं छोड़ सकते थे क्योंकि उनके
लेवीवंशी भाईयों ने हर एक चीज़ उनके फसह पर्व के लिये तैयार
कर दी थी।

16 इस प्रकार उस दिन सब कुछ यहोवा की उपासना के लिये
वैसे ही किया गया था जैसा राजा योशिय्याह ने आदेश दिया। फसह
पर्व का त्यौहार मनाया गया और होमबलि यहोवा की वेदी पर
चढ़ाई गई। 17 इस्राएल के जो लोग वहाँ थे उन्होंने फसह पर्व मनाया
और अखमीरी रोटी का पर्व सात दिन तक मनाया। 18 शमूएल नबी
जब जीवित था तब से फसह पर्व इस प्रकार नहीं मनाया गया था।
इस्राएल के किसी राजा ने कभी इस प्रकार फसह पर्व नहीं मनाया

था। राजा योशिय्याह, याजक, लेवीवंशी और इस्राएल औऱ यहूदा
के लोगों ने, यरूशलेम में सभी लोगों के साथ, फसह पर्व को बहुत
ही विशेष रुप में मनाया। 19 यह फसह पर्व योशिय्याह के राज्यकाल
के अट्ठारहवें वर्ष मनाया गया।

योशिय्याह की मृत्यु

20 योशिय्याह जब मन्दिर के लिये उन अच्छे कामों को कर चुका,
उस समय राजा नको परात नदी पर स्थित कर्कमीश नगर के विरुद्ध
युद्ध करने के लिये सेना लेकर आया। नको मिस्र का राजा था। राजा
योशिय्याह नको के विरुद्ध लड़ने बाहर निकला। 21 किन्तु नको ने
योशिय्याह के पास दूत भेजे।

उन्होंने कहा, "राजा योशिय्याह, यह युद्ध तुम्हारे लिये समस्या नहीं है। मैं तुम्हारे विरुद्ध लड़ने नहीं आया हूँ। मैं अपने शत्रुओं से लड़ने आया हूँ। परमेश्वर ने मुझे शीघ्रता करने को कहा है। परमेश्वर मेरी ओर है अत: मुझे परेशान न करो। यदि तुम हमारे विरुद्ध लड़ोगे, परमेश्वर तुम्हें नष्ट कर देगा!"

22 किन्तु योशिय्याह हटा नहीं। उसने नको से युद्ध करने का
निश्चय किया, इसलिये उसने अपना वेश बदला औऱ युद्ध करने गया।
योशिय्याह ने उसे सुनने से इन्कार कर दिया जो नको ने परमेश्वर के
आदेश के बारे में कहा। योशिय्याह मगिद्दो के मैदान में युद्ध करने
गया। 23 जिस समय योशिय्याह युद्ध में था, वह बाणों से बेध दिया
गया। उसने अपने सेवकों से कहा, "मुझे निकाल ले चलो। मैं बुरी
तरह घायल हूँ!"

24 अत: सेवकों ने योशिय्याह को रथ से बाहर निकाला, औऱ
उसे दूसरे रथ में बैठाया जिसे वह अपने साथ युद्ध में लाया था। तब
वे योशिय्याह को यरूशलेम ले गए। राजा योशिय्याह यरूशलेम में
मरा। योशिय्याह को वहाँ दफनाया गया जहाँ उसके पूर्वज दफनाये

गए थे। यहूदा और यरूशलेम के सभी लोग योशिय्याह के मरने
पर बहुत दु:खी थे। 25 यिर्मयाह ने योशिय्याह के लिये कुछ बहुत
अधिक करुण गीत* लिखे। आज भी सभी स्त्री—पुरुष गायक उन
"करुण गीतों" को गाते हैं। यह ऐसा हुआ जिसे इस्राएल के लोग
सदा करते रहे अर्थात योशिय्याह के करुण गीत गाते रहे। वे गीत
करुण गीतों के संग्रह में लिखे हैं।
26-27 अन्य जो कुछ योशिय्याह ने अपने राज्यकाल में, शासन के
आरम्भ से अन्त तक किया, वह यहूदा और इस्राएल के राजाओं
के इतिहास नामक पुस्तक में लिखा गया है। वह पुस्तक यहोवा
के प्रति उसकी भक्ति और उसने यहोवा के नियमों का पालन कैसे
किया, बताती है।

36

यहूदा का राजा यहोआहाज

1 यहूदा के लोगों ने यरूशलेम में नया राजा होने के लिये
यहोआहाज को चुना। यहोआहाज योशिय्याह का पुत्र था।
2 यहोआहाज जब यहूदा का राजा हुआ, वह तेईस वर्ष का था।
वह यरूशलेम में तीन महीने राजा रहा। 3 तब मिस्र के राजा नको ने
यहोआहाज को बन्दी बना लिया। नको ने यहूदा के लोगों को पौने
चार टन चाँदी और पचहत्तर पौंड सोना दण्डराशि देने को विवश
किया। 4 नको ने यहोआहाज के भाई को यहूदा और यरूशलेम
का नया राजा होने के लिये चुना। यहोआहाज के भाई का नाम
एल्याकीम था। तब नको ने एल्याकीम को एक नया नाम दिया।
उसने उसका नाम यहोयाकीम रखा किन्तु नको यहोआहाज को
मिस्र ले गया।

यहूदा का राजा यहोयाकीम

---

* **35:25:** योशिय्याह … करूण गीत दूसरा शब्द यिर्मयाह के शोक–गीत है। देखें यिर्म. 22:10

5 यहोयाकीम उस समय पच्चीस वर्ष का था जब वह यहूदा का
नया राजा हुआ। वह ग्यारह वर्ष तक यरूशलेम में राजा रहा।
यहोयाकीम ने वह नहीं किया जिसे यहोवा चाहता था कि वह करे।
उसने अपने यहोवा परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया।
6 बाबेल से नबूकदनेस्सर ने यहूदा पर आक्रमण किया। उसने
यहोयाकीम को बन्दी बनाया और उसे काँसे की जंजीरों में
डाला। तब नबूकदनेस्सर राजा यहोयाकीम को बाबेल ले गया।
7 नबूकदनेस्सर यहोवा के मन्दिर से कुछ चीज़ें ले गया। वह उन
चीज़ों को बाबेल ले गया और अपने घर अर्थात राजमहल में रखा।
8 यहोयाकीम ने जो अन्य काम किये, जो भंयकर पाप उसने किये
तथा हर एक काम जिसे करने का वह अपराधी था, ये सब यहूदा
और इस्राएल के राजाओं का इतिहास नाम पुस्तक में लिखे हैं।
यहोयाकीन, यहोयाकीम के स्थान पर नया राजा हुआ। यहोयाकीन,
यहोयाकीम का पुत्र था।

यहूदा का राजा यहोयाकीन

9 यहोयाकीन जब यहूदा का राजा हुआ, अट्ठारह वर्ष का था।
वह यरूशलेम में तीन महीने दस दिन राजा रहा। उसने वे काम नहीं
किये जिसे यहोवा चाहता था कि वह करे। यहोयाकीन ने यहोवा के
विरुद्ध पाप किया। 10 बसन्त में राजा नबूकदनेस्सर ने कुछ सेवकों
को यहोयाकीन को पकड़ने को भेजा। वे यहोयाकीन और यहोवा
के मन्दिर से कुछ कीमती खजाने बाबेल ले गए। नबूकदनेस्सर ने
सिदकिय्याह को यहूदा और यरूशलेम का नया राजा होने के लिये
चुना। सिदकिय्याह यहोयाकीन का सम्बन्धी था।

यहूदा का राजा सिदकिय्याह

11 सिदकिय्याह जब यहूदा का राजा बना, इककीस वर्ष का था।
वह यरूशलेम में ग्यारह वर्ष तक राजा रहा। 12 सिदकिय्याह ने वह
नहीं किया जिसे उसका यहोवा परमेश्वर चाहता था कि वह करे।
सिदकिय्याह ने अपने यहोवा के विरुद्ध पाप किये। यिर्मयाह नबी ने

यहोवा की ओर से सन्देश दिये किन्तु उसने अपने को विनम्र नहीं बनाया और यिर्मयाह नबी ने जो कहा उसका पालन नहीं किया।

यरूशलेम ध्वस्त हुआ

13 सिदकिय्याह ने नबूकदनेस्सर के विरुद्ध विद्रोह किया। कुछ
समय पहले नबूकदनेस्सर ने सिदकिय्याह से प्रतिज्ञा कराई थी कि
वह नबूकदनेस्सर का विश्वासपात्र रहेगा। सिदकिय्याह ने परमेश्वर
का नाम लिया और नबूकदनेस्सर के प्रति विश्वासपात्र बने रहने
की प्रतिज्ञा की। किन्तु सिदकिय्याह बहुत अड़ियल था और उसने
अपना जीवन बदलने, इस्राएल के यहोवा परमेश्वर के पास लौटने
तथा उसकी आज्ञा मानने से इन्कार कर दिया। 14 याजकों के सभी
प्रमुखों और यहूदा के लोगों के प्रमुखों ने अधिक पाप किये और
यहोवा के बहुत अधिक अविश्वसनीय हो गए। उन्होंने अन्य राष्ट्रों
के बुरे उदाहरणों की नकल की। उन प्रमुखों ने यहोवा के मन्दिर
को ध्वस्त कर दिया। यहोवा ने मन्दिर को यरूशलेम में पवित्र
बनाया था। 15 उनके पूर्वजों के यहोवा परमेश्वर ने अपने लोगों को
चेतावनी देने के लिये बार बार सन्देशवाहक को भेजा। यहोवा ने
यह इसलिये किया कि उसे उन पर करुणा थी और मन्दिर के लिये
दुःख था। यहोवा उनको या अपने मन्दिर को नष्ट नहीं करना चाहता
था। 16 किन्तु परमेश्वर के लोगों ने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों)
का मजाक उड़ाया। उन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहकों (नबियों) की
अनसुनी कर दी। उन्होंने परमेश्वर के संदेश से घृणा की। अन्त में
परमेश्वर और अधिक अपना क्रोध न रोक सका। परमेश्वर अपने
लोगों पर क्रोधित हुआ और उसे रोकने के लिये कुछ भी नहीं था
जिसे किया जा सके। 17 इसलिये परमेश्वर बाबेल के राजा को यहूदा
के लोगों पर आक्रमण करने के लिये लाया। बाबेल के राजा ने
युवकों को मन्दिर में होने पर भी मार डाला। उसने यहूदा और
यरूशलेम के लोगों पर दया नहीं की। बाबेल के राजा ने युवा और
वृद्ध सभी लोगों को मारा। परमेश्वर ने नबूकदनेस्सर को यहूदा और

यरूशलेम के लोगों को दण्ड देने दिया। 18 नबूकदनेस्सर परमेश्वर
के मन्दिर की सभी चीज़ें बाबेल ले गया। उसने परमेश्वर के मन्दिर,
राजा तथा राजा के अधिकारियों की सभी कीमती चीज़ें ले लीं।
19 नबूकदनेस्सर और उसकी सेना ने मन्दिर को आग लगा दी।
उन्होंने यरूशलेम की चहारदीवारी गिरा दी और राजा तथा उसके
अधिकारियों के सभी घरों को जला दिया। उन्होंने यरूशलेम से हर
एक कीमती चीज़ ली या उसे नष्ट कर दिया। 20 नबूकदनेस्सर इसके
बाद भी जीवित बचे लोगों को, बाबुल ले गया और उन्हें दास होने
को विवश किया। वे लोग बाबेल में दास की तरह तब तक रहे जब
तक फारस के सम्राट ने बाबेल के राज्य को पराजित नहीं किया।
21 इस प्रकार यहोवा ने, इस्राएल के लोगों को जो कुछ यिर्मयाह
नबी से कहलवाया, वह सब ठीक घटित हुआ। यहोवा ने यिर्मयाह
द्वारा कहा था: "यह स्थान सत्तर वर्ष तक सूना उजाड़ देश रहेगा।*
यह सब्त विश्राम† की क्षतिपूर्ति के रूप में होगा जिसे लोग नहीं
करते।"

22 यह तब पहले वर्ष हुआ जब फारस का राजा कुस्रू शासन कर
रहा था। यहोवा ने यिर्मयाह नबी के माध्यम से जो वचन दिये वे
सत्य घटित हुए। यहोवा ने कूस्रू के हृदय को कोमल बनाया जिससे
उसने आदेश लिखा और अपने राज्य में हर एक स्थान पर भेजा:

23 फारस का राजा कूस्रू यही कहता है:

स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा ने मुझे पूरी पृथ्वी का राजा बनाया है। उसने मुझे एक मन्दिर यरूशलेम में अपने लिये बनाने का उत्तरदायित्व दिया है। अब तुम सभी, जो परमेश्वर के लोग हो, यरूशलेम जाने के लिये स्वतन्त्र हो। यहोवा परमेश्वर तुम्हारे साथ हो।

---

* **36:21:** यह स्थान … रहेगा देखें यिर्म. 25:11; 29:10 † **36:21:** सब्त विश्राम नियम कहता था कि हर सातवें वर्ष भूमि में खेती नहीं करनी चाहिए। देखें लैव्य. 25:1-7

पवित्र बाइबल

The Holy Bible, Easy Reading Version, in Hindi

copyright © 1992-2010 World Bible Translation Center

Language: हिंदी (Hindi)

Translation by: World Bible Translation Center

License Agreement for Bible Texts World Bible Translation Center Last Updated: September 21, 2006 Copyright © 2006 by World Bible Translation Center All rights reserved. These Scriptures: • Are copyrighted by World Bible Translation Center. • Are not public domain. • May not be altered or modified in any form. • May not be sold or offered for sale in any form. • May not be used for commercial purposes (including, but not limited to, use in advertising or Web banners used for the purpose of selling online add space). • May be distributed without modification in electronic form for non-commercial use. However, they may not be hosted on any kind of server (including a Web or ftp server) without written permission. A copy of this license (without modification) must also be included. • May be quoted for any purpose, up to 1,000 verses, without written permission. However, the extent of quotation must not comprise a complete book nor should it amount to more than 50% of the work in which it is quoted. A copyright notice must appear on the title or copyright page using this pattern: "Taken from the HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM © 2006 by World Bible Translation Center, Inc. and used by permission." If the text quoted is from one of WBTC's non-English versions, the printed title of the actual text quoted will be substituted for "HOLY BIBLE: EASY-TO-READ VERSIONTM." The copyright notice must appear in English or be translated into another language. When quotations from WBTC's text are used in non-saleable media, such as church bulletins, orders of service, posters, transparencies or similar media, a complete copyright notice is not required, but the initials of the version (such as "ERV" for the Easy-to-Read VersionTM in English) must appear at the end of each quotation. Any use of these Scriptures other than those listed above is prohibited. For additional rights and permission for usage, such as the use of WBTC's text on a Web site, or for clarification of any of the above, please contact World Bible Translation Center in writing or by email at distribution@wbtc.com. World Bible Translation Center P.O. Box 820648 Fort Worth, Texas 76182, USA Telephone: 1-817-595-1664 Toll-Free in US: 1-888-54-BIBLE E-mail: info@wbtc.com WBTC's web site – World Bible Translation Center's web site: http://www.wbtc.org

2019-11-15

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 8 Sep 2021 from source files dated 18 Aug 2021

7f0fcd5b-bc85-55f6-933a-0de82e7ef275